E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 111 | प्रयागराज, सोमवार, 10 अगस्त, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

एच-1बी वीजा वालों की नौकरी गई तो अमेरिका छोड़ना पड़ेगा,नई नौकरी तलाशने की 60 दिन की मोहलत खत्म करने की तैयारी

वॉशिंगटन। अमेरिका में एच-1बी वीजा पर काम कर रहे विदेशी कर्मचारियों की मुश्किल बढ़ सकती है। अमेरिकी सरकार नौकरी जाने के बाद नई नौकरी तलाशने के लिए मिलने वाली 60 दिन की मोहलत खत्म करने पर विचार कर रही है। अगर यह बदलाव लागू होता है तो नौकरी जाने के बाद अमेरिका में रुकना मुश्किल हो सकता है। यह प्रस्ताव फिलहाल व्हाइट हाउस के ऑफिस ऑफ मैनेजमेंट एंड बजट (ओएमबी) को भेजा गया है। अभी यह नियम नहीं बना है। दिए गए आंकड़ों के मुताबिक, अमेरिका में एच-1बी वीजा पर काम कर रहे करीब 5 लाख भारतीयों पर इसका असर पड़ सकता है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इसी साल मई में यह मामला अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो के सामने उठाया था। रूबियो ने माना था कि नए इमिग्रेशन सिस्टम में बदलाव के दौरान कुछ दिक्कतें और तनाव हो सकते हैं। हालांकि, रूबियो ने कहा था कि अमेरिका इमिग्रेशन सिस्टम को ज्यादा प्रभावी बनाने की कोशिश कर रहा है और लंबे समय में इसका

फायदा सभी पक्षों को मिलेगा। रूबियो ने यह भी कहा था कि यह कदम खासतौर पर भारत को निशाना बनाकर नहीं उठाया गया।उनके मुताबिक अमेरिका पिछले कुछ सालों में बड़े पैमाने पर अवैध प्रवासियों की समस्या से जूझ रहा है। 2 करोड़ से ज्यादा लोग गैरकानूनी तरीके से अमेरिका में दाखिल हुए और उसी चुनौती से निपटने के लिए यह बदलाव किए जा रहे हैं। अमेरिका में 7 साल रहने वाले प्रवासियों को ग्रीन कार्ड मिलेगा- अमेरिका में रह रहे भारतीय एच-1बी वीजा धारकों समेत लाखों लोगों के लिए ग्रीन कार्ड पाने का नया मौका मिल सकता है। अमेरिकी सीनेट में एक ऐसा विधेयक पेश किया गया है, जिसमें पिछले 7 साल से लगातार अमेरिका में रह रहे लोगों को ग्रीन कार्ड के लिए आवेदन करने की अनुमति देने का प्रस्ताव है।ग्रीन कार्ड अमेरिका में स्थायी रूप से रहने और काम करने की अनुमति देने वाला आधिकारिक दस्तावेज है। इसे आधिकारिक तौर पर परमानेंट रेजिडेंट कार्ड कहा जाता है। अभी 60 दिन की एच-1बी ग्रेस पीरियड कैसे काम करती है? नौकरी गई तो तुरंत अमेरिका नहीं छोड़ना पड़ता-अगर किसी एच-1बी कर्मचारी की नौकरी चली जाती है, तो उसे उसी समय अमेरिका छोड़ने की जरूरत नहीं होती। मौजूदा नियमों के मुताबिक, उसे अधिकतम 60 दिन का समय मिल सकता है। इस दौरान वह नई नौकरी खोज सकता है या अमेरिका में अपना स्टेटस बनाए रखने के लिए जरूरी कदम उठा सकता है। 60 दिन में नई नौकरी मिल गई तो? इस दौरान कर्मचारी दूसरी कंपनी में नौकरी खोज सकता है। नई कंपनी उसके लिए एच-1बी की अर्जी लगा सकती है। नियमों के तहत, कुछ मामलों में कर्मचारी अर्जी मंजूर होने का इंतजार किए बिना नई कंपनी में काम शुरू कर सकता है। नई नौकरी नहीं मिली तो? नई नौकरी ढूंढना ही अकेला रास्ता नहीं है। कुछ मामलों में कर्मचारी दूसरे वीजा या स्टेटस के लिए भी अर्जी दे सकता है। जैसे, कुछ शर्तों के तहत वह डिपेंडेंट या विजिटर स्टेटस के लिए आवेदन कर सकता है।

पीएम मोदी ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति से फोन पर बात की:भारत-अमेरिका साझेदारी मजबूत करने पर चर्चा; वेंस को बेटे के जन्म पर बधाई दी

नयी दिल्ली/वॉशिंगटन। पीएम मोदी ने शनिवार रात अमेरिकी

उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से फोन पर बातचीत की। मोदी ने सोशल मीडिया पोस्ट कर इसकी जानकारी दी। मोदी ने लिखा, 'अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस का फोन आया। हमने प्रमुख क्षेत्रों में भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने के तरीकों पर चर्चा की।' उन्होंने वेंस को बेटे के जन्म पर बधाई और शुभकामनाएं दीं। दरअसल, 19 जुलाई को जेडी वेंस चौथी बार पिता बने थे। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस 3 से 7 मार्च 2025 तक भारत में थे। उनके साथ-साथ उनकी पत्नी उषा और तीनों बच्चे- इवान, विवेक और मिराबेल भी भारत आए थे। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने उन्हें दिल्ली में रिसीव किया था। एयरपोर्ट पर ही उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया था। उन्होंने पीएम मोदी से भी मुलाकात की थी। उपराष्ट्रपति बनने के बाद यह जेडी वेंस की पहली आधिकारिक भारत यात्रा थी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प साल 2027 की शुरुआत में भारत आ सकते हैं। 27 जून को व्हाइट हाउस में मीडिया से बातचीत के दौरान विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने ये बयान दिया। ये ट्रम्प की राष्ट्रपति रहते हुए दूसरी भारत यात्रा हो सकती है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

आम ग्राहकों के लिए यूपीआई मुफ्त ही रहेगा, विवाद पर वित्त मंत्री की सफाई, रु2,000 से ज्यादा के ट्रांजेक्शन पर मर्चेंट चार्ज संभव

नयी दिल्ली। भारत में रोजाना फल-सब्जी खरीदने से लेकर कैब के किराए तक के लिए करोड़ों लोग यूपीआई का इस्तेमाल

करते हैं। हाल ही में संसद में पेश हुए नए बिल के बाद एक बहस शुरू हो गई है कि क्या भविष्य में यूपीआई पेमेंट करने पर ग्राहकों को शुल्क देना होगा। इस पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने स्थिति साफ की है। वित्त मंत्री ने कहा है कि आम ग्राहकों को डरने की कोई जरूरत नहीं है, यूपीआई उनके लिए फ्री ही रहेगा। एमडीआर का नियम और आम यूजर्स पर इसका क्या असर होगा- सवालः क्या आम ग्राहकों को अब यूपीआई से पेमेंट करने पर कोई चार्ज देना होगा? जवाबः नहीं, बिल्कुल नहीं। सरकार और आरबीआई दोनों ने साफ किया है कि आम ग्राहकों से यूपीआई पेमेंट पर कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। आप पहले की तरह ही किसी भी क्यूआर कोड को स्कैन करके फ्री में पैसों का ट्रांसफर और खरीदारी कर सकेंगे। सवालः फिर यूपीआई पर चार्ज लगने की चर्चा क्यों शुरू हुई? जवाबः सरकार ने संसद में टैक्सेशन एंड अदर लॉज (अमेंडमेंट) बिल-2026 पेश किया है। इसमें पेमेंट एंड सेटलमेंट सिस्टम्स एक्ट-2007 की धारा 10ए में संशोधन का प्रस्ताव है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

पाकिस्तान पर हमला हुआ तो लड़ने आएंगे सऊदी/तुर्किये, आखिर क्या है मक्का एग्रीमेंट; भारत कैसे काउंटर करेगा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान पर हमला हुआ, तो सऊदी और ज्यादा असर इजराइल और भारत जैसे देशों पर पड़ेगा।

तुर्किये भी साथ लड़ने आएंगे। 7 अगस्त 2026 को मक्का में तीनों देशों में बीच एक खास रक्षा समझौता हुआ है। अब किसी एक पर हमला, तीनों देशों पर हमला माना जाएगा। इसे 'इस्लामिक नाटो' की शुरुआत माना जा रहा, जिसका सबसे सऊदी-पाकिस्तान-तुर्किए के बीच क्या डील हुई है? करीब 11 महीने पहले सितंबर 2025 में पाकिस्तान और सऊदी अरब में ये डिफेंस समझौता हुआ था। फिर जनवरी 2026 में चर्चा हुई कि इसमें तुर्किये भी शामिल हो सकता है। पाकिस्तान, तुर्किये और सऊदी तीनों सुन्नी बहुल देश हैं। तुर्किये और सऊदी में बाकी सुन्नी इस्लामिक देशों की लीडरशिप को लेकर तनाव भी रहा है। हालांकि पिछले कुछ सालों से व्यापारिक साझेदारी के जरिए दोनों अपने रिश्ते सुधार रहे हैं। 8 जनवरी को दोनों ने पहली बार नेवी पार्टनरशिप के लिए बैठक की थी। अब तुर्किये, सऊदी और पाकिस्तान में हुए इस समझौते को 'मक्का एग्रीमेंट' कहा जा रहा है। सिक्योरिटी एनालिस्ट डॉ. निहत अली ओजकान बताते हैं-सऊदी अरब, कच्चे तेल का सबसे बड़ा एक्सपोर्टर देश है और दुनिया की टॉप-20 अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। इस साझेदारी में आर्थिक मदद देगा। पाकिस्तान परमाणु हथियार रखने वाला इकलौता इस्लामिक देश है।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

सरकार ने अरुणाचल की 27 जगह मैप में शामिल करि,चीन की वजह से ऐसा किया, इसने कई बार भारतीय इलाकों के नाम बदले

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार ने शुक्रवार को अरुणाचल प्रदेश की 27 जगहों और उनकी भौगोलिक विशेषताओं को आधिकारिक नक्शे

पर दर्ज किया। यह कदम चीन की ओर से राज्य की जगहों के नाम बदलने की कोशिशों के बीच उठाया गया है। गृह मंत्रालय के मुताबिक, यह काम अरुणाचल प्रदेश सरकार से सलाह लेकर किया गया है। इसका मकसद इन जगहों की सही पहचान बताना और आम लोगों में जागरूकता बढ़ाना है। इन नामों को आधिकारिक मानचित्रों में शामिल करने का मकसद प्रशासन को बेहतर बनाना है। इससे सरकारी रिकॉर्ड में एकरूपता आएगी, अलग-अलग विभागों के बीच बेहतर तालमेल होगा और आपदा के समय मदद पहुंचाने में आसानी होगी। हालांकि, अभी यह साफ नहीं है कि इन नामों के आधार पर लोगों के पासपोर्ट या दूसरे निजी दस्तावेजों में कोई बदलाव किया जाएगा। सरकार का मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों की आधिकारिक पहचान तय करना और भारत के प्रशासनिक रिकॉर्ड में उन्हें शामिल करना है।चीन अरुणाचल की जगहों के नाम जारी करता रहा है-चीन ने कई बार अरुणाचल प्रदेश की जगहों के चीनी नामों की सूची जारी करता रहा है। वह अरुणाचल प्रदेश को जांगनान कहता है।

भारत ने चीन की इन कोशिशों को लगातार खारिज किया है। भारत का कहना है कि इनका भारत की राज्य पर संप्रभुता पर कोई असर नहीं पड़ता।

ईरानी सुप्रीम लीडर मुजतबा जंग के बाद पहली बार आए सामने,लोगों से बात करते नजर आए, जल्द मौत होने का दावा किया जा रहा था

तेहरान। ईरान के नए सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई का जंग

के बाद पहला वीडियो सामने आया है। इसे ईरान की न्यूज एजेंसी मेहर ने जारी किया है। इसमें मुजतबा जमीन पर बैठे लोगों के बीच नजर आ रहे हैं और उनसे बातचीत करते दिख रहे हैं। सुप्रीम लीडर बनने के बाद यह उनका पहला वीडियो है। हालांकि, वीडियो कब रिकॉर्ड किया गया था, इसकी जानकारी नहीं दी गई है। पिछले कुछ दिनों से उनकी सेहत को लेकर तरह-तरह के दावे किए जा रहे थे। इजराइली चैनल 14 ने सूत्रों के हवाले से कहा था कि उनकी हालत गंभीर है और वे अस्पताल में भर्ती हैं। यहां तक कि जल्दी ही उनकी मौत होने तक की आशंका जताई गई थी। ऐसे में अब यह वीडियो सामने आने के बाद इन दावों पर सवाल खड़े हो गए हैं, लेकिन उनकी मौजूदा हालत को लेकर तस्वीर अब भी पूरी तरह साफ नहीं है। सऊदी मीडिया ने कहा था- मुजतबा ईरान में नहीं हैं- सऊदी मीडिया अल-हदथ ने एक इजराइली सुरक्षा सूत्र के हवाले से कहा था कि मुजतबा उस वक्त ईरान में नहीं थे। सूत्र के मुताबिक, मुजतबा के नाम से जो सरकारी संदेश जारी हो रहे थे, उन्हें आईआरजीसी के नए प्रमुख अहमद वाहिदी और दूसरे बड़े अधिकारी तैयार कर रहे थे। मुजतबा के सुप्रीम लीडर बनने के बाद से वह सार्वजनिक तौर पर कहीं नजर नहीं आए थे। उन्होंने कोई भाषण भी नहीं दिया था। सरकारी न्यूज एजेंसियों ने उनके नाम से सिर्फ कुछ लिखित संदेश जारी किए थे। ईरानी मीडिया के मुताबिक, पिता और पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद भी मुजतबा ने किसी मंत्री से मुलाकात नहीं की थी। वे अपने पिता के अंतिम संस्कार में भी नजर नहीं आए थे। राष्ट्रपति मसूद पजशकियान भी कह चुके हैं कि मुजतबा से सीधे संपर्क करना मुश्किल है। 25 मईः सुरक्षा कारणों से अज्ञात/गुप्त लोकेशन पर होने के दावे। 4 जूनः लंबे समय तक सार्वजनिक रूप से न दिखने से हेल्थ को लेकर संदेह गहराया। पूरा जूनः लोकेशन स्पष्ट नहीं, रहस्य बना रहा। 4-5 अगस्तः हमले के बाद छिपे होने और 'अंधेरे में मुलाकात' जैसे दावे सामने आए। 7 अगस्तः हमले से बुरी तरह घायल होने के बाद मौत का दावा। 8 अगस्तः पहला वीडियो सामने आया, इसमें लोगों से बात करते दिखे।

रूसी तेल खरीदने वाले 5 देशों समेत भारत पर 100फीसदी टैरिफ वाला बिल अमेरिकी सीनेट में पास

86 सांसदों ने पक्ष में वोट किया, 11 विरोध में

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी सीनेट ने 86-11 के बहुमत से भारत समेत 5 देशों पर 100फीसदी तक का टैरिफ लगाने वाला बिल पास कर दिया है। बिल के मुताबिक भारत, चीन, स्लोवाकिया, हंगरी और अजरबैजान पर 100फीसदी टैरिफ लगाया जा सकता है। यह बिल रिपब्लिकन और डेमोक्रेट दोनों पार्टियों के समर्थन से लाया गया। इसका मकसद रूस की तेल से होने वाली कमाई को कम करना है, ताकि उसकी युद्ध लड़ने की क्षमता कमजोर हो सके। 23 जुलाई को रूस से तेल और गैस खरीदने वाले देशों पर 100फीसदी तक टैरिफ लगाने का प्रस्ताव रखा गया था। बिल के शुरुआती मसौदे में 500फीसदी टैरिफ लगाने का प्रस्ताव था, लेकिन बाद में इसे घटाकर 100फीसदी कर दिया गया। हालांकि, अभी ये कानून नहीं बना है। अभी इसे अमेरिकी संसद के निचले सदन यानी हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में भेजा जाएगा। अगर वहां भी बिल पास

हो जाता है, तो इसे राष्ट्रपति ट्रम्प के पास मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। उनकी मंजूरी मिलने के बाद ही यह कानून बनेगा। ईरान के साथ ट्रेड करने वाली कंपनियों पर प्रतिबंध बढ़ेगा-अगर यह कानून बन जाता है तो 1996 का 'ईरान प्रतिबंध कानून' 2031 तक बढ़ जाएगा। यह कानून उन गैर-अमेरिकी कंपनियों पर पाबंदी लगाता है जो ईरान के साथ व्यापार करती हैं। यह कानून इसी साल खत्म होने वाला था। इस बिल से अमेरिकी राष्ट्रपति को यह अधिकार भी मिल जाएगा कि वे अमेरिका में आने वाले रूसी सामान पर 500फीसदी तक टैरिफ लगा सकें। राष्ट्रपति का यह अधिकार 5 साल तक लागू रहेगा। व्हाइट हाउस ने पहले भी रूस पर पाबंदियां लगाने की कोशिश की थी। लेकिन ईरान युद्ध के दौरान जब होर्मुज बंद हुआ, तो तेल का संकट आ गया। इस वजह से अमेरिकी प्रशासन को तेल की बिक्री पर कुछ समय के लिए छूट देनी पड़ी थी। भारत ने जून 2026 में रूस से रिकॉर्ड 26.1 लाख बैरल प्रतिदिन कच्चा तेल खरीदा, जो देश के कुल तेल आयात का 52.4फीसदी था। यानी पिछले महीने भारत में आयात होने वाले हर दो बैरल तेल में एक से ज्यादा बैरल रूस से आया। रूस लगातार भारत का सबसे बड़ा तेल सप्लायर बना हुआ है। मई के मुकाबले जून में रूस से तेल आयात में करीब 39फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

नेतन्याहू बोले- जब तक पीएम हूं फिलिस्तीन देश नहीं बनेगा,ट्रम्प का गाजा प्लान खारिज किया, इजराइली सेना का गाजा से सेना हटाने से इनकार

तेल अवीव। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने रविवार को कहा कि जब तक मैं प्रधानमंत्री हूं, कोई फिलिस्तीन देश

नहीं बनेगा। नेतन्याहू ने साप्ताहिक कैबिनेट बैठक की शुरुआत में उन दावों को खारिज किया, जिनमें कहा गया था कि इजराइल ने ट्रम्प का गाजा प्लान मान लिया है। उन्होंने गाजा से इजराइली सेना को हटाने से इनकार किया। उन्होंने कहा कि इजराइल हमास को दिखावटी तौर पर नहीं, बल्कि वास्तव में खत्म करना चाहता है। बेंजामिन नेतन्याहू प्रधानमंत्री, इजराइल-इजराइल ट्रम्प के बोर्ड ऑफ पीस के 15 पॉइंट प्लान को खारिज करता है। सेना तब तक कोई वापसी नहीं करेगी, जब तक हमास को वास्तव में निहत्था नहीं कर दिया जाता।ट्रम्प ने दावा किया था-इजराइल समझौते से खुश-अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दावा किया था कि गाजा में हमास और इजराइल के बीच एक बड़ा समझौता हुआ है। इसके तहत जैसे-जैसे हमास अपने हथियार छोड़ेगा, वैसे-वैसे इजराइली सेना गाजा से हटेगी। ट्रम्प ने नेतन्याहू से वॉशिंगटन में मुलाकात के बाद कहा था कि इजराइल इस समझौते से बहुत खुश है। हालांकि, ट्रम्प ने यह भी माना था कि योजना को लागू करना मुश्किल हो सकता है। घरेलू विरोध के चलते नेतन्याहू ने प्रस्ताव ठुकराया-इजराइली सरकार के कई मंत्री गाजा में भी वेस्ट बैंक की तरह यहूदी बस्तियां बसाने की वकालत कर चुके हैं। नेतन्याहू के कट्टर दक्षिणपंथी नेताओं ने ट्रम्प के प्रस्ताव पर विरोध जताया है। वे गाजा से सेना हटाने के सख्त खिलाफ हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री बेन ग्विर ने ट्रम्प के प्लान को बुरा बताते हुए कहा था कि अगर हमास के लड़ाकों को निशाना बनाना बंद कर दिया गया, तो उन्हें अगला हमला करने का मौका मिल जाएगा। दूसरी ओर, इजराइल में बड़ी संख्या में लोग अब भी गाजा के खिलाफ सख्त सैन्य कार्रवाई के पक्ष में हैं। मई में हुए एक सर्वे में 82फीसदी यहूदी इजराइलियों ने गाजा के फिलिस्तीनियों को उनके घरों से हटाने का समर्थन किया। 56फीसदी लोगों ने इजराइल के भीतर रहने वाले फिलिस्तीनी नागरिकों को भी हटाने की बात कही।

धर्मेंद्र प्रधान बोले- जेन-जी को बरगलाने की कोशिश हुई,मेरे लिए पद जरूरी नहीं था, पीएम मोदी से चर्चा के बाद दिया इस्तीफा

नयी दिल्ली। देश के पूर्व शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने पहली बार

अपने इस्तीफे पर बयान दिया। उन्होंने कहा, 'जेन-जी हमारे ही बच्चे हैं। कुछ लोगों ने उन्हें भटकाने की कोशिश की। मैंने पीएम मोदी से बातचीत करने के बाद ही पद छोड़ा।' उन्होंने कहा, 'जेन-जी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। देश के युवाओं के संकल्प और आकांक्षाओं के सामने शिक्षा मंत्री की जिम्मेदारियां बहुत छोटी हैं। इसलिए मेरे लिए पद जरूरी नहीं था।' प्रधान ने ये बात शनिवार को भुवनेश्वर की जीएम यूनिवर्सिटी में कही। यहां उन्होंने छात्रों और शिक्षकों को संबोधित किया। इस कार्यक्रम के दौरान बीजू जनता दल के कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी की। नीट पेपर लीक पर जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के 35 दिन बाद प्रधान ने 25 जुलाई को शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफा दिया था। धर्मेंद्र प्रधान-पूर्व शिक्षा मंत्रीः-हाल में हुई घटनाओं से पता चलता है कि कुछ लोगों ने जेन जी को गुमराह करने की कोशिश की। जेन जी कौन हैं। मेरा मानना है कि वे हमारे अपने हैं। यह कभी मेरे लिए व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का सवाल नहीं था। स्पीच की 4 बातेंः- प्रधान ने नारेबाजी पर कहा- मैं किसान का बेटा हूं, प्रधान ने ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री और बीजेडी अध्यक्ष नवीन पटनायक पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, ' मैं बीजेडी कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन और उनकी नारेबाजी से परेशान नहीं हूं। मैं किसान का बेटा हूं। आप मुझे वापस जाने के लिए कहेंगे, तब भी मैं वापस आऊंगा।' 'मैंने ओडिशा के 4.5 करोड़ लोगों का सिर कभी शर्म से नहीं झुकने दिया। जब तक मैं जिंदा हूं, तब तक मुझ पर जताए गए भरोसे को नहीं तोड़ूंगा और ऐसा कोई काम नहीं करूंगा, जिससे ओडिशा के गौरव और स्वाभिमान को ठेस पहुंचे।' 'जेन जी की जिद के कारण मुझे परेशानी नहीं हुई। नई पीढी का विरोध करने के बजाय उसे समझना जरूरी है।' 'भारत में हर साल कम से कम दो करोड़ बच्चे जन्म लेते हैं। पिछले 10 सालों में 20 करोड़ बच्चे पैदा हुए हैं। उनके सपने हैं। वे भारत को विश्व गुरु बनाएंगे। मेरे लिए पद जरूरी नहीं था।' 'इतिहास में युवाओं ने ही बदलाव का नेतृत्व किया और बलिदान दिया है।

नेपाल पीएम बालेन आज पहले भारतीय राजदूत से मिलेंगे,बाद में चीन के दूत से बात होगी, अगले दिन अमेरिकी अधिकारी से वन-टू-वन बैठक

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन शाह सोमवार को सबसे पहले भारत के राजदूत नवीन श्रीवास्तव से मुलाकात करेंगे। इसके बाद वे चीन के राजदूत झांग माओमिंग से बातचीत करेंगे। मंगलवार को शाह अमेरिकी दूतावास के प्रभारी अधिकारी स्कॉट अर्बोम से वन-टू-वन बैठक करेंगे। काठमांडू पोस्ट के मुताबिक, प्रधानमंत्री बनने के बाद यह पहली बार होगा, जब शाह किसी विदेशी राजदूत से अकेले में मिलेंगे। इससे पहले वे विदेशी राजदूतों के साथ सामूहिक बैठकों को प्राथमिकता देते रहे थे। इन बैठकों में नेपाल के भारत, चीन और अमेरिका के साथ रिश्तों और मौजूदा मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना है। दो हफ्ते पहले होनी थी मुलाकात, हिंसा के बाद टली-शाह की इन राजनयिकों से मुलाकात करीब दो हफ्ते पहले तय थी, लेकिन सुनसरी और दूसरे जिलों में हुई सांप्रदायिक हिंसा के बाद इसे टाल दिया गया था। अब सरकार ने दोबारा बैठकें तय की हैं। प्रधानमंत्री के एक सलाहकार के मुताबिक, संबंधित दूतावासों को मुलाकात का समय बता दिया गया है। पहले विदेशी अधिकारियों से अकेले नहीं मिलते थे शाह-प्रधानमंत्री बनने के शुरुआती दौर में शाह ने विदेश मंत्री के स्तर से नीचे के विदेशी अधिकारियों से वन-टू-वन मुलाकात नहीं करने की नीति अपनाई थी। इसी वजह से भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री की 11-12 मई की नेपाल यात्रा भी विवादों के बीच टल गई थी। नेपाली अधिकारियों के मुताबिक, शाह का मिस्री से अकेले में मिलने से इनकार भी इसकी वजहों में शामिल था। शाह ने अमेरिकी अधिकारियों समीर पॉल कपूर और सर्जियो गोर से मुलाकात के अनुरोध भी स्वीकार नहीं किए थे। अमेरिकी विदेश विभाग की अंडर सेक्रेटरी सारा बी. रोजर्स भी नेपाल दौरे पर आई थीं, लेकिन उनकी शाह से मुलाकात नहीं हो सकी थी।

आयकर अपीलीय अधिकरण बार संघ की कार्यकारिणी की बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। आयकर अपीलीय अधिकरण बार संघ

की कार्यकारिणी की बैठक सीए डॉ नवीन चंद्र अग्रवाल की अध्यक्षता में आज संपन्न हुई। सचिव अधिवक्ता आशीष बंसल ने वाराणसी में आयकर अपीलीय अधिकरण, विधि एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार के अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति सी वी भड़ंग को संघ के प्रतिनिधि मंडल के द्वारा दिए गए ज्ञापन पर प्रकाश डाला। मंडल का नेतृत्व सीए नवीन चंद्र अग्रवाल ने किया। ज्ञापन के माध्यम से बताया कि आयकर अधिनियम 1922 के अंतर्गत 1941 में अधिकरण की स्थापना के साथ ही देश में पांच पीठ स्थापित की गई जिसमें से एक पीठ इलाहाबाद में थी। इसका विशेष महत्व इलाहाबाद उच्च न्यायालय के होने के कारण रहा। आयकर भवन में आर ब्लॉक के नाम से सभी संसाधन दो पीठ के लिए वर्ष 1986 से उपलब्ध है । इसी के क्षेत्र के विभाजन से आगरा लखनऊ एवं वाराणसी सर्किट पीठ बनाई गई है। उच्च न्यायालय के होने के फलस्वरूप जीएसटी अधिकरण, राष्ट्रीय कंपनी अधिनियम अधिकरण, कंपनी अधिनियम अपीलीय अधिकरण, ऋण वसूली अधिकरण आदि की न्याय पीठ भी इलाहाबाद में है। अतः आग्रह किया गया कि इसकी गरिमा को बनाए रखने के लिए इलाहाबाद पीठ में सदस्यों की नियुक्ति की जानी चाहिए। साथ ही इनके क्षेत्र का आकलन करके पुनर्गठित किये जाने की आवश्यकता है।

यह भी बताया कि प्रतिनिधिमंडल की चर्चा के समय लखनऊ क्षेत्र के उपाध्यक्ष माननीय श्री कुल भारत भी उपस्थित रहे। प्रतिनिधि मंडल में सीए शिव कुमार एवं प्रवीण गोडबोले आदि सदस्य शामिल थे। सभी को धन्यवाद के साथ बैठक समाप्त हुई।

आधुनिक समाचार की स्टेट हेड एवं ब्यूरो इंचार्ज, सोनभद्र-आदरणीय चिंता पाण्डेय जी को जन्मदिन की ढेरों शुभकामनाएँ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। आपका समर्पण,

कर्मठता, सहज व्यवहार और पत्रकारिता के प्रति निष्ठा हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। आपके व्यक्तित्व की सादगी और कार्य के प्रति ईमानदारी ने आधुनिक समाचार नेटवर्क में एक अलग पहचान बनाई है। ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि आपके जीवन में सदैव खुशियों की रोशनी, सफलता की ऊँचाइयाँ, उत्तम स्वास्थ्य और अपनों का स्नेह बना रहे।

आपका हर नया वर्ष नई उपलब्धियों और अनगिनत खुशियों से भरा हो। आप यूँ ही मुस्कुराती रहें, आगे बढ़ती रहें और अपनी लेखनी से समाज को नई दिशा देती रहें। जन्मदिन की अनंत शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ।

एडिटर्स क्लब ऑफ इंडिया की एक महत्वपूर्ण बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ अग्निहोत्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई

प्रयागराज/नयी दिल्ली। एडिटर्स क्लब ऑफ इंडिया की

एक महत्वपूर्ण बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ अग्निहोत्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में क्लब के प्रथम स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले भव्य राष्ट्रीय कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर गरिमामय, प्रभावशाली एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए विभिन्न समितियों के गठन, अतिथि आमंत्रण, आयोजन प्रबंधन, मीडिया समन्वय तथा कार्यक्रम की विषय-वस्तु सहित अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सुनील कौशिक, कोषाध्यक्ष सतेंद्र भाटी, उपाध्यक्ष अरविन्द सिंह, सचिव आशिफ एकवाल तथा एडवाइजरी विंग के चेयरमैन अनुराग वर्मा उपस्थित रहे। सभी पदाधिकारियों ने अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत करते हुए स्थापना दिवस समारोह को पत्रकारिता की गरिमा, संपादकीय मूल्यों और राष्ट्रीय चिंतन का सशक्त मंच बनाने पर बल दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ अग्निहोत्री ने कहा कि एडिटर्स क्लब ऑफ इंडिया का प्रथम स्थापना दिवस केवल एक संगठन का वार्षिकोत्सव नहीं, बल्कि देशभर के संपादकों की एकता, निष्पक्ष पत्रकारिता, संपादकीय स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक होगा। बैठक के अंत में सभी पदाधिकारियों ने कार्यक्रम को ऐतिहासिक, अनुशासित एवं सफल बनाने के लिए पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करने का संकल्प लिया।

‘विकसित भारत के लिए नशामुक्त युवा’ कार्यक्रम का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय

के अंतर्गत मेरा युवा भारत (MY Bharat), प्रयागराज द्वारा युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने एवं नशामुक्त समाज के निर्माण के उद्देश्य से ‘विकसित भारत के लिए नशामुक्त युवा’ कार्यक्रम का आयोजन प्रयागराज की उपनिदेशक जागृति पाण्डेय के निर्देशन में ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के मालवीय सभागार में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के प्राचार्य प्रो. आनंद शंकर सिंह रहे। उन्होंने युवाओं को नशे से दूर रहने तथा अपनी ऊर्जा और प्रतिभा को सकारात्मक दिशा में लगाकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया साथ ही मुख्य अतिथि के द्वारा प्रयागराज

नशामुक्त घोषणा पत्र को हस्ताक्षरित कर विभिन्न नशामुक्त गतिविधियों का आयोजन करने की शुरुआत की गई। कार्यक्रम में 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं के लिए कविता/स्लैम पोएट्री, संगीत/रैप, स्लोगन लेखन, वाद-विवाद, समूह नृत्य, चित्रकला, नुक्कड़ नाटक तथा रील एवं शॉर्ट फिल्म प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता एवं प्रतिभा के माध्यम से नशामुक्त भारत का संदेश प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। प्रतियोगिताओं के शीर्ष तीन विजेताओं को मेडल एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए तथा प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को राज्य स्तरीय राउंड में प्रतिभाग करने का अवसर मिलेगा। प्रतियोगिता के विजेताः- कविता / स्लैम पोएट्री, प्रथम – वर्षा दुबे, द्वितीय – शिवम मिश्रा, तृतीय – अनुज कुमार, म्यूजिक / रैप- प्रथम – आर्यन और वेद टीम, द्वितीय – बम बम कुमार और नागमणि टीम, तृतीय – आँचल मिश्रा, स्लोगन लेखन- प्रथम–शुभम चौरसिया, द्वितीय – ममतेश मीना, तृतीय – आदित्य सिंह, वाद-विवाद- प्रथम – वंशिका पाठक, द्वितीय – निर्मल कांत पांडे, तृतीय – मुस्कान त्रिपाठी, समूह नृत्य- प्रथम – पिहू एंड टीम, द्वितीय – आस्था एंड टीम, पेंटिंग- प्रथम – स्नेहा, द्वितीय – उन्नति सिंह, तृतीय – बदरी विशाल पटेल, नुक्कड़ नाटक- प्रथम – शिवानी एंड टीम, द्वितीय – अदिति तिवारी एंड टीम, तृतीय – आयुष केशरी टीम, रील एवं शॉर्ट फिल्म- प्रथम – आदर्श पटेल, आकांक्षा यादव एवं सुशांत मिश्रा, द्वितीय – कुश्तुभ त्रिपाठी, तृतीय – अमरदीप ओझा, प्रतियोगिताओं के मूल्यांकन में निर्णायक मंडल के रूप में डॉ. अशोक पाण्डेय, डॉ. अरविंद मिश्रा, महेश द्विवेदी, राम अवध कुशवाहा, शरद मिश्रा, बृजेश कुमार, डॉ. सच्चिदानंदन त्रिपाठी, डॉ. गायत्री, डॉ. लवलेश, डॉ. रेफ़ाक, कृष्ण मौर्य, मनोज कुशवाहा, डॉ. अंजना एवं डॉ. शैलेश यादव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का मंच संचालन अमरेश दुबे एवं कुलदीप मिश्रा ने किया। कार्यक्रम की सफलता में मेरा युवा भारत स्वयंसेवक कुलदीप, श्वेतांक, केतन, रितेश यादव तथा ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज से कार्तिक, अरुण, युवराज, मुस्कान, रितिका, राजन, साक्षी एवं अरीशा सहित पूरी कोर टीम का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विभिन्न विकासखण्डों से प्रतिभागियों को सम्मिलित कराने दीपक, रघुराज, योगेंद्र, सत्याम उपस्थिति रहे। कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को नशे से दूर रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और नशामुक्त भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का संदेश दिया गया।

पी.सी.डी.ए प्रयागराज कार्यालय के वरिष्ठ कर्मचारी नेता बने अखिल भारतीय रक्षा लेखा संगठन (पी) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। पी.सी.डी.ए.(पी) प्रयागराज कार्यालय के वरिष्ठ कर्मचारी संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अजीत श्रीवास्तव , एजी एकाउन्टस ब्रदरहुड के पूर्व

कर्मचारी नेता श्री जवाहर श्रीवास्तव बने अखिल भारतीय रक्षा लेखा संगठन (पी)के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष !

गत माह राजधानी दिल्ली में आयोजित संगठन के राष्ट्रीय अधिवेशन के उपरांत हुई आवश्यक बैठक में यह निर्णय लिया गया। इनके मनोनन पर सिविल आडिट एण्ड एकाउंटेंट ब्रदरहुड एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष कृपाशंकर श्रीवास्तव , उच्च न्यायालय अधिकारी कर्मचारी एसोसिएशन के पूर्व महासचिव निशीथ वर्मा , उत्तर प्रदेश विकास प्राधिकरण अध्यक्ष श्री मनोज श्रीवास्तव , एजी आफिस के महामंत्री श्री पंकज श्रीवास्तव , कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट के निर्वाचित कार्यकारिणी सदस्य व पूर्व प्रवक्ता सुमित श्रीवास्तव , केपी ट्रस्ट के पूर्व महामंत्री कुमार नारायण ,

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रयागराज जिलाध्यक्ष श्री भानू प्रताप सिंह व जिला महामंत्री श्री रिन्कू श्रीवास्तव , महानगर अध्यक्ष श्री शीतला प्रसाद श्रीवास्तव , महानगर महामंत्री श्री राज हेमाशू सागर ने बधाई दिया।

आईटीआई में पूर्व में आवेदन करने वाले अभ्यर्थी 09 से 12 अगस्त तक व्यवसाय एवं संस्थान में कर सकेंगे संशोधन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। प्रधानाचार्य राजकीय

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, रायबरेली विवेक कुमार तिवारी ने बताया कि अधिशासी निदेशक, राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद, अलीगंज, लखनऊ के निर्देशानुसार जनपद के 05 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, 02 पीपीपी संस्थानों एवं 13 निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों को अपने पूर्व में किए गए आवेदन में संशोधन का अवसर प्रदान किया गया है। अभ्यर्थी 09 अगस्त 2026 से 12 अगस्त 2026 की रात्रि 12:00 बजे तक अपने आवेदन में अपेक्षित संशोधन कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि कतिपय तकनीकी कारणों से कुछ व्यवसाय/संस्थान एनसीवीटी/एससीवीटी के अंतर्गत प्रदर्शित नहीं हो रहे थे।

अब सभी संबंधित ट्रेड एवं संस्थान पोर्टल पर प्रदर्शित हो रहे हैं।

इच्छुक अभ्यर्थी https://scvtup.in पोर्टल पर अपने पूर्व में किए गए आवेदन को खोलकर अपनी इच्छानुसार वर्तमान ट्रेड एवं संस्थान का चयन करते हुए निर्धारित अवधि में संशोधन कर सकते हैं।

उन्होंने अभ्यर्थियों से अपील की है कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर अपने आवेदन में आवश्यक संशोधन अवश्य कर लें।

सावन माह में घर बैठे स्पीड पोस्ट से प्राप्त करें श्री सोमनाथ और काशी विश्वनाथ मंदिर का प्रसाद-पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

सोमनाथ हेतु रु270 और काशी विश्वनाथ हेतु रु251 रूपये का ई-मनीआर्डर होगा भेजना-पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) पोरबंदर। भगवन शिव को समर्पित सावन माह में हर श्रद्धालु की इच्छा होती है कि वह भगवान शिव के ज्योतिर्लिङ्ग स्वरूप का दर्शन और आशीर्वाद स्वरुप प्रसाद पा सके। अब ऐसे श्रद्धालुओं को निराश होने की आवश्यकता नहीं है। डाक विभाग की स्पीड पोस्ट सेवा के माध्यम से लोग देश के किसी भी कोने में घर बैठे प्रथम ज्योतिर्लिंग श्री सोमनाथ (गुजरात) और श्री काशी विश्वनाथ (वाराणसी) का प्रसाद मँगा सकते हैं। सावन माह में डाक विभाग ने इसके लिए विशेष प्रबंध किये हैं। उक्त जानकारी उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने दी। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि श्री सोमनाथ ट्रस्ट और डाक विभाग के मध्य हुए एक एग्रीमेंट के तहत कोई भी श्रद्धालु मैनेजर, श्री सोमनाथ ट्रस्ट, प्रभास पाटन, जिला-जूनागढ़, गुजरात-362268 को रु270 रूपये का ई-मनीऑर्डर भेजकर स्पीड पोस्ट द्वारा प्रसाद मँगा सकता है। इस ई-मनीऑर्डर पर ‘प्रसाद के लिए बुकिंग’ अंकित करना होगा। तदोपरांत श्री सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा संबंधित

श्रद्धालु को 400 ग्राम का प्रसाद का पैकेट स्पीड पोस्ट द्वारा भेजा जायेगा। इस प्रसाद में 200 ग्राम बेसन लड्डू, 100 ग्राम तिल की चिक्की और 100 ग्राम मावा की चिक्की शामिल है। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि आदि ज्योतिर्लिंग सोमनाथ के साथ-साथ वाराणसी स्थित श्री काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट और डाक विभाग के बीच हुये एक एग्रीमेण्ट के तहत देश के किसी भी कोने में रह रहे श्रद्धालु अपने नजदीकी डाकघर से मात्र ? 251 रूपये का ई-मनीआर्डर प्रवर अधीक्षक डाकघर, वाराणसी (पूर्वी) मंडल-221001 के नाम भेजकर स्पीड पोस्ट से श्री काशी विश्वनाथ का प्रसाद मँगा सकते हैं। ई-मनीऑर्डर प्राप्त होते ही डाक विभाग द्वारा तत्काल दिए गए पते पर स्पीड पोस्ट द्वारा प्रसाद भेज दिया जाएगा। श्री कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि प्रसाद में श्री काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग की छवि, महामृत्युंजय यंत्र, श्री शिव चालीसा, 108 दाने की रुद्राक्ष की माला, बेलपत्र, माता अन्नपूर्णा से भिक्षाटन करते भोले बाबा की छवि अंकित सिक्का, भभूति, रक्षा सूत्र, रुद्राक्ष मनका, मेवा, मिश्री का पैकेट इत्यादि शामिल हैं। सूखा होने के कारण यह प्रसाद लम्बे समय तक उपयोग में बना रहता है। उन्होंने बताया कि, डाक विभाग ने इस बात के भी प्रबंध किए हैं कि, श्रद्धालुओं को मोबाइल नंबर पर स्पीड पोस्ट का विवरण एस.एम.एस के माध्यम से मिलेगा। इसके लिए उन्हें ई-मनीऑर्डर में अपना पूरा पता, पिन कोड और मोबाइल नंबर लिखना अनिवार्य होगा।

हर घर तिरंगा अभियान-2026 का भव्य शुभारंभ, निकाली गई तिरंगा रैली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। रविवार को हर घर तिरंगा अभियान-2026 का शुभारंभ आज अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा स्थल से भव्य रूप से किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत सर्वप्रथम

चंद्रशेखर आजाद पार्क के गेट नंबर-1 से तिरंगा रैली निकाली गई। रैली को मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती हर्षिका सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। तिरंगा रैली के अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा स्थल पर पहुंचने के उपरांत अतिथियों एवं उपस्थित लोगों द्वारा अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पार्चन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर संस्कृति विभाग के पंजीकृत कलाकार सुजाता केसरी एंड कंपनी द्वारा देशभक्ति एवं सांस्कृतिक भावनाओं से ओत-प्रोत मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियां दी गईं। कलाकारों द्वारा ‘हमारे देशवा सोनवा के चिरैया’, ‘मोरे झूलनी के छैया’, ‘बलम दुपहरिया बिताई द हो’, ‘मेरे झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे, राम आएंगे’ आदि प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा हर घर तिरंगा थीम पर रंगोली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जनपद के प्रमुख विद्यालयों, जिनमें मेरी वाना मेकर, जीजीआईसी कटरा एवं बेसिक विद्यालय चौक के छात्राओं ने आकर्षक एवं भव्य रंगोलियां बनाकर देशभक्ति की भावना को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रयागराज नगर निगम के माननीय महापौर श्री उमेश चंद्र गणेश केसरवानी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश को आजादी दिलाने के लिए असंख्य नौजवानों एवं क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी। उन महान क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की शहादत को याद करने तथा उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा पूरे देश में हर घर तिरंगा अभियान का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए हमारे वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया और अंततः देश को अंग्रेजी शासन से मुक्ति दिलाई। हमें उनके त्याग, संघर्ष और बलिदान से प्रेरणा लेते हुए राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। सिविल डिफेंस के चीफ वार्डन श्री अनिल कुमार गुप्ता ‘अन्नू भैया’ ने जनपदवासियों से अपील करते हुए कहा कि प्रयागराज में 09 अगस्त से 17 अगस्त तक प्रतिदिन विभिन्न स्थलों पर देशभक्ति एवं जनजागरूकता से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने जनपदवासियों से इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता करने तथा अपना समय देकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने की अपील की। साथ ही उन्होंने सभी नागरिकों से अपने-अपने घरों पर तिरंगा झंडा फहराने का आह्वान किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महापौर श्री उमेश चंद्र गणेश केसरवानी का स्वागत एवं सम्मान जिला विकास अधिकारी श्री जी.पी. कुशवाहा द्वारा किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय अभिलेखागार, प्रयागराज द्वारा काकोरी ट्रेन एक्शन एवं हर घर तिरंगा थीम पर आधारित अभिलेख प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका मुख्य अतिथि सहित उपस्थित लोगों द्वारा अवलोकन किया गया। कार्यक्रम में उप नियंत्रक नागरिक सुरक्षा श्री नीरज मिश्रा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री अनिल कुमार सिंह, जिला कमांडेंट होमगार्ड श्री रणजीत सिंह, जिला स्काउट मास्टर श्री फिरोज खान, उद्यान अधीक्षक श्री जगदीश प्रसाद, श्री शशिकांत मिश्रा, संस्कृति विभाग के श्री विकास, श्री रोशन लाल, श्री अजय कुमार, श्री मोहम्मद सफीक, श्री सत्यम, श्री शुभम, श्री निर्भय सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन पाण्डुलिपि अधिकारी श्री गुलाम सरवर एवं क्षेत्रीय अभिलेख अधिकारी श्री राकेश कुमार वर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्कृति विभाग के श्री हरिश्चंद्र दुबे ने किया।

भारत विकास परिषद-स्वर्णिम का जल संरक्षण की दिशा में सराहनीय प्रयास

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। 'जल ही जीवन है' तथा

प्रधानमंत्री के 'कैच द रेन अभियान को सार्थक करते हुए भारत विकास परिषद-स्वर्णिम शाखा, नोएडा द्वारा चैतराम कन्या इंटर कॉलेज, सदरपुर, सेक्टर-45, नोएडा में वर्षा जल संचयन एवं संरक्षण केंद्र का निर्माण करवाया गया। इस महत्वपूर्ण पर्यावरणीय पहल के लिए श्री पवन कुमार अग्रवाल, सेक्टर-50, नोएडा का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्री महेश बाबू गुप्ता, श्री पवन कुमार अग्रवाल, श्री कवित बंसल, श्री प्रवेश चन्द्र गुप्ता, श्री अजय अग्रवाल, श्री प्रमोद शर्मा, श्री महेन्द्र कुमार शाह, श्री राजेश खंडेलवाल, श्री दिनेश मित्तल, श्री अजय मित्तल, श्री ओमप्रकाश बंसल, श्रीमती इंदिरा शर्मा एवं श्रीमती अंशु अग्रवाल सहित परिषद के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। यह पहल जल संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता एवं वर्षा जल के सदुपयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

बुद्ध से संबंधित प्राचीन बौद्ध स्थली कौशाम्बी के प्रति बढ़ रहा है बौद्ध श्रद्धालुओं का लगाव,सरकार द्वारा अभी बहुत कुछ करना बाकी है कौशाम्बी मेंःमहेन्द्र सेन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कौशाम्बी। प्राचीन बौद्ध स्थली कौशाम्बी के प्रति बौद्ध श्रद्धालुओं का

लगाव बढ़ता जा रहा है। ज्ञातव्य है कि प्राचीन काल में बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध यहां पर 520 ईसा पूर्व यहां आये थे। उन्होंने अपना नौवां वर्षावास यहीं व्यतीत किया था। वे कौशाम्बी निवासी अपने तीन वैश्य शिष्यों घोषित, पावारिक, कुक्कुट के बुलावे पर आये थे। घोषित ने बुद्ध और उनके भिक्षु संघ के लिए घोषिताराम बुद्ध विहार, पावारिक ने पावरिकाराम बुद्ध विहार और कुक्कुट ने कुक्कुटाराम बुद्ध विहार बनवाया था। बुद्ध घोषिताराम बुद्ध विहार मे ठहरे थे।और भिक्षु संघ के कुछ भिक्षु घोषिताराम में और कुछ पावरिकाराम में कुछ कुक्कुटाराम मे ठहरे थे।पुरातात्विक खुदाई मे घोषिताराम बुद्ध विहार का तो पता चल गया है किन्तु अन्य दो विहारों का पता अभी नहीं चला है जो आगे खुदाई करने पर मिल सकता है। अभी खुदाई योग्य दर्जनों संरचनाएं पड़ी हुई हैं।जहाँ किसानों की विनाश लीला जारी है।किसान वहां पर खेती-बाड़ी करते हैं। वैसे जहां या जिस क्षेत्र को पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया जाता है वहां खुदाई करना या निर्माण कार्य नहीं किया जा सकता है लेकिन यहां के संबंध में ऐसा नहीं लग रहा है। कुछ जानकारों का यह कहना है कि पूरे क्षेत्र को संरक्षित घोषित नहीं किया गया है जिससे किसान लोग जुताई बुवाई करते हैं।वैसे तो अधिक क्षेत्र को संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है।बहुत बड़े क्षेत्र में खेतों में टूटी-फूटी पक्की बिखरी ईंटों के अवशेष बड़ी मात्रा में आज भी देखे जा सकते हैं।बरसात में तो और साफ जुताई के पहले स्पष्ट देखा जा सकता है।सरकार को इस पर ध्यान देना चाहिए।प्राचीन गौरवमई विरासत की रक्षा करना सरकार का काम है। खैर हम अब आगे बढ़ते हैं।इस समय जो बौद्ध धर्म से संबंधित स्थल हैं उनमें से प्राचीन प्रमुख घोषिताराम विहार वत्स राज उदयन के महल के भग्नावशेष, सम्राट अशोक की टूटी हुई बड़ी लाट जिसका ऊपरी सिरा नहीं है।वर्तमान में बने बुद्ध विहारों में थाईलैंड का थाई बुद्ध विहार, श्रीलंका का श्रीलंकाराम बुद्ध विहार,जिसके इंचार्ज बौद्ध भिक्षु विशुद्ध महाथेरो हैं।इसका निर्माण 2007 ई० में हुआ था। कम्बोडिया के बुद्ध विहार का निर्माण 2009 ई० में हुआ था।यहां बर्मा म्यांमार का भी एक बुद्ध विहार है। जिसके मुखिया भंते पैनियार हैं। तीन भारतीय बुद्ध विहार हैं जिसमें भंते धम्म मित्र द्वारा स्थापित धम्म मित्र बुद्ध विहार है। इसकी स्थापना 27 जुलाई 2003 ई0 में की गई थी। इसके वर्तमान मुखिया धम्म मित्र के वारिस भंते धम्म रतन हैं।दो और भारतीय बुद्ध विहार हैं एक गुरुप्रसाद मदन वाला जिसमें पूजा-पाठ दूसरा बुद्ध विहार के भंते के मत्थे है। एक और भारतीय बुद्ध विहार है जो कोसम गांव की तरफ बन रहा है जो महाविहार के रूप में संचालित होगा।यहां शिक्षण व प्रशिक्षण की व्यवस्था मुहैय्या कराने का प्लान है। कौशाम्बी के कुछ आगे यमुना नदी बहती है। कौशाम्बी के चारों ओर (प्राचीन) मिट्टी की काफ़ी लम्बी चौड़ी (दीवार) चहारदीवारी के रूप में आज भी मौजूद है। जो कौशाम्बी को घेरे हुए है। यह कई किलोमीटर लम्बी है। यहां पर भारत सरकार की ओर से एक बुद्धा थीम पार्क का निर्माण कराया जा रहा है जो 52 बीघे में विस्तृत होगा। यह दो साल से बन रहा है। भंते धम्म रतन ने व अमीना (गोराजू) निवासी श्यामलाल मौर्य ने बुद्ध और बौद्ध धर्म से संबंधित तमाम रोचक और ज्ञानवर्धक बातें बताईं। इनके अनुसार कौशाम्बी से थोड़ा दूर प्रभासगिरि पभोषा का पहाड़ है जहां बुद्ध के चरण पडे थे। वे कुछ समय यहां पर रुके थे।यह पहाड़ यमुना नदी और गंगा नदी के बीच का एकमात्र पहाड़ है।गंगा और यमुना नदी के बीच के क्षेत्र को द्वाबा क्षेत्र कहा जाता है। यहां पभोषा प्रभासगिरि के कुछ बौद्ध धर्म से संबंधित अवशेष भी श्यामलाल मौर्य ने दिखाया और उनके संबंध में बताया भी । कौशाम्बी में कई जैन मंदिर भी हैं।कौशाम्बी में बौद्ध धर्म के अनुयायियों का आवागमन लगभग हमेशा बना रहता है।और पुरातत्व विभाग से यहां कुछ निर्माण कार्य कराये गये हैं। घोषिताराम में सरकारी रक्षकों (पुलिस) की व्यवस्था की गई है। उनके लिए आवास भी बना हुआ है।सरकार द्वारा कौशाम्बी के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। यहां पर दूर दूर से आने-जाने वाले लोगों के ठहरने की कोई सरकारी व्यवस्था नहीं है। जिसके लिए धर्मशाला का निर्माण आवश्यक है। जहां ठहरने वाले लोगों के लिए पानी बिजली पर्याप्त लैट्रिन व बाथरूम आवश्यक है। सरकार को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

नेफोमा की महत्वपूर्ण बैठक में रजिस्ट्री, ट्रैफिक, मेट्रो और गंगाजल आपूर्ति जैसे मुद्दों पर बनी रणनीति,नेफोमा में संगठन विस्तार की जिम्मेदारी कृष्णानंद को, संगठन मंत्री पद पर नियुक्त

वैकल्पिक प्रभावशाली हेडलाइनः महागुन मायवुड निवासी कृष्णानंद बने नेफोमा के संगठन मंत्री,नेफोमा का संगठन विस्तार होगा तेज, कृष्णानंद को मिली संगठन मंत्री की जिम्मेदारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। नेफोमा (नोएडा एस्टेट फ्लैट ओनर्स मेन एसोसिएशन)

की महत्वपूर्ण बैठक शनिवार को गौर सिटी सेंटर की 18वीं मंजिल पर संपन्न हुई। बैठक में संगठन के विस्तार, गतिविधियों को तेज करने तथा नोएडा-ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के फ्लैट ओनर्स से जुड़ी प्रमुख समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर उठाने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में नेफोमा अध्यक्ष अन्नू खान ने संगठन द्वारा किए जा रहे कार्यों एवं विभिन्न सोसाइटी के फ्लैट ओनर्स के हित में उठाए जा रहे कदमों की जानकारी दी। इस दौरान नेफोमा सदस्यों ने अपनी-अपनी सोसाइटी में चल रही समस्याओं को बैठक के समक्ष रखा तथा उनके समाधान में नेफोमा द्वारा किए जा रहे योगदान पर भी चर्चा की। संगठन विस्तार के तहत महागुन मायवुड निवासी कृष्णानंद को संगठन मंत्री नियुक्त किया गया। नेफोमा अध्यक्ष अनु खान ने उन्हें संगठन के विस्तार के लिए विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने तथा उसका प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान डेकोरी इंटीरियर्स को उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मानित भी किया गया। कंपनी को 'उत्कृष्ट सेवा अवार्ड' प्रदान कर उसके कार्यों की सराहना की गई। सदस्यों ने क्षेत्र की प्रमुख समस्याओं पर गंभीरता से विचार करते हुए फ्लैटों की रजिस्ट्री, लगातार बढ़ती ट्रैफिक समस्या, भूजल स्तर में हो रही गिरावट, मेट्रो कनेक्टिविटी तथा गंगाजल की आपूर्ति जैसे मुद्दों को प्राथमिकता के साथ संबंधित विभागों एवं शासन-प्रशासन के समक्ष उठाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से रखा। बैठक में संगठन को और अधिक मजबूत एवं व्यापक बनाने पर विशेष जोर दिया गया। सदस्यों ने अपने विचार एवं सुझाव रखते हुए नेफोमा की गतिविधियों को सोसाइटी स्तर तक और अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही, क्षेत्र की विभिन्न सोसाइटी के फ्लैट ओनर्स को संगठन से जोड़ने और उनकी समस्याओं को सामूहिक रूप से उठाने की रणनीति पर भी चर्चा हुई। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने विश्वास व्यक्त किया कि संगठन के विस्तार और सक्रियता से नोएडा-ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के फ्लैट ओनर्स की समस्याओं को एकजुट होकर अधिक मजबूती के साथ संबंधित मंचों एवं शासन-प्रशासन के समक्ष उठाया जा सकेगा। बैठक में शामिल सदस्य-बैठक में अन्नू खान, अनूप कुमार, अविनाश सिंह, दीपक दुबे, उमेश सिंह, किशोर कुमार, दीपक शर्मा, ओम उज्ज्वल, कृष्णानंद, सुशील सैनी, राजेंद्र मंटू, रामनारायण त्रिपाठी, अनुराग तोमर, अमित झा, अनिल कुमार, अनूप वर्मा, दुष्यन्त, ज्योति, सुनीता सिंह आदि सदस्यों ने भाग लिया।

ब्रिटिश राज के खिलाफ सबसे बड़ा आन्दोलन था अगस्त क्रान्ति-मुकेश रस्तोगी

9 अगस्त 1942 अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन की वर्षगांठ मनायी गयी,फलदार व सायादार पौधे रोपित कर राष्ट्र निर्माण का लिया संकल्प

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जनपद के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा 9 अगस्त 1942 अंग्रेजों भरत छोड़ो आन्दोलन की वर्षगांठ मनायी गयी। इस अवसर पर फलदार एवं सायादार पौधे बैकुण्ठ धाम में रोपित कर राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया गया। उ0प्र0 उद्योग व्यापार प्रतिनिध मण्डल के प्रदेश संगठन मंत्री मुकेश रस्तोगी ने कहा कि अगस्त क्रांति (भारत छोड़ो आन्दोलन) की शुरूआत 8 अगस्त 1942 को बाम्बे के अगस्त क्रांति मैदान (गोवालिया टैंक मैदान) में महात्मा गांधी के आवाहन पर हुई थी। गांधी जी ने यहां करो या मरो का नारा दिया था। युसूफ मेहर अली द्वारा अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया गया था। 9 अगस्त की सुबह तक सभी स्वतन्त्राता सेनानी ब्रिटिश हुकूमत द्वारा गिरिफ्तार कर लिए गए थे। नेताओं की गिरिफ्तारी के बाद आमजन ने आन्दोलन की कमान

संभाल ली थी। ब्रिटिश राज के खिलाफ यह सबसे बड़ा आन्दोलन था। सेन्ट्रल बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष ओपी यादव ने कहा कि अगस्त क्रान्ति आन्दोलन के साथ देश में क्रांतिकारी संघर्ष की नयी धारा संगठित हुई बढ़े। उनके क्रांतिकारी कारनामो की गाथा और बलिदानों से हमारा स्वतन्त्रता आन्दोलन गौरवान्वित है। गिलहरी प्रयास मानव धर्म मिशन के अध्यक्ष डा0 आदर्श शुक्ला ने कहा कि इस ऐतिहासिक दिन में पौधे रोपित कर राष्ट्र निर्माण में संकल्प का एक लघु प्रयास है। इन्हीं पेड़ों के आक्सीजन से मानव जीवन संचालित होता है। संत गाडगे सेवक कमलेश चौधरी ने कहा कि 1942 की जनक्रांति ही थी, जहाँ से रियासतों में आजादी के आन्दोलन की संगठित शुरूवात मानी जा सकती है। ब्राहम्ण समाज सेवा संगठन के जिला सचिव राजेन्द्र कुमार बाजपेयी ने कहा असहयोग आन्दोलन के समय तक यहां प्रजामंडल तक नहीं थे। 1942 में यहां आजाद मोर्चे ने आन्दोलन की बागडोर संभाली। सेवारत स्वर्णकार संस्थान के संरक्षक भौमेश कुमार ने कहा कि अगस्त क्रांति आन्दोलन 1930 के दशक से प्रारम्भ से ही जन आक्रोश की क्रांतिकारी अभिव्यक्ति थी। इस अवसर पर पूर्व प्रधान भोला चौधरी, सेवानिवृत्त कर्मचारी संघ के अध्यक्ष देवनाथ पाल, राजेन्द्र कुमार, बैकुण्ठ धाम के सेवादार बाबा सोनी, महिला कर्मचारी राजकुमारी आदि लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

विश्वकर्मा समाज की सामाजिक चिंतन बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। रविवार को डॉक्टर शशिकांत शर्मा प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी के कार्यालय अहिया रायपुर, निकट यूको बैंक, रायबरेली में अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा की महत्वपूर्ण सामाजिक चिंतन बैठक संपन्न हुई। बैठक में विश्वकर्मा समाज के सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उत्थान सहित समाज को संगठित और मजबूत बनाने से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया गया। विशेष रूप से आगामी 22 अगस्त 2026 को रायबरेली में आयोजित होने वाले पीडीए शिल्पकार जन संवाद महासभा को सफल, ऐतिहासिक एवं व्यापक बनाने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम में अधिक से अधिक समाज के लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने तथा समाज के प्रत्येक वर्ग तक महासभा के उद्देश्यों को पहुंचाने के लिए आवश्यक रणनीति पर विचार किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री रामधीन विश्वकर्मा ने की । बैठक में डॉ शशिकांत शर्मा , श्री शिवा प्रसाद शर्मा (उप पूर्व ब्लॉक प्रमुख राही) श्री दिलीप विश्वकर्मा (प्रधान भुयेमऊ) श्री आनंद कुमार विश्वकर्मा ग्राम प्रधान पूर्व नायन,श्री विजय विश्वकर्मा प्रधान दिलमनपुर श्री विनोद विश्वकर्मा पूर्व प्रधान दरियापुर , आर एस शर्मा ,अनिल विश्वकर्मा , मोहन लाल विश्वकर्मा, लल्लन प्रसाद विश्वकर्मा ,सोहन लाल विश्वकर्मा,हरगोविंद शर्मा ,ठाकुर दिन विश्वकर्मा सहित विश्वकर्मा समाज के अनेक वरिष्ठ, गणमान्य एवं सैंकड़ों सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक में यह संकल्प लिया गया कि सामाजिक एकता, समानता, सम्मान और सामाजिक न्याय के लिए विश्वकर्मा समाज को एकजुट होकर आगे बढ़ाया जाएगा। समाजवाद की विचारधारा के मूल सिद्धांत समान अवसर, वंचित एवं पिछड़े वर्गों की मजबूत भागीदारी और सामाजिक न्याय को आगे बढ़ाते हुए समाज के हितों की आवाज को और मजबूती प्रदान की जाएगी। 22 अगस्त का पीडीए शिल्पकार जन संवाद महासभा–विश्वकर्मा समाज की एकता, अधिकार और सम्मान की मजबूत आवाज बनेगी। सामाजिक एकता सामाजिक न्याय समान अधिकार यही हमारा संकल्प, यही हमारी पहचान।

मानसून में बीमारियों का बढ़ता है बीमारियों का खतरा, इलाज में खुद से दवा लेने से बचेंः डॉ डीके गुप्ता

बारिश के मौसम में डेंगू-मलेरिया से लेकर वायरल फ़ीवर, टाइफाइड और पेट के संक्रमण का खतरा बढ़ा, साफ पानी, मच्छरों से बचाव और स्वच्छ भोजन जरूरी, मच्छरजनित बीमारियां सबसे बड़ा खतरा, वायरल संक्रमण और त्वचा रोग भी परेशान करते हैं, संक्रमण से बचने के लिए सावधानी है जरूरी, मानसून में बीमारी से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका है–मच्छरों की रोकथाम, स्वच्छ पानी, सुरक्षित भोजन और व्यक्तिगत स्वच्छता।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। बारिश का मौसम जहां गर्मी से राहत देता है, वहीं अपने साथ कई तरह की बीमारियों का खतरा भी लेकर आता है। जलभराव, गंदगी, दूषित पानी, उमस और मच्छरों की बढ़ती संख्या के कारण मानसून में संक्रमण तेजी से फैल सकता है। डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, वायरल फीवर, टाइफाइड, हैजा, डायरिया, उल्टी-दस्त, हेपेटाइटिस-ए और ई जैसे जलजनित रोगों के साथ सर्दी-जुकाम, फ्लू और त्वचा संबंधी संक्रमण के मामले भी बढ़ते हैं। ऐसे में थोड़ी सी सावधानी बीमारी से बचाने में अहम भूमिका निभाती है। यह बातें फेलिक्स अस्पताल के चेयरमैन डॉ डीके गुप्ता ने कही। उन्होंने बताया कि मानसून में जगह-जगह पानी जमा होने से मच्छरों को पनपने के लिए अनुकूल वातावरण मिलता है। डेंगू और चिकनगुनिया एडीज मच्छर के काटने से फैलते हैं। जबकि मलेरिया संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से होता है। डेंगू में तेज बुखार, सिर और आंखों के पीछे दर्द, बदन दर्द, कमजोरी, मतली और कभी-कभी त्वचा पर लाल चकत्ते हो सकते हैं। मलेरिया में बुखार के साथ ठंड लगना और पसीना आना प्रमुख लक्षण हैं। चिकनगुनिया में तेज बुखार के साथ जोड़ों में दर्द और सूजन हो सकती है। बारिश के दौरान पेयजल स्रोत दूषित होने पर डायरिया, पेचिश, टाइफाइड, हैजा और हेपेटाइटिस-ए जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसके प्रमुख लक्षणों में दस्त, उल्टी, पेट दर्द, बुखार, कमजोरी और शरीर में पानी की कमी शामिल हैं। बच्चों और बुजुर्गों में डिहाइड्रेशन ज्यादा गंभीर हो सकता है। मानसून में नमी और तापमान में बदलाव के कारण वायरल फीवर, सर्दी-जुकाम, खांसी और फ्लू के मामले भी

सामने आते हैं। लगातार गीले कपड़े पहनने, पसीना और नमी के कारण फंगल इंफेक्शन भी हो सकता है। पैरों में लंबे समय तक पानी लगा रहने से खुजली, लाल चकत्ते और फंगल संक्रमण की समस्या हो सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार डायरिया दुनिया में बच्चों में बीमारी और मृत्यु का एक प्रमुख कारण है और सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता तथा हाथों की सफाई से इसके बड़े हिस्से को रोका जा सकता है। वहीं विश्व मलेरिया रिपोर्ट के अनुसार 2024 में दुनिया में मलेरिया के करीब 28.2 करोड़ मामले और करीब 6.1 लाख मौतें दर्ज हुईं। भारत में भी मलेरिया और डेंगू जैसे वेक्टर जनित रोग सार्वजनिक स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण चुनौती हैं। हालांकि किसी एक जिले में मानसून के दौरान बीमारी के मामलों की स्थिति स्थानीय निगरानी और स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों से ही स्पष्ट होती है। बीमारी के लक्षण दिखने पर डॉक्टर से परामर्श लेना जरूरी है। डेंगू की आशंका में पर्याप्त तरल पदार्थ लेना और चिकित्सकीय निगरानी महत्वपूर्ण है। डेंगू के संदिग्ध मरीज बिना डॉक्टर की सलाह के एस्पिरिन या इबुप्रोफेन जैसी दवाएं न लें, क्योंकि रक्तस्राव का खतरा बढ़ सकता है। मलेरिया और टाइफाइड का इलाज डॉक्टर की सलाह और जांच के आधार पर किया जाता है। डायरिया में ओआरएस और पर्याप्त तरल पदार्थ शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट की कमी को पूरा करने में मदद करते हैं। मानसून में बुखार को हल्के में नहीं लेना चाहिए। तेज बुखार, सांस लेने में परेशानी, लगातार उल्टी, अत्यधिक कमजोरी, बेहोशी, शरीर में खून आना या पेशाब कम होना जैसे लक्षण दिखाई दें तो तुरंत चिकित्सा सहायता लेनी चाहिए। बच्चों, गर्भवती महिलाओं, बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों में विशेष सावधानी जरूरी है। ऐसे करें मानसून सेफ्टीः- घर के आसपास पानी जमा न होने दें। कूलर, गमले, टायर और छत पर जमा पानी नियमित रूप से साफ करें। मच्छरदानी, रिपेलेंट और पूरी आस्तीन के कपड़ों का इस्तेमाल करें।

पीने के लिए साफ या उबला हुआ पानी इस्तेमाल करें। कटे फल, खुले में रखे खाद्य पदार्थ और दूषित पानी से बचें। खाना खाने और शौचालय के बाद साबुन से हाथ धोएं। बारिश में भीगने के बाद शरीर और पैरों को अच्छी तरह सुखाएं। बुखार होने पर खुद से एंटीबायोटिक या दर्द की दवा लेने के बजाय डॉक्टर से सलाह लें। तेज बुखार कई दिनों तक बना रहे तो जांच कराएं।

भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ में नहीं चलेगा दोहरी सदस्यता का खेल,दोहरी भूमिका में शामिल लोगों को किया जा रहा चिन्हांकित, दिखाया जाएगा बाहर का रास्ता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ में कुछ साथी दोहरी सदस्यता का खेल खेल रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के सदस्य होने के बावजूद दूसरे संगठन की सदस्यता ले रखी है। कुछ साथी ऐसे भी हैं जो दूसरे संगठन से आए हैं और वहां से अपनी सदस्यता खत्म किए बगैर महासंघ के सदस्य बनकर दोनों का उपयोग कर रहे हैं। ऐसा करना विधिक रुप से पूरी तरह गलत है और दोनों संगठनों के साथ विश्वासघात है। अब भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ में दोहरी भूमिका निभा रहे लोगों को जल्दी ही किनारे किया जाएगा । भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय मुख्य महासचिव मथुरा प्रसाद धुरिया ने ऐसे सदस्यों से अनुरोध किया है कि जिस भी संगठन में रहना है पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ रहिए। दो नावों की सवारी सदैव घातक होती है। ऐसे सदस्यों के लिए एक महीने का समय है। स्वेच्छा से संगठन का चयन करें, एक संगठन छोड़ दें, जहां मन रमता हो उसी संगठन में रहें। महासंघ पूरे राष्ट्र में ऐसे सदस्यों को चिन्हांकित कर रहा है जो दोहरी सदस्यता का खेल खेलते हुए संगठन और संगठन के पदाधिकारियों को गुमराह कर रहे हैं। महासंघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों और कोर कमेटी ने निर्णय लिया है कि ऐसे सदस्यों को जल्द ही संगठन के बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा जो संगठन के निर्णय को दरकिनार कर दोहरी सदस्यता में लिप्त पाए जाएंगे। धुरिया ने बताया कि अनुशासन एवं जांच प्रकोष्ठ को इसकी जिम्मेदारी दी गई है जो अति शीघ्र ही अपनी आंख्या प्रस्तुत कर देगा इसके पश्चात विधिक कार्यवाही की जाएगी और ऐसे लोगों को संगठन से सेवा मुक्त कर दिया जाएगा। धुरिया ने बताया कि कुछ सदस्य ऐसे भी है जो 1 वर्ष का परिचय पत्र बनवा कर दूसरे वर्ष का नवीनीकरण नहीं कराते हैं ऐसी दशा में अब व्यवस्था परिवर्तित कर दी गई है सदस्यता में निरंतरता के लिए आपको प्रतिवर्ष नवीनीकरण शुल्क जमा करना अनिवार्य होगा और नया परिचय पत्र ही मान्य होगा । यदि आपने बीच में किसी वर्ष अपना शुल्क नहीं जमा किया है तो वर्तमान वर्ष में नवीनीकरण कराते समय पिछला शुल्क भी जमा करना अनिवार्य होगा अन्यथा आप की सदस्यता नई मानी जाएगी इस तरह के सदस्यों को महासंघ की सुविधाओं का लाभ मिल पाना मुश्किल होगा और वह पदाधिकारी के दायित्व से भी वंचित किए जा सकते हैं ।

जो पदाधिकारी पूरे वर्ष भर में एक भी सदस्य नहीं बना सकते और न तो किसी आयोजन में शामिल हो सकते हैं , उन्हें आगे अवसर मिलना मुश्किल होगा । कुछ सदस्य अपनी इकाई को दर किनार करते हैं और सीधे केन्द्रीय कार्यालय में फोन कर देते हैं जो अन्य पदाधिकारी का अपमान है।

भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ में किसी भी प्रकार की असुविधा और समस्या के निराकरण के लिए पत्रकार साथी पहले अपने तहसील / जिला/ मंडल/ अथवा प्रदेश पदाधिकारी से संपर्क कर सकते हैं।

कौशल सुधार प्रशिक्षण योजना के तहत दर्जी व ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण बैचों का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। कौशल सुधार प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत प्रयागराज में दर्जी ट्रेड के एक सामान्य बैच, एससीएसपी के अंतर्गत एक दर्जी बैच तथा एक ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण बैच का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि माननीय महापौर श्री उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी ने किया। कार्यक्रम के दौरान युवाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर उन्हें आत्मनिर्भर और स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाने पर जोर दिया गया।

प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों को व्यावहारिक कौशल प्रदान किए जाएंगे, जिससे वे रोजगार के अवसर प्राप्त करने के साथ अपना व्यवसाय भी शुरू कर सकें। इस अवसर पर सभासद राम लोचन साहू, सभासद अरुण कुमार, जिला ग्रामोद्योग अधिकारी कार्यालय प्रयागराज से सुनील कुमार, मण्डलीय ग्रामोद्योग प्रशिक्षण केन्द्र अनुवां के प्राचार्य जवाहर लाल तथा प्रशिक्षण प्रभारी महेन्द्र कुशवाहा, हिमांशु यादव, राम लाल, अनुज सहित अन्य अधिकारी एवं प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

हर घर तिरंगा अभियान-2026 के तहत पीएम श्री राजकीय बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज में गूंजा 'वन्दे मातरम्

बालिकाओं ने सामूहिक रूप से किया राष्ट्रीय गीत का गायन, राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति की भावना का दिया संदेश,09 से 15 अगस्त तक उत्सव के रूप में मनाया जा रहा 'हर घर तिरंगा अभियान-2026'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' की 150वीं जयंती के अवसर पर देशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में 'वन्दे मातरम्' के तृतीय चरण के साथ 'हर घर तिरंगा अभियान-2026' को उत्सव के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया गया है। यह अभियान 09 से 15 अगस्त, 2026 तक सम्पूर्ण देश में भौतिक एवं डिजिटल दोनों माध्यमों से आयोजित किया जा रहा है। इसी क्रम में आज पीएम श्री राजकीय बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज, सोनभद्र में राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय की बालिकाओं द्वारा राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' का सामूहिक गायन किया गया। सामूहिक गायन के दौरान विद्यालय परिसर देशभक्ति के भाव से सराबोर हो गया। इस अवसर पर जिला विद्यालय निरीक्षक श्री जयराम सिंह, विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं छात्राएं उपस्थित रहीं। उपस्थित सभी लोगों ने 'हर घर तिरंगा अभियान-2026' के उद्देश्यों को जन-जन तक पहुंचाने तथा राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रीय गीत के प्रति सम्मान की भावना को और मजबूत करने का संदेश दिया। 'हर घर तिरंगा अभियान-2026' के माध्यम से नागरिकों में राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान, राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ करने का संदेश दिया जा रहा है।

अभियान के अंतर्गत नागरिकों को अपने घरों पर तिरंगा फहराने तथा डिजिटल माध्यमों से भी अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए 'वन्दे मातरम्' के प्रति सम्मान और राष्ट्र के प्रति अपने समर्पण की भावना व्यक्त की।

अब जुगैल की बदलेगी तस्वीर, लगेंगे तीन मोबाइल टॉवर,जनप्रतिनिधियों व जिला प्रशासन के प्रयास ला रहे रंग, इंटरनेट तक आसान पहुंच से विकास की मुख्यधारा से जुड़ेंगे ग्रामीण

शिक्षा, स्वास्थ्य, आपातकालीन सेवाओं और सरकारी योजनाओं तक आमजन की पहुंच होगी आसान,पिपरा, गरदा व जोरावा में बीएसएनएल स्थापित करेगा 4-जी टॉवर, केंद्र की मोदी व प्रदेश की योगी सरकार के कार्यकाल में पूरी हुई लोगों की दशकों पुरानी मांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद के दूरस्थ और लंबे समय से मोबाइल नेटवर्क की समस्या से जूझ रहे जुगैल क्षेत्र के लोगों को जल्द बड़ी राहत मिलने वाली है।

केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की योगी सरकार की पहल, जनप्रतिनिधियों के प्रयास तथा जिला प्रशासन की सक्रियता से जुगैल क्षेत्र के पिपरा, गरदा व जोरावा में जल्द ही बीएसएनएल के 4-जी मोबाइल टॉवर स्थापित किए जाएंगे। जिलाधिकारी के निर्देश पर टॉवर स्थापना की प्रक्रिया तेज कर दी गई है जल्द ही स्थापना का कार्य शुरू हो जाएगा।

जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने बताया कि क्षेत्रफल के हिसाब से जनपद की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत जुगैल में भगौलिक परिस्थितियों के कारण मोबाइल नेटवर्क तक आम जन की आसान पहुंच बड़ी समस्या थी। कई वर्षों से यहां के निवासी इस समस्या को लेकर परेशान थे। लेकिन अब जल्द ही उनकी यह समस्या दूर हो जाएगी।

बताया कि बीएसएनएल पिपरा, गरदा व जोरावा में 4-जी टॉवर स्थापित करेगा। बताया कि एक ग्राम पंचायत में अधिकतम दो टॉवर लगाने का प्रावधान है,

लेकिन नेटवर्क की समस्या को दूर करने के लिए उन्होंने बीएसएनएल के डीजी से समन्वय स्थापित कर परिस्थितियों से अवगत कराया गया, जिसके बाद तीन और टॉवरों की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की गई।

जुगैल ग्राम पंचायत में निर्बाध मोबाइल नेटवर्क की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कुल पांच टॉवर लगेंगे। नेटवर्क विहीन क्षेत्रों में संचार सुविधाओं के विस्तार पर प्रकाश डालते हुए जिलाधिकारी ने बताया कि पूर्व में 25 मोबाइल टॉवर स्वीकृत किए गए थे,

जिनमें से 21 टावरों की स्थापना का कार्य भी शुरू हो चुका है। शेष तीन टॉवर वन विभाग से संबंधित औपचारिकताओं के कारण लंबित हैं, जिन पर भी जल्द काम शुरू हो जाएगा।

उन्होंने बताया कि 3 नए टॉवरों को स्वीकृति मिलने के साथ ही जनपद के नेटवर्क विहीन क्षेत्रों में स्थापित होने वाले नए मोबाइल टॉवर की कुल संख्या 28 हो गई है।

मोबाइल टॉवरों की स्थापना से आमजन की इंटरनेट तक आसान पहुंच उन्हें विकास मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य करेगी।

अब देश-दुनिया के साथ कदमताल कर सकेंगे जुगैलवासी-जुगैल क्षेत्र में मोबाइल नेटवर्क की कमी के कारण ग्रामीणों को वर्षों से अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

किसी आपात स्थिति में फोन से संपर्क करना मुश्किल होता था,

विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में परेशानी आती थी, जबकि किसानों और युवाओं को भी डिजिटल सेवाओं का पूरा लाभ नहीं मिल पाता था।

कई बार लोगों को केवल मोबाइल सिग्नल पाने के लिए गांव से दूर ऊंचे स्थानों तक जाना पड़ता था। अब टॉवर स्थापित होने के बाद ग्रामीणों को इन समस्याओं से काफी हद तक राहत मिलेगी।

बेहतर मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध होने से शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन आवेदन, ई-गवर्नेंस सेवाओं और विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी लोगों तक आसानी से पहुंच सकेगी।

आपातकालीन परिस्थितियों में पुलिस, एंबुलेंस और अन्य आवश्यक सेवाओं से तत्काल संपर्क स्थापित करना भी संभव होगा।

स्थानीय व्यापारियों, किसानों और युवाओं को भी इंटरनेट आधारित सेवाओं का लाभ मिलेगा, जिससे रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर विकसित होंगे।

ग्रामीणों का कहना है कि मोबाइल टॉवर की स्थापना उनकी वर्षों पुरानी मांग थी, जो अब पूरी होने जा रही है।

उनका मानना है कि बेहतर संचार व्यवस्था से जुगैल क्षेत्र विकास की मुख्यधारा से और अधिक मजबूती के साथ जुड़ सकेगा तथा डिजिटल भारत के लक्ष्य को भी नई गति मिलेगी।

जिलाधिकारी का स्पष्ट निर्देशःस्कूली बच्चों की सुरक्षा से खिलवाड़ करने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई

निर्धारित क्षमता से अधिक बच्चों को बैठाकर वाहन चलाने वालों पर होगी सख्त कार्रवाई, स्कूली वाहनों की जांच का अभियान जारी,सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों के अनुपालन के लिए सघन प्रवर्तन अभियान, 56 वाहनों के चालान एवं 14 वाहन बंद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शासन के निर्देशों के क्रम में जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के निर्देशन में जनपद में सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों के प्रभावी अनुपालन तथा स्कूली बच्चों की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए परिवहन विभाग द्वारा व्यापक स्तर पर सघन प्रवर्तन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत स्कूली वाहनों के साथ-साथ यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले अन्य वाहनों के विरुद्ध भी नियमानुसार प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है। प्रवर्तन अभियान के दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के विरुद्ध कुल 56 चालान तथा 14 वाहनों को बंद करने की कार्रवाई की गई। प्रवर्तन कार्रवाई के दौरान 05 ओवरलोड वाहनों के चालान तथा 03 ओवरलोड वाहनों को बंद, 09 बिना फिटनेस संचालित वाहनों के चालान, 10 परमिट की शर्तों के विरुद्ध संचालित वाहनों के चालान, 16 बिना हेलमेट वाहन चलाने के चालान तथा 06 वाहन चालकों द्वारा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग करने पर चालान की कार्रवाई की गई। इसी क्रम में स्कूली बच्चों की सुरक्षा को विशेष प्राथमिकता देते हुए ऑटो, टोटो एवं ई-रिक्शा सहित स्कूली बच्चों के आवागमन में प्रयुक्त वाहनों की सघन जांच की जा रही है। जांच के दौरान निर्धारित क्षमता से अधिक बच्चों को बैठाकर ले जाने, आवश्यक दस्तावेज एवं फिटनेस का अभाव तथा निर्धारित सुरक्षा मानकों की अनदेखी करने वाले वाहन संचालकों के विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है। स्कूली वाहनों के संचालकों एवं चालकों को दिए गए स्पष्ट निर्देश-एआरटीओ प्रवर्तन द्वारा स्कूली वाहनों के संचालकों, ड्राइवरों एवं ई-रिक्शा चालकों को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया गया है कि वाहनों की निर्धारित क्षमता एवं शासन द्वारा निर्धारित सुरक्षा मानकों के अनुसार ही स्कूली बच्चों का परिवहन किया जाए। किसी भी दशा में क्षमता से अधिक बच्चों को वाहन में न बैठाया जाए। वाहन के आवश्यक दस्तावेज, फिटनेस एवं अन्य निर्धारित सुरक्षा मानकों को पूर्ण रखना अनिवार्य होगा। वाहन संचालकों एवं चालकों को स्पष्ट चेतावनी दी गई है कि नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर संबंधित वाहन चालक एवं संचालक के विरुद्ध नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी। स्कूली बच्चों की सुरक्षा के मामले में किसी भी स्तर पर लापरवाही अथवा शिथिलता स्वीकार नहीं की जाएगी। बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता : जिलाधिकारी-जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि स्कूली वाहनों की जांच का अभियान निरंतर जारी रखा जाए तथा बच्चों की सुरक्षा से जुड़े निर्धारित मानकों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए। उन्होंने कहा कि बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसमें किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। जिलाधिकारी ने वाहन चालकों से अपील की है कि वे सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों का अनिवार्य रूप से पालन करें। ओवरलोडिंग से बचें, वाहनों को निर्धारित फिटनेस के साथ संचालित करें, परमिट की शर्तों का पालन करें,

दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट का प्रयोग करें तथा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग कदापि न करें। जिलाधिकारी ने विशेष रूप से स्कूली वाहनों के संचालकों एवं चालकों से अपील की है कि बच्चों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए निर्धारित क्षमता के अनुसार ही बच्चों का परिवहन करें। वाहनों में आवश्यक दस्तावेज, फिटनेस एवं निर्धारित सुरक्षा मानकों का अनिवार्य रूप से पालन सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने अभिभावकों से भी अपील की है कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए केवल अधिकृत, फिट एवं निर्धारित सुरक्षा मानकों का पालन करने वाले वाहनों का ही प्रयोग करें।

क्षमता से अधिक बच्चों को बैठाकर अथवा सुरक्षा मानकों की अनदेखी कर संचालित होने वाले वाहनों से बच्चों को स्कूल भेजने से बचें।

जिलाधिकारी ने स्पष्ट किया है कि सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों के उल्लंघन के विरुद्ध प्रवर्तन कार्रवाई आगे भी निरंतर जारी रहेगी तथा नियमों की अनदेखी करने वाले वाहन चालकों एवं संचालकों के विरुद्ध नियमानुसार कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

विश्व आदिवासी दिवस पर बरहमोरी में आदिवासी चौपाल, 'पेड़ हैं तो प्राण हैं' आंदोलन और विंध्य एक्सप्रेसवे पर हुई चर्चा-संदीप मिश्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर बरहमोरी ग्राम पंचायत में आदिवासी चौपाल का आयोजन किया गया। इस दौरान ग्रामीणों एवं आदिवासी समाज के लोगों को विश्व आदिवासी दिवस की शुभकामनाएं दी गईं तथा जल, जंगल और जमीन की सुरक्षा को लेकर विचार-विमर्श किया गया।

कार्यक्रम में किसान नव जवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्रा ने 'पेड़ हैं तो प्राण हैं' आंदोलन के उद्देश्य पर विस्तार से चर्चा करते हुए पर्यावरण संरक्षण, जंगलों की सुरक्षा और आदिवासी समाज के अधिकारों के प्रति लोगों को जागरूक किया।

उन्होंने कहा कि जल, जंगल और जमीन की रक्षा करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है तथा अधिक से अधिक पौधरोपण और पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी को आगे आना चाहिए।

वही मोर्चा संयोजक ने कहा कि जो आदिवासी परिवारि जन जहाँ बसा है पहले उन्हे बनाधिकार के तहत पट्टा दिया जाय उसके बाद ही कोई बात होगी-बरहमोरी ग्राम पंचायत के प्रधान लखीनारायण गोंड ने प्रस्तावित विंध्य एक्सप्रेसवे और क्षेत्र में औद्योगिक परियोजनाओं को लेकर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि विकास कार्य स्थानीय लोगों के हितों और पर्यावरण को ध्यान में रखकर होने चाहिए।

'पेड़ हैं तो प्राण हैं' आंदोलन के संयोजक रामसूरत खरवार ने कहा कि क्षेत्र में प्रस्तावित कंपनियों का ग्रामीण विरोध कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि विंध्य एक्सप्रेसवे के निर्माण से क्षेत्र को संभावित नुकसान होने की आशंका है, इसलिए स्थानीय लोगों की बात सुनना आवश्यक है।

वही लक्ष्मन बादी ने यहाँ के जनप्रतिनिधि लोगों व समाज कल्याण मन्त्री को आडे हाथ लेते हुए कहा कि हम आदिवासियों के उजाड़ने पर जो लोग आज नहीं बोल रहे हैं उन्हे सदन से वापस हम लोग सड़क पर लाने का काम करेन्गो तब इन लोगों को आदिवासियों की ताकत का एहसास होगा-वनाधिकार समिति के अध्यक्ष कन्हैया चेरो ने कहा कि यदि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर औद्योगिक परियोजनाएं स्थापित होती हैं तो स्थानीय लोगों की आजीविका प्रभावित हो सकती है।

उन्होंने कहा कि जंगल और जमीन आदिवासी समाज के जीवन का आधार हैं और इनके संरक्षण के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए। आज के कार्यक्रम में प्रधान बरहमोरी कन्हैया चेरो विन्दू खरवार लक्ष्मन बादी योगेन्द्र यादव बसमतिया गोड सम्भू खरवार दिनेश चेरो सुरेस गोड खेसारी गोड कल्लू खरवार गुलाबी गोड व सैकड़ों की सख्या में आदिवासी परिवारि जन उपस्थित रहे।

विश्व आदिवासी दिवस की पूर्व संध्या पर आदिवासियों ने निकाला पैदल मार्च, राज्यपाल के नाम सौंपा ज्ञापन

वनाधिकार कानून लागू करने, कैमूर आदिवासी विश्वविद्यालय की स्थापना और शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने समेत उठाई कई मांगें

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शनिवार को विश्व आदिवासी दिवस की पूर्व संध्या पर शनिवार को अखिल भारतीय आदिवासी महासभा सोनभद्र एवं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सोनभद्र के संयुक्त तत्वावधान में आदिवासी समुदाय की लंबित समस्याओं के निराकरण और अधिकारों के संरक्षण की मांग को लेकर प्रदर्शन किया गया। जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे सैकड़ों आदिवासी ग्रामीणों ने रॉबर्ट्सगंज नगर के चुर्क तिराहे से जिलाधिकारी कार्यालय गेट तक पैदल मार्च निकाला। इसके बाद राज्यपाल के नाम संबोधित मांग पत्र एसडीएम सदर को सौंपा गया। सीपीआई जिला सचिव कामरेड आर.के.शर्मा ने कहा कि सोनभद्र प्रदेश का प्रमुख आदिवासी बाहुल्य जनपद है, जहां गोंड, खरवार, बैगा, भुइयां, कोल, चेरो, माझी, पनिका, धूरिया, कोरकू एवं मुसहर-वनवासी सहित विभिन्न समुदाय लंबे समय से निवास करते हैं। इसके बावजूद आदिवासी समाज आज भी भूमि अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहा है। ज्ञापन में वनाधिकार कानून-2006 के तहत लंबित और निरस्त दावों की निष्पक्ष पुनः समीक्षा कर भूमि पट्टे देने, दावों के निस्तारण तक बेदखली रोकने तथा ग्राम सभाओं को अधिकार देने की मांग की गई। इसके अलावा सोनभद्र में कैमूर आदिवासी विश्वविद्यालय की स्थापना, दुद्धी, बभनी, म्योरपुर और चोपन जैसे क्षेत्रों में एकलव्य विद्यालयों की संख्या बढ़ाने तथा आदिवासी बहुल गांवों में स्वास्थ्य केंद्र स्थापित करने की मांग उठाई गई। वही देव कुमार विश्वकर्मा ने आदिवासी गांवों में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने, लघुवन उपज के लिए सरकारी क्रय केंद्र स्थापित करने, खनन प्रभावित परिवारों को डीएमएफ से लाभ एवं रोजगार देने और आंदोलन के दौरान दर्ज मुकदमों की समीक्षा कर फर्जी मुकदमे वापस लेने की मांग की। साथ ही एससी/एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम का प्रभावी पालन तथा आगामी जाति जनगणना में 'आदिवासी धर्म' के लिए पृथक विकल्प देने की मांग किया गया।विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर कैमूर आदिवासी विश्वविद्यालय की मांग को मजबूती से उठाते हुए वक्ताओं ने कहा कि आदिवासी बहुल क्षेत्र में उच्च शिक्षा की बेहतर व्यवस्था के लिए विश्वविद्यालय की स्थापना जरूरी है और कहा कि शिक्षा के बिना किसी भी समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। जनपद सोनभद्र में विश्वविद्यालय की स्थापना होने से जनपद पर लगा पिछड़ापन का तमगा हटाया जा सकता है और चार राज्यों की सीमा को समेटे जनपद की कनेक्टिविटी और विकास में नई रेखा साबित हो होगी, इस लिए भाकपा और लगातार इस सवाल को लेकर आंदोलन कर रही है। अन्य वक्ताओं ने जनपद वनाधिकार अधिनियम और पेसा एक्ट का कड़ाई से पालन कराएं जाने की बात को उठाया। अखिल भारतीय आदिवासी महासभा जिला कमेटी सोनभद्र के संयोजक मंडल के सदस्य अकबर सिंह गोंड , लक्ष्मण बादी, मुन्नीलाल खरवार, जगन्नाथ बैगा आदि कार्यक्रम का नेतृत्व किए। इस दौरान मुख्य रूप से देव कुमार विश्वकर्मा, बसावन गुप्ता, राम जन्म कुशवाहा, अमर नाथ सूर्य , प्रेम चंद गुप्ता , चन्दन प्रसाद, हृदय नारायण गुप्ता, मुन्नी लाल खरवार, सूरज बंशल, नागेन्द्र कुमार, जगरनाथ बैगा, बुधवंत, जयपाल सिंह , देवंती देवी, सोनमती, शीतल, राजेंद्र, भगवान दास , कैलाश, सीता देवी, जगबंधन गोंड, बजरंगी गोंड, लक्ष्मण गोंड,जोगेंद्र गोंड, आदि नेताओं के साथ सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नितिन अग्रवाल जी के जन्मदिन पर वृक्षारोपण कर संदेश दिया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन सोनभद्र द्वारा लोढ़ी स्थित खुशबू बाग नर्सरी परअपने प्रदेश अध्यक्ष नितिन अग्रवाल जी के जन्मदिन पर वृक्षारोपण कर संदेश दिया कि वृक्ष बचेंगे, तो जीवन बचेगा प्रकृति बचेगी ,तो भविष्य बचेगा। संगठन के जिलाध्यक्ष कौशल शर्मा ने कहा कि आज का दिन हमारे लिए केवल जन्मदिन मनाने का अवसर ही नहीं बल्कि एक सुंदर संकल्प को धरती पर रोपित करने का अवसर भी है।श्री शर्मा ने कहा कि वृक्ष केवल मिट्टी में रोपा गया एक पौधा नहीं होता वह आने वाली पीढियां के लिए हमारी ओर से छोड़ी गई जीवन की अमूल्य विरासत होता है। आज हम जो पौधा लगा रहे हैं वह आने वाले वर्षों में किसी राहगीर को छाया देगा किसी पक्षी को आश्रय देगा वातावरण को वायु देगा और हमारी धरती को हरित आभा प्रदान करेगा हमारे प्रदेश अध्यक्ष जी का जन्मदिन यदि किसी भौतिक उपहार से मनाते तो उसका प्रभाव सीमित होता लेकिन एक पौधा लगाकर हम उनके जन्मदिन को प्रकृति पर्यावरण और समाज की सेवा से जोड़ रहे हैं यही इस आयोजन की सबसे बड़ी सार्थकता है। जिला अध्यक्ष ने कहा कि व्यापारी समाज केवल व्यापार और आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है व्यापारी समाज की धड़कन है और सामाजिक सरोकारों में उसकी भागीदारी उसकी नैतिक जिम्मेदारी भी है। हमारा संगठन सदैव व्यापारियों की हित के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के हितों के लिए भी अपनी भूमिका निभाता रहता है। श्री शर्मा ने कहा कि सोनभद्र प्राकृतिक संपदा से समृद्ध जनपद है, इसकी हरियाली पहाड़ ,वन और जल स्रोत हमारी पहचान है। इसलिए हमारा दायित्व और भी बढ़ जाता है कि हम विकास के साथ-साथ प्रकृति के संरक्षण का भी संकल्प लें।उन्होंने कहा कि आज इस अवसर पर मैं व्यापारी संगठन के सभी पदाधिकारी और व्यापारी बंधुओ से आग्रह करता हूं कि हम केवल पौधे लगाकर अपनी दायित्व की इतिश्री ना समझे बल्कि जिस प्रकार हम अपने व्यापार और परिवार की देखभाल करते हैं उसी प्रकार इन पौधों की देखभाल करें। आईये आज संकल्प ले कि एक पौधा लगाएंगे एक वृक्ष बचाएंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हरा भरा सोनभद्र बनाएंगे। वृक्षारोपण कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रीतपाल सिंह,शरद जायसवाल, राजेश जायसवाल, नागेंद्र मोदनवाल, दीप सिंह पटेल, अभिषेक केसरी, पंकज कनोडिया, अभिषेक साहू, अमित अग्रवाल, जसकीरत सिंह, सूर्या जायसवाल ,विनय जायसवाल आदि लोग उपस्थित रहे।

विद्युत डीएवी में बदहाली से गहराया आक्रोश जलभराव, गंदे शौचालय और झाड़ियों से संक्रामक बीमारियों का खतरा

अनपरा/सोनभद्र। जनपद सोनभद्र के अनपरा स्थित प्रतिष्ठित अनपरा विद्युत डीएवी विद्यालय प्रबंधन की घोर लापरवाही और उदासीनता के कारण आज सैकड़ों विद्यार्थियों का स्वास्थ्य और भविष्य गंभीर संकट में पड़ गया है। हल्की सी बारिश होते ही पूरे विद्यालय परिसर में जलभराव की विकराल स्थिति उत्पन्न हो जा रही है, जिससे परिसर किसी टापू जैसा प्रतीत होने लगता है। पानी की समुचित निकासी न होने और सर्वत्र फैली अव्यवस्था के कारण न केवल छोटे-छोटे विद्यार्थियों को बल्कि उनके अभिभावकों को भी रोजाना भारी दुश्वारियों का सामना करना पड़ रहा है। विद्यालय परिसर के चारों तरफ काफी समय से बड़ी-बड़ी झाड़ियां उगी हुई हैं और कचरे का अंबार लगा हुआ है। बारिश के मौसम में जमा हुए गंदे पानी और झाड़ियों के कारण परिसर में डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया फैलाने वाले मच्छरों के साथ-साथ विषैले कीट-पतंगों का प्रकोप अत्यधिक बढ़ गया है। अभिभावकों का आरोप है कि इस विकट परिस्थिति में भी विद्यालय प्रशासन द्वारा न तो झाड़ियों की कटाई कराई जा रही है और न ही कीटनाशक दवाओं या फॉगिंग का छिड़काव हो रहा है, जिससे संक्रामक बीमारियों के फैलने की पूरी आशंका बनी हुई है। परिसर की बदहाली का आलम यह है कि इमारतों में सीपेज (रिसन) होने की वजह से बारिश का पानी कक्षाओं और गलियारों के अंदर तक पहुँच जाता है। छात्र-छात्राओं को पानी से भरे रास्तों से होकर गुजरना पड़ता है, जिससे फिसलकर चोटिल होने का डर बना रहता है। छोटे बच्चों के जूते व कपड़े भीग जाने से उन्हें दिनभर उसी स्थिति में पढ़ाई करनी पड़ती है। इसके साथ ही, विद्यालय में शौचालयों की स्थिति बेहद नारकीय और दयनीय हो चुकी है। शौचालयों के सेप्टिक टैंक और चेंबर पूरी तरह से लबालब भरे पड़े हैं और इनकी नियमित सफाई का कोई प्रबंध नहीं है। बुनियादी स्वच्छता का अभाव बच्चों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है।विद्यार्थियों की सुरक्षा को लेकर भी स्थितियां बेहद चिंताजनक हैं। इतने विशाल विद्यालय परिसर में बच्चों की निगरानी के लिए सीसीटीवी (ण्ण्ऊ=) कैमरों की कोई व्यवस्था नहीं की गई है, जिससे किसी भी अप्रिय घटना की आशंका बनी रहती है। वहीं, जब इन ज्वलंत समस्याओं को लेकर अभिभावक विद्यालय की प्रधानाचार्य दीपा पाण्डेय से मिलने पहुँचे, तो आरोप है कि उन्होंने समस्याओं के समाधान पर वार्ता करने से साफ इंकार कर दिया। बातचीत के दौरान अड़ियल व नकारात्मक रवैया अपनाते हुए प्रधानाचार्य ने विरोध करने वाले अभिभावकों के बच्चों को विद्यालय से बाहर निकालने (ऊण काटने) की सीधी धमकी दे डाली। प्रधानाचार्य के इस कथित अमर्यादित व्यवहार से अभिभावकों में गहरा आक्रोश व्याप्त है।अभिभावकों ने विद्यालय प्रबंधन व शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों से मांग की है किपरिसर में तत्काल जल निकासी की स्थायी व्यवस्था बनाई जाए। शौचालयों व सेप्टिक टैंक की अविलंब सफाई कराई जाए।

स्पोर्ट्स

मानसून में भीगे जूते न इस्तेमाल करें, पैरों में हो सकता है फंगल इन्फेक्शन, जूतों को साफ, सूखा रखने के टिप्स

जयपुर। बारिश के मौसम में अक्सर जूते गीले हो जाते हैं।

ऐसे में उनमें से स्मेल आने लगती है। धूप की कमी और हवा में ज्यादा नमी की वजह से जूते जल्दी सूख नहीं पाते। इससे उनके अंदर बैक्टीरिया और

फंगस पनपने लगते हैं। नतीजतन, जूतों में स्मेल के साथ पैरों में खुजली, रैशेज और फंगल इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ जाता है। लगातार गीले या नम जूते पहनने से यह समस्या और गंभीर हो सकती है। ऐसे में मानसून में जूतों की रेगुलर सफाई, उन्हें पूरी तरह सुखाना और सही तरीके से स्टोर करना जरूरी है। इसलिए 'जरूरत की खबर' में बात करेंगे कि बारिश में जूतों को लेकर क्या सावधानियां बरतनी चाहिए। साथ ही जानेंगे कि-किस तरह के जूतों से इन्फेक्शन का रिस्क है? जूतों से स्मेल दूर करने के लिए तुरंत क्या करें? विषय को

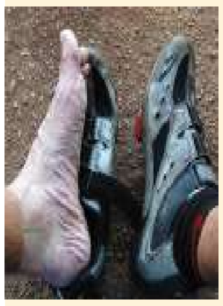

समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. डिंपल कोठारी, कंसल्टेंट, डर्मेटोलॉजी, नारायणा हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मानसून में जूतों से स्मेल क्यों आती है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- बारिश में जूते बार-बार गीले होते हैं और धूप कम मिलने के कारण ठीक से सूख नहीं पाते। इससे उनके अंदर लगातार नमी बनी रहती है। यह नम और बंद वातावरण माइक्रोऑर्गेनिज्म (सूक्ष्मजीव) के लिए अनुकूल माहौल होता है। ये बैक्टीरिया पसीने और स्किन की डेड सेल्स के साथ रिएक्शन करके स्मेल पैदा करते हैं। सवाल- नमी जूतों को कैसे प्रभावित करती है? जवाब- नमी की वजह से जूते का इनसोल और कपड़ा खराब होने लगता है। लंबे समय तक गीले रहने पर जूते की सिलाई और गोंद भी कमजोर पड़ सकती है। इससे जूते की लाइफ कम हो जाती है। लगातार नमी से पैरों की स्किन नरम होकर फूलने लगती है। इसे मैसरेशन कहते हैं। इससे स्किन बैरियर कमजोर होता है और पैर में दरारें बन सकती हैं। इन दरारों से फंगस और बैक्टीरिया स्किन में प्रवेश कर सकते हैं। सवाल- किस तरह के जूतों में फंगस का रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- जिन जूतों में एयर-फ्लो कम होता है, उनमें फंगस का रिस्क ज्यादा रहता है, जैसेकि कैनवास, लेदर और टाइट फिटेड शूज। स्पोर्ट्स वाले जूते, लेदर के जूते, टाइट फिट जूते, कैनवास के जूते, सिंथेटिक मटेरियल वाले जूते। गीले जूते पहनने से कौन-सा इन्फेक्शन हो सकता है? इससे दाद, खुजली और लाल चकत्ते जैसी समस्याएं हो सकती हैं। अगर स्किन पर पहले से कट या घाव हो तो बैक्टीरियल इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ सकता है। एथलीट्स फुट, फंगल नेल इंफेक्शन, बैक्टीरियल इंफेक्शन, कॉर्न और फंगल रैश, डर्मेटाइटिस। किन लोगों को मानसून में जूतों से इन्फेक्शन का ज्यादा रिस्क होता है? जवाब- मानसून में गीले जूते और मोजे पहनने से किसी को भी इन्फेक्शन हो सकता है।

हालांकि, कुछ लोगों में इसका रिस्क ज्यादा होता है। जिन्हें डायबिटीज है। जिनकी इम्यूनिटी कमजोर है। जो टाइट- सिंथेटिक जूते पहनते हैं। जिनके जूते गीले होते रहते हैं। जिन्हें पैर में ज्यादा पसीना आता है। जिनकी फुट हाइजीन खराब है। सवाल- जूते गीले हो जाएं तो उन्हें सही तरीके से कैसे सुखाएं? जवाब- पॉइंटर्स में देखिए- इनसोल और लेस निकालें- इन्हें अलग-अलग सुखाने से जूते जल्दी सूखते हैं। जूते में अखबार या टिश्यू भरें- यह अंदर की नमी तेजी से सोख लेते हैं। हवादार जगह पर रखें- जहां अच्छी हवा आती हो, वहां

जूते जल्दी सूखते हैं। पंखे या कूलर की हवा दें- लगातार हवा मिलने से नमी जल्दी निकल जाती है। जूते उल्टे करके रखें- इससे अंदर की नमी आसानी से बाहर निकलती है। अखबार बार-बार बदलें- अगर जूते ज्यादा गीले हैं, तो हर कुछ घंटों में अखबार बदल दें। तेज धूप से बचाएं- लेदर या सिंथेटिक जूतों को तेज धूप में रखने से उनका मैटेरियल खराब हो सकता है। ड्रायर या हीटर से दूर रखें- ज्यादा गर्मी से जूतों का शेप बिगड़ सकता है और गोंद भी कमजोर पड़ सकता है। सवाल- जूतों की स्मेल कैसे दूर करें? जवाब- इसके लिए कुछ आसान तरीके अपनाए जा सकते हैं, जैसेकि-जूतों के अंदर थोड़ा बेकिंग सोडा डालकर 4-5 घंटे (या रात भर) छोड़ दें। यह स्मेल को अब्जॉर्ब करता है। पानी और व्हाइट विनेगर बराबर मात्रा में मिलाकर हल्का स्प्रे करें। इससे

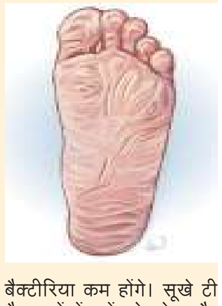

बैक्टीरिया कम होंगे। सूखे टी बैग जूतों में रखें। ये स्मेल और नमी दोनों सोखते हैं। जूतों के अंदर एंटीफंगल पाउडर डालें। इससे स्मेल पैदा करने वाले माइक्रोब्स कम होते हैं। थोड़ी देर के लिए खुली हवा में रखें। इससे स्मेल कम हो जाती है। इंस्टेंट फ्रेशनेस के लिए फुट डियो/शू स्प्रे इस्तेमाल करें। साफ और सूखे मोजे पहनें। इससे स्मेल का रिस्क कम होता है। सवाल- मानसून में पैरों का हाइजीन (फुट केयर) कैसे मेंटेन करें? जवाब- इसे पॉइंटर्स में देखिए- रेगुलर पैरों को धोकर अच्छी तरह सुखाएं। गीले जूते-मोजे तुरंत बदलें। एंटीफंगल पाउडर या क्रीम इस्तेमाल करें। ब्रीदेबल जूते या फुटवियर पहनें। कॉटन या क्विक-ड्राई मोजे पहनें। गुनगुने पानी में नमक या नीम डालें। पैरों को इसमें 10-15 मिनट तक डुबोकर रखें। नाखून छोटे और साफ रखें। किसी के साथ जूते शेयर न

करें। इससे फंगल इन्फेक्शन फैल सकता है। मानसून और जूतों से जुड़े कुछ कॉमन सवाल-जवाब-सवाल- क्या वॉशिंग मशीन में जूते धोना सही है? जवाब- यह जूतों के मैटेरियल पर निर्भर करता है। कैनवास और कुछ स्पोर्ट्स शूज जेंटल मोड में धोए जा सकते हैं। वहीं लेदर और सिंथेटिक जूते मशीन में धोना सही नहीं है। इससे मैटेरियल खराब हो सकता है। सवाल- लेदर, स्पोर्ट्स और कैनवास जूतों की सफाई का सही तरीका क्या है? जवाब- मैटेरियल के हिसाब से तरीका बदलता है। पॉइंटर्स में देखिए- लेदर जूते-गीले कपड़े से हल्की सफाई करें। ज्यादा पानी यूज न करें। बाद में कंडीशनर/पॉलिश लगाएं। स्पोर्ट्स शूज-ब्रश से मिट्टी हटाएं। हल्के साबुन और पानी से साफ करें। इनसोल अलग धोकर सुखाएं।कैनवास शूज- साबुन-पानी से धोएं। जिद्दी दाग पर सॉफ्ट ब्रश इस्तेमाल करें। धूप में ज्यादा देर न रखें। रंग फीका पड़ सकता है। सवाल- मानसून में किस तरह के जूते पहनना सबसे बेहतर है? जवाब- ऐसे जूते चुनें, जो जल्दी सूखें और नमी न रोकें, जैसेकि- रबर या पीवीसी फुटवियर। ब्रीदेबल स्पोर्ट्स शूज। वॉटर-रेसिस्टेंट जूते।

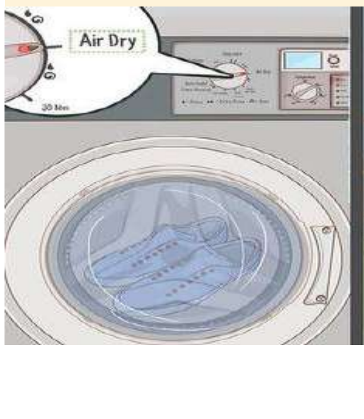

सिराज ने लगातार तीन छक्के मारकर भारत को जिताया,वॉर्मअप मैच में श्रीलंका को 6 विकेट से हराया-चोट से रिकवर हुए गिल के 44 रन

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत ने टेस्ट सीरीज से पहले वॉर्मअप मैच में

श्रीलंका-11 को 6 विकेट से हरा दिया। मोहम्मद सिराज ने आखिरी ओवर की लगातार तीन छक्के लगाकर टीम इंडिया को जीत दिलाई। कोलंबो में मैच के आखिरी दिन रविवार का खेल समाप्त होने से पहले भारत को जीत के लिए 16 रन चाहिए थे। ऐसे में सिराज ने केशरा नुवंथा के ओवर की शुरुआती तीन बॉल पर लगातार तीन छक्के लगाए। हालांकि, भारत की जीत के बाद भी खेल जारी रहा। उंगली की चोट से लौट रहे कप्तान शुभमन गिल ने 44 रन की पारी खेली। उन्होंने यशस्वी जायसवाल के साथ 105 रन की साझेदारी की। भारत को 207 रन का टारगेट मिला था। उसने दिन का खेल शुरु होने से पहले ही पहली पारी

357/6 के स्कोर पर घोषित की। फिर श्रीलंका क्रिकेट 11 ने अपनी दूसरी पारी 200/6 के स्कोर पर घोषित की। श्रीलंका-11 ने पहली पारी में 363/8 का स्कोर बनाया था।भारत मैच जीतने के बाद भी क्यों खेला? भारत के मैच जीतने के बाद भी खेल जारी रहा। अंपायर्स ने केशरा नुवंथा का ओवर पूरा कराया। सिराज ने ओवर की बची तीनों गेंद खेलीं। दरअसल प्रैक्टिस मैच का रिजल्ट सीरीज या टूर्नामेंट की जीत-हार में नहीं जुड़ता। मैच

का मकसद खिलाड़ियों को मैदान, पिच के लिहाज से तैयार कराना है। इसमें टीम अपनी प्लेइंग-11 में स्क्वाड में शामिल सभी 15 खिलाड़ियों को खिला सकती है। अगर टीम चाहे तो मैच जीतने के बाद भी वह पूरे तय ओवर तक बैटिंग खेल सकती है। नेट सेशन के दौरान गिल को चोट लगी थी-वॉर्मअप मैच शुरू होने से एक दिन पहले गुरुवार को ट्रेनिंग के दौरान गिल की उंगली में चोट लगी थी। इसके बाद वे मैच के पहले दो दिन मैदान पर नहीं उतरे थे। उनकी गैरमौजूदगी में केएल राहुल ने कप्तानी की। बीसीसीआई ने अपने बयान में कहा था- 'एहतियात के तौर पर गिल श्रीलंका क्रिकेट 11 के खिलाफ अभ्यास मैच के पहले दिन मैदान पर नहीं उतरेंगे।' जडेजा और बरार ने 2-2 विकेट लिए-श्रीलंका-11 ने दूसरी पारी में 45 ओवर में 6 विकेट पर 200 रन बनाकर पारी घोषित कर दी। निशान फर्नांडो ने 63 रन बनाए, जबकि निपुन धनंजया ने 46 और अंजला बंडारा ने 35 रन का योगदान दिया। रमेश मेंडिस 16 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत की ओर से रवींद्र जडेजा और गुरनूर बरार ने 2-2 विकेट लिए, जबकि मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा को एक-एक विकेट मिला। पडिक्कल ने नाबाद 142 रन बनाए-भारत ने पहली पारी में 90 ओवर में 6 विकेट पर 357 रन बनाकर पारी घोषित की।

देवदत्त पडिक्कल ने 142 रन की नाबाद पारी खेली। रवींद्र जडेजा ने 63, केएल राहुल ने 40, मानव सुथार ने 41 और गुनूर बरार ने नाबाद 36 रन बनाए। श्रीलंका-11 की ओर से रमेश मेंडिस और असंका मनोज ने 2-2 विकेट लिए, जबकि विश्वा फर्नांडो और केशारा नुवान्था को एक-एक सफलता मिली। बुमराह और सुंदर पहले ही बाहर-अगले सप्ताह गॉल में वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप अभियान फिर शुरू होने से पहले भारत को कई चोटों का सामना करना पड़ा है। जसप्रीत बुमराह और वॉशिंगटन सुंदर चोटों के कारण बाहर हो चुके हैं।

पीएम मोदी से मिलने पहुंचे कॉमनवेल्थ गेम्स के मेडलिस्टःभारत ने 39 मेडल जीते थे, मेडल टैली में चौथे स्थान पर रहा

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी थोड़ी ही देर में कॉमनवेल्थ

गेम्स में मेडल जीतने वाले भारतीय खिलाड़ियों से मिलेंगे। प्लेयर्स की बस प्रधानमंत्री आवास पहुंच चुकी है। मुक्केबाज लवलीना बोरगोहन और वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने कहा- हम प्रधानमंत्री से मिलने के लिए एक्साइटेड हैं। भारत ने कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में 13 गोल्ड, 17 सिल्वर और 9 ब्रॉन्ज समेत कुल 39 मेडल जीते। भारत मेडल टैली में चौथे नंबर पर रहा। मुक्केबाज भारत का सबसे बड़ा मेडल बैंक-भारत के 39 पदकों में सबसे बड़ा योगदान बॉक्सिंग का रहा। मुक्केबाजों ने 7 गोल्ड और 3 सिल्वर समेत कुल 10 मेडल जीते।

यानी हर चार में से एक मेडल बॉक्सिंग से आया। एथलेटिक्स में 10 मेडल आए, लेकिन इसमें गोल्ड नहीं मिला। वेटलिफ्टिंग से 8, पैरा एथलेटिक्स से 6, जूडो से 4 और पैरा पावरलिफ्टिंग से 1 मेडल मिला।

कुल मिलाकर 39 में से 37 पदक सिर्फ पांच खेलों से आए। 4 जुलाई 2024-टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय टीम से मिले। भारत ने साउथ अफ्रीका ब्रिजटाउन में 7 रन से हराया था।

16 अगस्त 2024-पेरिस ओलिंपिक खेलकर लौटे भारतीय खिलाड़ियों से मिले।

भारत ने 6 मेडल जीते थे। एक सिल्वर, 5 ब्रॉन्ज रहे। 12 सितंबर 2024-पैरा ओलिंपिक खेलकर लौटे भारतीय खिलाड़ियों से मिले।

इंडियन प्लेयर्स ने भारत ने 7 गोल्ड, 9 सिल्वर और 13 ब्रॉन्ज सहित 29 मेडल जीते थे।

अश्मिता चालीहा ने कोरिया मास्टर्स जीता,बैडमिंटन फाइनल में चीन की खिलाड़ी को हराया, एक हफ्ते में भारत का दूसरा बीडब्लूएफ खिताब

स्पोर्ट डेस्क। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अश्मिता

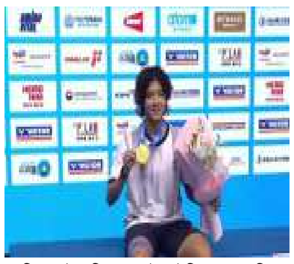

चालिहा ने रविवार को कोरिया मास्टर्स सुपर 300 महिला

सिंगल्स का खिताब जीता। उन्होंने 53 मिनट चले फाइनल मुकाबले में चीन की चौथी सीड हान कियान शी को हराया। उन्होंने 14-21, 21-14, 21-14

से जीत दर्ज कर अपना पहला बीडब्लूएफ वर्ल्ड टूर खिताब जीता। भारत ने लगातार दूसरा BWF वर्ल्ड टूर फाइनल का खिताब अपने नाम किया। इससे

पहले तन्वी शर्मा ने पिछले रविवार यानी 2 अगस्त को ताइपे ओपन जीता था। पहले गेम में हान ने बनाई बढ़त-अश्मिता ने मैच की शुरुआत में 3-0 की बढ़त बनाई। वह शुरुआती दौर में 9-5 से आगे थीं। इसके बाद हान ने वापसी की और दोनों खिलाड़ी 11-11 की बराबरी पर पहुंच गईं। चीनी खिलाड़ी ने लगातार अंक जुटाकर खेल पर कंट्रोल बनाया। हान ने पहला गेम जीतकर बढ़त हासिल की। दूसरे गेम में अश्मिता की वापसी-अश्मिता ने दूसरे गेम में आक्रामक खेल दिखाया। उन्होंने स्मैश से हान पर दबाव बनाया और तेज डिफेंसिव रिटर्न से 6-6 के बाद बढ़त बना ली। ब्रेक के समय अश्मिता 11-8 से आगे थीं। इसके बाद भी उन्होंने रैलियों पर नियंत्रण बनाए रखा। हान अंतर कम नहीं कर सकीं और अश्मिता 17-10 से आगे हो गईं। भारतीय खिलाड़ी ने एक और तेज अटैकिंग शॉट के साथ गेम 21-14 से जीतकर मुकाबला बराबर कर दिया। तीसरे गेम में 11-9 से पिछड़ने के बाद अश्मिता की वापसी-अंतिम गेम की शुरुआत में दोनों खिलाड़ियों के बीच कड़ा मुकाबला रहा। अश्मिता ने 5-2 की बढ़त बनाई, लेकिन मिड-गेम ब्रेक तक हान 11-9 से आगे निकल गईं। अश्मिता ने वापसी करते हुए लाइन के किनारे शॉट लगाकर 12-11 की बढ़त बनाई। इसके बाद अश्मिता गेम में लगातार आगे रहीं। उन्होंने हान के कोर्ट में खाली जगहों का फायदा उठाया और स्कोर 19-14 कर दिया। हान का रिटर्न बाहर जाने पर अश्मिता को आखिरी पॉइंट मिला। इसके साथ ही उन्होंने चैंपियनशिप अपने नाम की। 2024 में घुटने की सर्जरी हुई थी-अश्मिता को 2024 में कोरिया ओपन के दौरान दाएं घुटने में मेडियल मेनिस्कस में चोट लगी थी। इसके बाद उनकी सर्जरी हुई और लंबे समय तक रिहैबिलिटेशन किया। वह अगले साल फरवरी में वापस लौटीं और 14 टूर्नामेंट में खेलीं।

उन्होंने बीडब्लूएफ टूर पर चाइना मास्टर्स और मलेशिया मास्टर्स में लगातार क्वार्टरफाइनल खेले। इसके बाद मकाऊ ओपन में सेमीफाइनल तक पहुंचीं।वर्ल्ड नंबर-50 अश्मिता गुवाहाटी स्थित नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में पार्क ताए-सांग से ट्रेनिंग लेती हैं।

शाहनवाज खान ने लॉन्ग जंप में ब्रॉन्ज जीता,यु20 वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भारत का तीसरा पदक

स्पोर्ट डेस्क। भारतीय एथलीट शाहनवाज खान ने रविवार को अमेरिका के यूजीन में चल रही अंडर-20 वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लॉन्ग जंप में ब्रॉन्ज मेडल जीता। उन्होंने फाइनल में तीसरे राउंड में 7.84 मीटर की छलांग लगाकर पोडियम स्थान हासिल किया। 18 साल के शाहनवाज इस चैंपियनशिप में मेडल जीतने वाले तीसरे भारतीय हैं। उनसे पहले शनिवार को आशीष यादव ने जेवलिन थ्रो में और बासंत कुमार मेघवाल ने हाई जंप में सिल्वर जीता। एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने रविवार को पोस्ट कर लिखा, शाहनवाज ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। भारत के लिए पदक संख्या तीन।

फेडरेशन ने आगे लिखा, यह जुझारूपन से भरी प्रतियोगिता थी। शुरुआत में पीछे रहने के बाद शाहनवाज ने पूरी ताकत लगाई। उन्होंने तीसरे राउंड में शानदार 7.84 मीटर की छलांग लगाई और पांचवें राउंड में 7.83 मीटर के साथ इसे मजबूत किया।

इटली के इंजोली ने जीता स्वर्ण-इटली के इंजोली ने 7.97 मीटर की छलांग के साथ गोल्ड और ऑस्ट्रेलिया के मैकग्रोडर ने 7.96 मीटर के साथ सिल्वर मेडल जीता।

स्वस्थ राजनीति वही है जिसमें सकारात्मकता पर फोकस हो

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के पास भारत के

लिए एक दृष्टि जरूर हो सकती है, लेकिन वो क्या है ये स्पष्ट रूप से पता नहीं चलती। विपक्ष के नेता बनने के बाद दिए गए वक्तव्यों में उन्होंने भारत के बारे में अपनी सोच को स्पष्ट रूप से सामने नहीं रखा है। उन्होंने केवल उन बातों को दोहराया है, जो सर्वविदित हैं- बहुलतावाद, सहिष्णुता और समावेशिता। मसलन, राहुल गांधी की आर्थिक दृष्टि क्या है? 21वीं सदी के भारत के लिए उनकी भू-राजनीतिक रूपरेखा क्या है? शिक्षा-व्यवस्था में सुधार के लिए उनके ठोस विचार क्या हैं? उनकी प्रेस वार्ताएं मुख्यतः संघ की आलोचना, उद्योगपतियों को कठघरे में खड़ा करने तथा ग्रेट निकोबार जैसी बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं का विरोध करने पर केंद्रित रही हैं। लेकिन क्या राहुल ने श्रीहरिकोटा स्थित उस अंतरिक्ष केंद्र का दौरा किया है, जहां से इसरो अपने चंद्र मिशनों को लॉन्च करता है? क्या उन्होंने दर्जनों स्पेस-टेक स्टार्टअप्स से संवाद किया है? इनमें स्काईरूट एयरोस्पेस भी शामिल है, जिसने हाल ही में 350 किलो पेलोड वाले लो-अर्थ ऑर्बिट उपग्रहों के साथ विक्रम-1 रॉकेट का सफल प्रक्षेपण कर इतिहास रच दिया।वह पहले ही प्रयास में सफल रहा, जबकि स्पेसएक्स तक को पहले प्रक्षेपण में तीन बार विफलता का सामना करना पड़ा था। 18 जुलाई को स्काईरूट के पहले सफल प्रक्षेपण के साथ भारत निजी क्षेत्र में उपग्रह प्रक्षेपण क्षमता रखने वाला अमेरिका और चीन के बाद तीसरा देश बन गया। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, जैव-प्रौद्योगिकी, एआई और चिकित्सा-उपकरण जैसे क्षेत्रों में हमारे युवा जो प्रगति कर रहे हैं, उसकी अनदेखी करके राहुल गांधी मूल मुद्दे से भटक रहे हैं। इनमें से कई इनोवेशन ऐसे हैं, जिनका हमारे दैनिक जीवन में उपयोग है और जिन पर गंभीर ध्यान, विमर्श और बहस की आवश्यकता है। भारत को ऐसे सशक्त विपक्षी नेता की जरूरत है, जो देश के लिए सकारात्मक दिशा प्रस्तुत कर सके, न कि जो स्वयं को केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित रखे। हाल में हुए छात्र आंदोलनों में भी राहुल ने शिक्षा-व्यवस्था में सुधारों को लेकर कोई नया सुझाव नहीं दिया। नीट परीक्षा आयोजित करने वाली एनटीए में अरसे से लंबित सुधारों की उपेक्षा के लिए तो सरकार को ही जवाबदेह ठहराया जाएगा। छात्रों के लगातार दबाव में सरकार को नंदन नीलेकणि की अध्यक्षता में छह सदस्यीय टास्क फोर्स गठित करनी ही पड़ी। पर राहुल और अन्य विपक्षी नेताओं ने छात्रों के आंदोलन से राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास किया। उनमें से किसी ने भी शिक्षा-व्यवस्था में सुधारों पर चर्चा नहीं की, जहां विद्यार्थियों का मूल्यांकन उनके रचनात्मक चिंतन के आधार पर हो, केवल प्रश्नों के उत्तर याद रखने की क्षमता पर नहीं। बहुत कम नेताओं ने टास्क फोर्स को यह परामर्श दिया कि नीट को जेईई की तरह पूरी तरह डिजिटल बनाया जाए, क्योंकि जेईई में कभी पेपर-लीक की समस्या सामने नहीं आई है। राहुल गांधी का सौभाग्य है कि उनके सामने ऐसी सरकार है, जो सड़क पर होने वाले आंदोलनों के दबाव में पीछे हट जाती है। 2020 में शाहीन बाग आंदोलन के दौरान कई महीनों तक सड़कें अवरुद्ध रही थीं। इसके बाद किसानों के आंदोलन में भी सरकार ने पीछे हटने और आंदोलनकारियों को संतुष्ट करने का रास्ता अपनाया। आंदोलनकारियों को संतुष्ट करने की सरकार की नीति ने उसकी सबसे बड़ी कमजोरी को उजागर कर दिया है। विपक्ष ने भी इस कथित कमजोरी का लाभ उठाने में कोई देर नहीं की। लेकिन इसका नतीजा यह निकला कि संसद में बहस का स्तर भी गिरा है।इसी कारण प्रियंका गांधी ने भी अपने भाई के नक्शेकदम पर चलते हुए टास्क फोर्स के सदस्य- प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और आईआईटी मद्रास के निदेशक वी. कामकोटि पर गोमूत्र के औषधीय गुणों में उनके विश्वास को लेकर हमला बोला।

इसमें वास्तविक मुद्दा पीछे छूट गया- यह कि टास्क फोर्स नीट परीक्षा को पूरी तरह नकल और पेपर-लीक से सुरक्षित बनाने पर कैसे ध्यान केंद्रित करेगी?

विपक्ष शासित राज्यों के साथ-साथ कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकारों के दौरान भी नीट पेपर-लीक की घटनाएं हुई थीं, लेकिन छात्र आंदोलन को सुधार के बजाय राजनीतिक मुद्दा बना दिया गया है।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, जैव-प्रौद्योगिकी, एआई और चिकित्सा-उपकरण जैसे क्षेत्रों में हमारे युवा जो प्रगति कर रहे हैं, हम मूल मुद्दे से भटक रहे हैं। इनमें से कई इनोवेशन ऐसे हैं, जो हमारे दैनिक जीवन में उपयोगी हैं। (ये लेखक के अपने विचार हैं, मिन्हाज मर्चेंट)

वही लीडर एक्शन लेते हैं, जो बदलाव को पहले पहचानते हैं

दुनिया में बिजनेस का परिदृश्य पहले कभी इतना गुंथा हुआ और जटिल नहीं था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कारोबार करने वाली कंपनियां आज नए प्रकार के खतरों का सामना कर रही हैं। उन्हें एक समय में एक नहीं, बल्कि कई ऐसे जोखिमों से जूझना पड़ रहा है, जो एक-दूसरे को और अधिक बढ़ाते हैं। यह दूर की आशंका नहीं- यह अभी, इसी समय, वास्तविक रूप से उन उद्योगों में घटित हो रहा है, जो कभी स्वयं को वैश्विक राजनीति के प्रभाव से सुरक्षित मानते थे। ब्रांड जोखिम भी तो सामने ही मौजूद है। स्टारबक्स और मैकडॉनल्ड्स जैसी कंपनियां हाल के वर्षों में बॉयकॉट का सामना कर चुकी हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि भू-राजनीतिक तनाव किस तेजी से दशकों में अर्जित ब्रांड वैल्यू को नुकसान पहुंचा सकता है। इसके साथ वित्तीय जोखिम भी जुड़ा है। अपेक्षाकृत शांत परिस्थितियों में लिया गया अल्पकालिक कर्ज भी बाजार में अस्थिरता आते ही गंभीर संकट का कारण बन सकता है। और भू-राजनीतिक जोखिम तो पहले से कहीं अधिक तीव्र हो गए हैं। आज कंपनियों के राजनीतिक विवादों, प्रतिबंधों या संघर्षों में उलझने की संभावना कहीं अधिक है, जबकि अमूमन इसमें उनकी कोई गलती नहीं होती। कोई कंपनी यदि अपनी आपूर्ति शृंखला के लिए किसी एक देश या अपनी आय के लिए किसी एक मुद्रा पर अत्यधिक निर्भर है, तो हजारों किलोमीटर दूर किसी सरकारी कार्यालय में लिया गया एक निर्णय उसकी स्ट्रैटेजी को बाधित कर सकता है। मौजूदा दौर में ये जोखिम केवल एक-दूसरे से जुड़ ही नहीं रहे, बल्कि एक-दूसरे को कई गुना बढ़ा भी रहे हैं। जब कोई भू-राजनीतिक विवाद उत्पन्न होता है, तो वह किसी ब्रांड की साख को नुकसान पहुंचा सकता है। ब्रांड की साख कमजोर होने से रेवेन्यू प्रभावित होता है और रेवेन्यू में गिरावट के कारण पहले से लिया गया कर्ज चुकाना अधिक कठिन हो जाता है।

इस प्रकार एक जोखिम दूसरे को जन्म देता है और उनका संयुक्त प्रभाव अधिक गंभीर हो जाता है। यही कारण है कि जो लीडर्स इन खतरों को अलग-अलग मानकर उनका सामना करते हैं, वे हमेशा एक कदम पीछे रह जाएंगे।

जब बच्चों को हमारी जरूरत नहीं रह जाती, तब हमारा दूसरा उद्देश्य क्या होता है?

वे दिन याद कीजिए जब बच्चा बस यह कह देता था कि मुझे यह चाहिए, और आप किसी तरह थोड़ी-बहुत बचत करके, अपने पति से कुछ छिपाकर

उसकी वह इच्छा पूरी करने का रास्ता निकाल लेती थीं। वे दिन याद कीजिए जब बच्चे का शरीर कढ़ाही की तरह तप रहा होता था तो आप पूरी-पूरी रात जागकर उसके माथे पर ठंडी पट्टी बदलती रहती थीं। और वह दिन भी याद कीजिए जब आपका बच्चा अमेरिका चला गया और उसने आपसे कहा कि न्यूयॉर्क में अपार्टमेंट बुक करने के लिए उसके पास डाउन पेमेंट के पर्याप्त पैसे नहीं हैं, तब आपने किसी तरह पति को अपनी रिटायरमेंट सेविंग्स निकालने के लिए यह कहकर मना लिया था, आखिर हमारे बाद सब कुछ उसी के लिए तो है। और फिर, एक दिन कुछ बदल जाता है। अब याद कीजिए कि कैसे आप बार-बार उस मोबाइल फोन को देखती रहती हैं, जो कभी बच्चे की हर छोटी-बड़ी समस्या के लिए बजता रहता था लेकिन अब खामोश पड़ा है। यह खामोशी इसलिए नहीं है कि आपका बच्चा अब आपसे प्यार नहीं करता। लेकिन अब वह बड़ा हो गया है। वह एक वयस्क है, जिसके पास नौकरी है, दूर देश में बैठकों की लंबी श्रृंखला है; उसका अपना घर है, जीवनसाथी है और उसके अपने बच्चे हैं। चूंकि कई माएं अपने बच्चों की जिंदगी में आए इन पड़ावों को स्वीकार करना भूल जाती हैं, इसलिए उन्हें खामोश पड़ा फोन एक ऐसी जगह की तरह दिखाई देने लगता है, जहां से एक अदृश्य खालीपन शुरू होता है। जो मां दशकों तक पूछती रही थी कि खाना खाया? या क्या-क्या खाया?, वह अब किसी के द्वारा उससे यही सवाल पूछने का इंतजार करती है। जो पिता कभी अपने बच्चे की छोटी-सी समस्या हल करने के लिए गाड़ी उठाकर पूरे शहर में दौड़ते रहते थे, वे अब यह कहने से पहले भी हिचकिचाते हैं कि मेरी पीठ में दर्द हो रहा है। मेरे परिचितों में ऐसे कई पैरेंट्स हैं, जो अकसर मिलते-जुलते और साथ में पार्टी करते हैं, लेकिन जब उनमें से कोई एक कहता है कि मेरे बेटे ने मुझे फोन किया और 45 मिनट तक बात की तो वे अचानक भीड़ में अकेले पड़ जाते हैं। किसी की मां या पिता होने के कई दशकों बाद वे चुपचाप खुद से पूछते हैं कि अगर आज किसी को मेरी जरूरत नहीं है, तो मैं कौन हूं? वे अतीत की यादों में चले जाते हैं, जब पैरेंट्स के रूप में उन्होंने अपनी जिंदगी का लगभग आधा हिस्सा एक ऐसे स्पष्ट उद्देश्य के साथ बिता दिया था, जिसे खोजने की उन्हें कभी जरूरत ही नहीं पड़ी थी। यह सफर आधी रात को सुनाई देने वाली एक नन्ही-सी किलकारी से शुरू हुआ था और स्कूल की यूनिफॉर्म, लंच-बॉक्स, होमवर्क, बुखार, परीक्षाओं, कॉलेज में दाखिले, पहली नौकरी, हार्टब्रेक्स, शादी और बच्चों की सैकड़ों छोटी-छोटी जरूरतों से गुजरता हुआ आगे बढ़ा था- ऐसी जरूरतें, जिन्हें शायद बच्चे खुद भी याद न रखते हों। लेकिन माता-पिता उनमें से हर एक को याद रखते हैं। उन्हें अपने बच्चे की पसंद की हर डिश याद रहती है। वे जानते हैं कि उन पर कौन-सी दवा असर करती है। वे यह भी समझते हैं कि बच्चा कब ठीक होने का दिखावा कर रहा है। वे मैं ठीक हूं और मैं सचमुच ठीक हूं के बीच का फर्क जानते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे वर्षों तक बच्चों की जरूरतों पर प्रतिक्रिया देते रहे हैं- चाहे वे कितनी ही छोटी हों या कितनी ही महंगी। ये तमाम बातें मुझे तब याद आईं, जब मैंने इस सप्ताह राशि खन्ना (2013 की फिल्म मद्रास कैफे की अभिनेत्री) के बारे में पढ़ा। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा कि वे सही भूमिकाएं चुनने की कोशिश करती हैं, क्योंकि आज दर्शक चाहते हैं कि कहानी में हर किरदार का एक उद्देश्य हो। और वे कितनी सही थीं। आज की अकेली मांएं अचानक उस उद्देश्य को खो देती हैं, जिसके इर्द-गिर्द उनकी पूरी वयस्क जिंदगी निर्मित हुई थी। और सबसे दुःखद पहलू यह है कि बच्चे आज भी अपनी मांओं की मदद करना चाहते हैं, लेकिन मांओं को ही नहीं पता कि मदद मांगें कैसे? शायद वो इसी तरह से गढ़ी गई हैं।

पैरेंट्स से उम्मीद की जानी चाहिए कि वो अपनी अलग पहचान बनाएं। कुछ ऐसा सीखें, जिसे वे 30 सालों से टालते आ रहे थे।

बच्चों का इंतजार किए बिना किसी जगह पर घूमने जाएं।

फंडा यह है कि हर पैरेंट के पास अपने जीवन का कोई दूसरा प्रयोजन भी होना चाहिए और अगर वह बच्चे के दूर जाने से पहले ही शुरू हो जाए तो इससे अच्छा कुछ नहीं हो सकता।

हमारे बच्चे हमेशा ही हमारे जीवन का उद्देश्य नहीं बने रहेंगे। उन्हें अपना जीवन भी जीना है और अपने स्वयं के उद्देश्यों को भी पूरा करना है। एन. रघुरामन

हमें समझना होगा स्पोर्ट्स अब कॅरियर विकल्प बन चुके हैं

'मैंने अपने पिता को फोन किया और कहा, अब बोलिए कि आईआईटी करनी है!'- यह कहते ही अरुंधति चौधरी जोर से हंस पड़ीं। कोटा की रहने वाली अरुंधति ने आईआईटी का अपना सपना छोड़कर मुक्केबाजी को कॅरियर के रूप में चुना था। यह कहकर वे हंस पड़ीं। वह उन पलों में से एक था, जो हमेशा याद रह जाते हैं। मैं सचमुच उनके लिए भारतीय मिठाइयों का इंतजाम करना चाहता था, लेकिन उन्हें वहां से तुरंत निकलना था। इसलिए वह वादा अभी बाकी है।

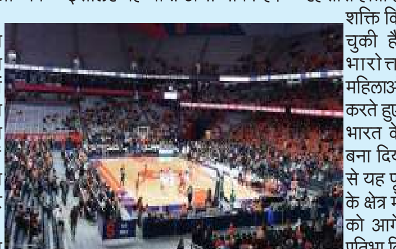

हालांकि उनके पिता इस खेल को लेकर आश्वस्त नहीं थे। उन्हें भरोसा नहीं था कि उनकी बेटी का मुक्केबाजी में भविष्य बनेगा। उनकी चिंताएं वास्तविक थीं। लेकिन अरुंधति आसानी से हार मानने वालों में से नहीं थीं। जब उनके पिता को एहसास हो गया कि पढ़ाई को प्राथमिकता देने के लिए उन्हें समझाना व्यर्थ है, तो उन्होंने अरुंधति को किसी सोलो-स्पोर्ट को अपनाने की सलाह दी।अरुंधति का कहना है कि शुरुआत में मेरी रुचि टीम-खेलों में थी। एक दिन पापा ने मुझे समझाया कि राजस्थान में टीम-खेलों में सफल होना मुश्किल है, क्योंकि जरूरी नहीं कि तमाम साथी खिलाड़ी भी उतने ही प्रेरित हों। उन्होंने कहा कि मेरे लिए किसी सोलो-खेल में जाना बेहतर रहेगा। यहीं से मेरी जिंदगी में मुक्केबाजी की एंट्री हुई। पापा ने कहा, तू वैसे भी स्कूल में मारपीट करती है। बॉक्सिंग करेगी तो प्राइज मिलेगा! जब अरुंधति ने बॉक्सिंग को चुनने का फैसला किया था, तभी से उनका लक्ष्य ओलिम्पिक पदक जीतना था। राष्ट्रमंडल खेलों का स्वर्ण पदक भी निश्चित रूप से उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन वह उनकी अंतिम मंजिल नहीं है। ग्लासगो में मुझसे बात करते हुए अरुंधति ने कहा, आपने मीरा (मीराबाई चानू) को पिज्जा खिलाया था, हमें मिठाई खिलाइए।

गंभीरता से देखें तो अरुंधति जैसी लड़कियां आने वाले समय में अनेक युवाओं के लिए प्रेरणा बन सकती हैं। कोटा जैसे शहर से- जहां पूरी दुनिया प्रतियोगी परीक्षाओं के इर्द-गिर्द घूमती है- उनका मुक्केबाजी में आगे बढ़ना एक मिसाल है। अब जबकि वे राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं और भारतीय सेना का हिस्सा भी हैं, उनकी कहानी देखकर अनेक युवा उनके रास्ते पर चलना चाहेंगे। खेलों में भी एक सफल कॅरियर बनाया जा सकता है। यदि पूरी एकाग्रता, ईमानदारी और समर्पण के साथ इस राह पर चला जाए, तो एक दिन सितारा भी बना जा सकता है। यह हम पैरेंट्स के लिए भी एक सीख है कि बच्चों को केवल आईआईटी या अन्य प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं जैसे पारंपरिक कॅरियर विकल्पों तक सीमित न रखें, बल्कि उन्हें खेलों में भी अपना भविष्य बनाने का अवसर दें। हमें अपनी सोच का दायरा बढ़ाना होगा और समझना होगा कि नए भारत में खेल एक व्यावहारिक कॅरियर विकल्प बन चुके हैं और उनसे मिलने वाले आर्थिक लाभ वर्षों तक परिवार का सहारा बनने में सक्षम हैं। खेल अब सॉफ्ट पावर से बढ़कर हैं। जब आप देखते हैं कि राष्ट्रमंडल खेलों में भारत के 13 स्वर्ण पदकों में से 8 महिलाओं ने जीते हैं, तब एहसास होता है कि भारत की नारी शक्ति किस मुकाम पर पहुंच चुकी है। मुक्केबाजी हो, भारोत्तोलन या जूडो- महिलाओं ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रमंडल खेलों को भारत के लिए बेहद सफल बना दिया। ऐसे में हमें फिर से यह पूछना होगा कि खेलों के क्षेत्र में क्या हम महिलाओं को आगे बढ़ने और अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए पर्याप्त अवसर दे रहे हैं?जब ग्लासगो में अस्मिता डे मुझसे कहती हैं कि वे अपने परिवार की एकमात्र कमाने वाली सदस्य हैं और उन्हें अपने पिता की बहुत याद आती है, जिन्होंने साइकिल मरम्मत की दुकान पर काम करके यह सुनिश्चित किया कि वह खेल जारी रख सकें, तब भारत की एक बेहद महत्वपूर्ण तस्वीर सामने आती है।यदि इन महिलाओं को अवसर दिए जाएं, तो निश्चित रूप से अरुंधति, प्रिया, प्रीति और अस्मिता जैसी अनेक प्रतिभाएं उभरकर सामने आएंगी। और जैसा कि मीराबाई चानू ने मुझसे कहा, मैं मणिपुर से हूं और वहां से यहां तक पहुंचना आसान नहीं है। मेरे लिए खेल अपने देश के लिए कुछ विशेष करने का अवसर है, इसलिए यह स्वर्ण पदक मेरे लिए इतना मायने रखता है। हमें अपनी सोच का दायरा बढ़ाना होगा और समझना होगा कि नए भारत में खेल एक कॅरियर विकल्प बन चुके हैं और उनसे मिलने वाले आर्थिक लाभ वर्षों तक परिवार का सहारा बनने में सक्षम हैं। खेल अब सॉफ्ट पावर से बढ़कर हैं। (ये लेखक के अपने विचार हैं,बोरिया मजुमदार)

जीवन से दुःख कभी गायब नहीं हुआ, फिर गीतों की परंपरा से क्यों हो गया?

मुंबई। मुझे कभी-कभी लगता है कि आज की फिल्मों में जैसे दुःख का कोई वजूद ही नहीं रह गया है। एक जमाना था जब

लगभग हर फिल्म में एक-दो ऐसे गीत जरूर होते थे जो बिछड़ने, तन्हाई, इंतजार, टूटे हुए दिल या ज़िंदगी की शिकस्त की कहानी कहते थे। आज फिल्मी गानों को सुनकर तो ऐसा लगता है जैसे हर कोई हर वक्त खुश है। मैं तो मजाक में कह देता हूं कि शायद सचमुच 'अच्छे दिन आ गए हैं!' लेकिन हकीकत यह है कि ज़िंदगी से दुःख कभी गायब नहीं हुआ। इंसान आज भी वही है। उसे आज भी मोहब्बत होती है, वह आज भी बिछड़ता है, उसे आज भी तन्हाई महसूस होती है और उसके ख्वाब आज भी टूटते हैं। तो फिर ऐसा क्या हुआ कि हमारे गीतों से दुःख क्यों गायब हो गया? मेरे खयाल में दुःख से मुंह मोड़ना किसी सेहतमंद समाज की निशानी नहीं है। यही वजह है कि पुराने दौर के दर्द भरे गीत सिर्फ मनोरंजन नहीं थे, बल्कि इंसान के दिल में दबे जज्बात को आवाज देते थे। जब कोई अपने ही दर्द को किसी गीत में सुनता है, तो उसे लगता है कि उसके दुःख को किसी ने समझा है। यही एहसास उसके दिल का बोझ हल्का कर देता है। जब मैं शैलेंद्र, साहिर लुधियानवी और शकील बदायूनी जैसे गीतकारों को याद करता हूं, तो महसूस करता हूं कि उन्होंने दर्द को सिर्फ मोहब्बत तक सीमित नहीं रखा, उनके गीतों में तन्हाई भी थी, गरीबी भी थी, टूटे हुए ख्वाब भी थे, समाज का दर्द भी था और इंसान की बेबसी भी। शायद यही वजह है कि उनके लिखे हुए गीत आज भी उतने ही ताजा लगते हैं जितने अपने दौर में थे।आम इंसान न तो फिलॉसफी की किताबें पढ़ता है, न दुनिया का इतिहास समझने के लिए मोटे-मोटे ग्रंथ। उसके लिए फिल्मी गीत ही जीवन के मूल्य और संस्कारों के सबसे सहज शिक्षक रहे हैं। शैलेंद्र का यह गीत देखिए - किसी की मुस्कराहटों पे हो निसार, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार, किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार...। आज के बहुत-से फिल्मकार पश्चिमी सिनेमा के प्रभाव में बड़े हुए हैं। वे गीतों को कहानी का हिस्सा नहीं, बल्कि कारोबारी जरूरत मानने लगे हैं। गीतों को बैकग्राउंड में धकेला जा रहा है, जबकि वे भारतीय सिनेमा की सांस्कृतिक विरासत हैं। बिना गीतों की फिल्म बनाना अलग बात है, लेकिन गीतों की पूरी परंपरा को खत्म कर देना न कला के हित में है, न संस्कृति के। लेकिन जरा हमारी सांस्कृतिक विरासत को देखिए। संस्कृत के प्राचीन नाटकों में गीत हैं। रामलीला और कृष्णलीला में गीत हैं। उर्दू और पारसी थिएटर में गीत हैं।नौटंकी जैसी लोकनाट्य परंपराओं में गीत हैं। यानी हमारी कथा-परंपरा में संगीत और कहानी हमेशा साथ-साथ चले हैं। फिर आज हम उनसे शर्मिंदा क्यों हों? आज कई फिल्मकार गीतों को एक तरह की 'नेसेसरी इविल' समझते हैं।

इसका असर भी साफ दिखाई देता है। कई बार गीत का उस दृश्य से कोई रिश्ता ही नहीं होता जो पर्दे पर चल रहा है। वह बस इसलिए मौजूद होता है कि एल्बम बिके, 'स्ट्रीमिंग' हो और कारोबार चलता रहे; लेकिन मेरे लिए गीत तभी सार्थक है, जब वह कहानी और किरदारों के साथ सांस ले। एक और बात मुझे परेशान करती है। आज संगीत की रफ्तार इतनी तेज हो गई है कि शब्दों को सांस लेने की मोहलत ही नहीं मिलती। धुन, ताल और तकनीक कई बार बोलों पर हावी हो जाते हैं, जबकि गीत की जान उसके अल्फाज में होती है। शब्द तभी असर करते हैं, जब उन्हें सुनने, समझने और महसूस करने का वक्त मिले। आज का संगीत कहीं-न-कहीं बाजार की जल्दबाजी का शिकार हो गया है। यह मान लिया गया है कि लोगों को सिर्फ तेज धुनें, डांस नंबर और जश्न के गीत चाहिए। मैं इससे इत्तेफाक नहीं रखता।

क्यूआर कोड महज जानकारी का जरिया है, हाइजीन का सबूत नहीं

स्ट्रीट फूड सिर्फ लखनऊ ही नहीं, इंदौर जैसे शहरों की भी शान है। या फिर कहें कि हर शहर के कुछ खास हिस्से उसकी शान होते हैं, जैसे मुम्बई

में घाटकोपर की 'खाऊ गली', बांद्रा का एल्को मार्केट, दिल्ली में चांदनी चौक, चावड़ी बाजार और करोल बाग, जयपुर में चौड़ा रास्ता, जौहरी बाजार और एमआई रोड। गुजरात के कई शहरों को तो भूलना ही नहीं चाहिए। हाल ही में मुझे पता चला कि अहमदाबाद की क्यूआर कोड आधारित फूड सेफ्टी और फीडबैक व्यवस्था से प्रेरित होकर लखनऊ के लोगों ने भी अपने नगर निगम और फूड सेफ्टी एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन से शहर के फूड हब्स में हाइजीन और पारदर्शिता बेहतर करने के लिए ऐसी ही व्यवस्था अपनाने की मांग की है। इससे ग्राहक दुकानों पर लगे क्यूआर कोड स्कैन करके विक्रेता का रजिस्ट्रेशन देख सकेंगे, हाइजीन नियमों का पालन जांच सकेंगे और शिकायत या फीडबैक दे सकेंगे। शुरुआत में हजरतगंज, अमीनाबाद, चौक और गोमती नगर इलाकों में पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने का विचार है। यह सोचने पर मजबूर करता है कि जब समय-समय पर निरीक्षण होते हैं तो यह क्यूआर-लिंक्ड ग्रिवेंस प्लेटफॉर्म जवाबदेही बढ़ा सकता है और शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई में अधिकारियों की मदद भी कर सकता है, लेकिन हाइजीन जैसी रोजमर्रा की समस्या में यह कैसे कारगर होगा? चूंकि स्ट्रीट वेंडर्स ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं होते तो सिर्फ एक क्यूआर कोड हाइजीन की गारंटी नहीं देता। यह इतनी-सी गारंटी देता है कि कोई व्यक्ति जानकारी ले सकता है। यह विश्वसनीयता भी इस बात पर निर्भर करती है कि जानकारी कौन कलेक्ट करता है, उसे सत्यापित करता है और यह कितनी बार अपडेट की जाती है।जब करोड़ों भारतीय हर हफ्ते स्ट्रीट फूड खाते हैं तो क्या हर आउटलेट पर क्यूआर कोड लगाना हाइजीन सुधारने के लिए पर्याप्त है? हो भी सकता है और नहीं भी। मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, लखनऊ, हैदराबाद, अहमदाबाद और बेंगलुरु जैसे किसी भी बड़े शहर में देखिए, स्ट्रीट फूड ऑफिस-वर्कर्स, स्टूडेंट्स, पर्यटकों और प्रवासी कामगारों के लिए रोज का भोजन है। चूंकि यह

असंगठित बाजार है तो अनुमानतः इसका टर्नओवर कुछ लाख करोड़ रुपए का है। यह सब्जी, मसाले, डेयरी, मीट, ईंधन, बर्तन, पैकेजिंग और लॉजिस्टिक्स सप्लाई करने वाले ऐसे लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रोजगार देता है, जो हाइजीन को लेकर बहुत कम शिक्षित होते हैं। फिर सबसे बड़ा सवाल है कि हमारे वेंडर्स की रेटिंग किसे करनी चाहिए? हम सभी सोचते हैं कि हमारे ग्राहक सबसे बेहतर रेटिंग कर सकते हैं। लेकिन हममें से अधिकतर यह आकलन नहीं कर सकते कि क्या कुकिंग ऑइल बार-बार इस्तेमाल किया गया है, क्या पानी पीने योग्य है या सामग्री दूषित तो नहीं। लेकिन एक और समस्या भी है। हममें से जो लोग मूल्यांकन में बेहतर थे, अचानक इंफ्लुएंसर्स की तरह व्यवहार करने लगते हैं और पक्षपाती हो जाते हैं।

इधर, हाइजीन और नियमों के पालन को परखने के लिए प्रशिक्षित फूड सेफ्टी इंस्पेक्टरों की संख्या हमेशा कम होती है। अनियमित निरीक्षण और इंस्पेक्टरों के विवेकाधिकार के चलते घूसखोरी की गुंजाइश भी बन सकती है।

थर्ड पार्टी क्वालिटी ऑडिट करने वाले स्वतंत्र ऑडिटर या मान्यता प्राप्त एजेंसियां महंगी होती हैं और इन्हें हजारों स्ट्रीट वेंडर्स के लिए लागू कर पाना भी कठिन है। असल मुद्दा यह गलतफहमी है कि टेक्नोलॉजी गवर्नेंस की जगह ले सकती है।

ऐसा नहीं हो सकता। क्यूआर कोड बता सकता है कि विक्रेता कौन है। लेकिन यह नहीं बता सकता कि तेल दस बार तो इस्तेमाल नहीं हो चुका, पानी दूषित तो नहीं या कच्चा मीट सुरक्षित तरीके से रखा गया था या नहीं। इसके लिए प्रशिक्षित इंस्पेक्टर, समय-समय पर लैब टेस्ट और ऐसे विक्रेता चाहिए, जो हाइजीन का महत्व समझते हों।

अधिकतर स्ट्रीट वेंडर्स जानबूझकर अन-हाइजीनिक नहीं होते।

उनमें से बहुत-से अप्रशिक्षित होते हैं। इसलिए जरूरत है कि हम उन्हें ट्रेनिंग दें, न कि सिर्फ नियमों में बांधें। फंडा यह है कि कि सबसे मजबूत समाधान किसी एक मैकेनिज्म पर निर्भर रहना नहीं, बल्कि ऐसा लेयर्ड सिस्टम तैयार करना है, जिसमें तकनीकी, निरीक्षण, विक्रेता और ग्राहक- सभी की अपनी अलग भूमिका हो।एन. रघुरामन

जेन-जी आंदोलन के बाद पार्टियां बदल रहीं रणनीति, 2027 में 7 राज्यों में चुनाव

नयी दिल्ली। अगले साल 7 राज्यों- उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर और गोवा में

विधानसभा चुनाव होने हैं। इन चुनावों में जेन-जी यानी 18 से 29 साल के मतदाता अहम भूमिका निभा सकते हैं। इसके पीछे दो बड़ी वजहें हैं। पहली, जुलाई में दिल्ली में हुआ जेन-जी आंदोलन, जिसने युवाओं के राजनीतिक रुझान को लेकर नई बहस छेड़ी। दूसरी, बिहार के बांकीपुर और मध्य प्रदेश के दतिया उपचुनाव के चौंकाने वाले नतीजे, जिनसे युवाओं की चुनावी भूमिका पर चर्चा तेज हुई है। राजनीतिक विश्लेषकों के

22फीसदी वोटर जेन-जी, 5फीसदी इधर-उधर हुए तो सरकारें बदल सकती हैं

मुताबिक, चुनावी समीकरण में महिला, पिछड़ा, किसान और दलित जैसे वर्गों के साथ अब जेन-जी भी एक अहम वोटर ग्रुप बनता जा रहा है। इन 7 चुनावी राज्यों में करीब 22फीसदी मतदाता 18 से 29 साल की उम्र के हैं। ऐसे में युवा वोटर किसी भी पार्टी के चुनावी समीकरण को बदल सकता है। 7 राज्यों के पिछले चुनाव में 257 सीटों पर 5फीसदी वोट मार्जिन रहा-चुनाव वाले 7 राज्यों में अगर पिछले विधानसभा चुनाव के आंकड़े देखें तो कुल 940 सीटों में 257 सीटें (27फीसदी) ऐसी थीं, जहां जीत का अंतर 5फीसदी या उससे कम था। उत्तर प्रदेश की 403 में से 131 सीटें ऐसी थीं, जहां जीत का मार्जिन 5फीसदी से कम था। गुजरात की 182 में से 27, पंजाब की 117 में से 24, उत्तराखंड की 70 में से 15 और हिमाचल की 68 में से 14 सीटों पर भी वोट मार्जिन 5फीसदी से कम था। इस आधार पर कह सकते हैं कि अगर 22फीसदी जेन-जी वोटर्स में से 5फीसदी भी एकजुट होकर किसी पार्टी के पाले में चले गए तो इन राज्यों में सियासी समीकरण पूरी तरह बदल सकते हैं। यही वजह है कि राजनीतिक दल अब अपनी पूरी रणनीति जेन-जी वोटर्स के इर्द-गिर्द बुनने में लग गए हैं। भाजपा, कांग्रेस और सपा ने इसकी मुहिम शुरू कर दी है। जाति-धर्म के समीकरण बिगाड़ सकते हैं युवाओं का नया वर्ग-देश की सियासत में लंबे समय से चले आ रहे जाति और धर्म आधारित चुनावी समीकरणों को युवा वोटर चुनौती दे सकते हैं। इसकी वजह युवाओं का एक नया और मुखर वर्ग बनकर उभरना है। अगले चुनावों में अभी 6-7 महीने का वक्त है। अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि तब तक यह युवा सेंटिमेंट कितना मजबूत रहता है। अगर यह बरकरार रहा और बढ़ा, तो राजनीतिक दलों को आने वाले हफ्तों में अपनी रणनीति में पांच बड़े बदलाव करने पड़ सकते हैं। राजनीतिक पार्टियां पांच बदलाव करने पर मजबूर-1. युवाओं पर फोकस्ड राजनीति शुरू होगीः भास्कर एक्सपर्ट के मुताबिक पहले घोषणापत्र में युवाओं के सिर्फ मुद्दे होते थे, पर अब रोजगार व स्किल डेवलपमेंट जैसे विषय सीधे भाषणों में होंगे। दलों को सिर्फ बेरोजगारों को भत्ता देने के बजाय यह समझाना होगा कि वे रोजगार और कौशल विकास कैसे बढ़ाएंगे। जो दल रोजगार, शिक्षा, डिजिटल इकोसिस्टम और स्किल डेवलपमेंट के मुद्दे उठाएगा, युवा उसी के साथ जाएंगे। 2. जाति-धर्म समीकरणः अगर यही माहौल रहा, तो जेन-जी के मुद्दों के कारण जातिगत और धार्मिक समीकरण काफी हद तक बिखर जाएंगे। युवा भी अब तक जाति-धर्म के आधार पर बंटे हुए थे। अब बदलाव दिख रहा है। चुनाव में जाति फैक्टर थोड़ा-बहुत तो रहेगा ही, लेकिन उम्मीदवारों के चयन और प्रतिनिधित्व में उसका असर साफ दिखेगा। पार्टियां सेल्फ-मेड युवाओं को अधिक टिकट देंगी, जिससे जेन-जी को चुनावी मैदान में बेहतर प्रतिनिधित्व मिल सके। 3. महिलाओं जैसा बदलावः जैसे महिलाओं ने जातिगत समीकरण तोड़कर एनडीए को वोट दिए, युवा भी किसी एक तरफ जा सकते हैं। 4. मुफ्त योजनाओं से दूरीः युवाओं को मुफ्त की रेवड़ी या लुभावनी योजनाएं नहीं चाहिए, बल्कि वह दलों से ठोस समाधान चाहता है। 5. व्यावहारिक वादेः राजनीतिक पार्टियां आगामी चुनावों में ऐसे व्यावहारिक वादे करेंगी, जिन्हें धरातल पर उतारा जा सके।

पाकिस्तान पर हमला हुआ तो लड़ने आएंगे सऊदी/तुर्किये, आखिर क्या है मक्का एग्रीमेंट; भारत कैसे काउंटर करेगा

इस्लामाबाद। वह परमाणु हथियार, बैलिस्टिक मिसाइल

और आर्मी की मदद भी देगा। तुर्किये के पास नाटो सदस्य देशों में अमेरिका के बाद दूसरी सबसे बड़ी सेना है। वो अपनी एडवांस मिलिट्री टेक्नोलॉजी और एक्सपीरियंस देगा। उसने सऊदी-पाकिस्तान से अपनी ड्रोन टेक्नोलॉजी साझा की है। पाकिस्तान के इ-16 फाइटर जेट अपग्रेड किए और समुद्री युद्धपोत बनाने में मदद की है। तुर्किये नाटो का मेंबर, सऊदी को अमेरिकी सुरक्षा; फिर इस डील की जरूरत क्यों पड़ी? इसकी 2 वजहें हैं-1. अमेरिका पर भरोसा नहीं रहाः- ट्रम्प की नाटो के संस्थापक सदस्य डेनमार्क के ग्रीनलैंड इलाके पर हमले की धमकी और फिर ईरान जंग के चलते तेल संकट की वजह से नाटो देशों में दो धड़े बंट गए हैं। इधर ईरान, सऊदी, यूएई, कतर, ओमान जैसे मिडिल ईस्ट के सुन्नी देशों पर हमले कर रहा है। ईरान के प्रॉक्सी हूती ने भी सऊदी पर हमले किए हैं। जबकि इन देशों में अमेरिकी सैन्य बेस हैं और अमेरिका इन्हें सुरक्षा की गारंटी देता है। इसलिए ट्रम्प और अमेरिका के कमिटमेंट पर इन देशों का भरोसा कम हुआ है। अगर नाटो टूटता है, तो तुर्किये के लिए भी बैकअप के तौर पर ये इस्लामिक नाटो काम आएगा। 2. इजराइल के मुकाबले न्यूक्लियर ताकत की जरूरत- तेल भंडार के चलते खाड़ी देश पैसे से संपन्न हैं, लेकिन अमेरिकी की गारंटी के चलते इन्होंने कभी परमाणु हथियार नहीं बनाए। मिडिल ईस्ट में इजराइल अकेला देश है, जिसके पास परमाणु हथियार हैं। ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन में स्ट्रैटजिक स्टडीज प्रोग्राम के डिप्टी डायरेक्टर विवेक मिश्र के मुताबिक, कभी इजराइल खुद को फंसा हुआ देखेगा, तो न्यूक्लियर अटैक भी कर सकता है। खाड़ी देशों को इसका अंदाजा है कि तब उन्हें अमेरिका से न्यूक्लियर सपोर्ट नहीं मिलेगा। इसीलिए वह पाकिस्तान को साथ लेकर ये बताना चाहते हैं कि उनके पास परमाणु हमले का जवाब देने की क्षमता है। पाकिस्तान भी अरब देशों को न्यूक्लियर शील्ड देने की बात कर चुका है।

पीएम मोदी ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति से फोन पर बात कीःभारत-अमेरिका साझेदारी मजबूत करने पर चर्चा; वेंस को बेटे के जन्म पर बधाई दी

नयी दिल्ली/वॉशिंगटन। इससे पहले ट्रम्प साल 2020 में पहली बार भारत यात्रा पर आए थे। वे

अहमदाबाद में 'नमस्ते ट्रम्प' कार्यक्रम में शामिल हुए थे। उषा वेंस के माता-पिता आंध्र प्रदेश से थे-जेडी वेंस की पत्नी ऊषा का जन्म और स्कूली शिक्षा सैन डिएगो में हुआ है। उनके माता-पिता 1980 के दौरान आंध्र से अमेरिका आकर बसे गए थे। अमेरिका में रहने के बावजूद उनके माता-पिता ने वहां की मॉडर्न संस्कृति से प्रभावित हुए बिना उन्हें भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म के अनुसार शिक्षा और संस्कार दिए। बाद में वेंस भी इन संस्कारों से प्रभावित हुए।ऊषा की मां एक बायोलॉजिस्ट हैं और पिता इंजीनियर। ऊषा कहती हैं कि उन्होंने अपने माता-पिता के आदर्शों को ध्यान में रखते हुए ही पढ़ाई की है। येल से बैचलर की डिग्री हासिल करने के बाद ऊषा ने गेट्स कैम्ब्रिज स्कॉलरशिप की मदद से कैम्ब्रिज से मास्टर ऑफ फिलॉसफी की डिग्री हासिल की। ऊषा ने सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस जॉन रॉबर्ट्स के लिए क्लर्क के रूप में काम किया। अमेरिकी सीनेट ने शुक्रवार रात 86-11 के बहुमत से भारत समेत 5 देशों पर 100फीसदी तक का टैरिफ लगाने वाला बिल पास कर दिया है।बिल के मुताबिक भारत, चीन, स्लोवाकिया, हंगरी और अजरबैजान पर 100फीसदी टैरिफ लगाया जा सकता है। यह बिल रिपब्लिकन और डेमोक्रेट दोनों पार्टियों के समर्थन से लाया गया। इसका मकसद रूस की तेल से होने वाली कमाई को कम करना है, ताकि उसकी युद्ध लड़ने की क्षमता कमजोर हो सके।23 जुलाई को रूस से तेल और गैस खरीदने वाले देशों पर 100फीसदी तक टैरिफ लगाने का प्रस्ताव रखा गया था। बिल के शुरुआती मसौदे में 500फीसदी टैरिफ लगाने का प्रस्ताव था, लेकिन बाद में इसे घटाकर 100फीसदी कर दिया गया। हालांकि, अभी ये कानून नहीं बना है।

अभी इसे अमेरिकी संसद के निचले सदन यानी हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में भेजा जाएगा। अगर वहां भी बिल पास हो जाता है, तो इसे राष्ट्रपति ट्रम्प के पास मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। उनकी मंजूरी मिलने के बाद ही यह कानून बनेगा।

ममता बोलीं- मेरी गाड़ी पर पत्थर फेंके गए, पुलिस के सामने लोगों ने हमला किया, खिड़की खुली होती तो सिर पर लगता

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को आरोप लगाया कि उनकी गाड़ी पर पत्थरों से हमला किया गया। पुलिस के सामने भीड़ ने गाड़ी रोक

ली। कार पर मिट्टी और कीचड़ लगा दिया। कुछ लोगों ने जूते-पत्थर भी फेंके। अगर खिड़की खुली होती तो सिर चकनाचूर हो जाता, मौत भी हो सकती थी। दरअसल ममता उत्तर 24 परगना जिले में एक टीएमसी कार्यकर्ता की मौत के बाद उसके परिवार से मिलने जा रहीं थीं। रास्ते में बिजपुर के पास स्थानीय भीड़ ने उनका काफिला रोक लिया। प्रदर्शनकारियों ने 'चोर-चोर' के नारे लगाए।ममता बनर्जी-पूर्व मुख्यमंत्री, प. बंगालः- पुलिस के सामने ही असामाजिक तत्वों ने कार पर बड़े-बड़े पत्थर फेंके। अगर खिड़कियां खुली होतीं, तो मेरा सिर फट जाता। हम सब मारे जा सकते थे। यह सब पुलिस के सामने हुआ। यह क्या हो रहा है। पुलिस बीजेपी को सुरक्षा दे रही है। ममता बोलीं- पूरा पश्चिम बंगाल गुंडों के कंट्रोल में है-ममता बनर्जी ने कहा, मेरी कार पर हमला एक साजिश के अलावा कुछ नहीं है। मैंने पुलिस को बताया था कि मैं यहां आऊंगी, इसके बावजूद पुलिस ने कोई सुरक्षा इंतजाम नहीं किए। पूरे पश्चिम बंगाल को गुंडे नियंत्रित कर रहे हैं। दरअसल ममता तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) कार्यकर्ता बिरजू केओट की मौत के बाद उनके परिवार से मिलने आईं थीं। बिरजू की मौत हालीशहर पुलिस की हिरासत में तबीयत बिगड़ने के बाद हुई थी। 8 जुलाईः ममता ने घर के बाहर 3 लोगों को थप्पड़ मारा-पश्चिम बंगाल के कोलकाता में 8 जुलाई को टीएमसी की रैली में हंगामा हो गया था। इस दौरान ममता बनर्जी नाराज हो गईं। वे अपनी ही पार्टी के तीन कार्यकर्ताओं को थप्पड़ मारते नजर आईं थीं। दरअसल, रैली बारुईपुर में 11 साल की बच्ची के साथ रेप-मर्डर के विरोध में निकाली जा रही थी। इस दौरान चोर-चोर के नारे लगने लगे और कुछ लोगों ने रैली में शामिल लोगों पर अंडे फेंकने शुरू कर दिए। टीएमसी ने आरोप लगाया कि हंगामा भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया। इस दौरान मारपीट भी की। ममता ने कहा कि बंगाल में अराजकता फैल गई है। पुलिस भाजपा कार्यकर्ताओं की तरह काम कर रही है। 4 मईः ममता का आरोप स्ट्रॉन्ग रूम के अंदर मुझे मारा, धक्का दिया गया-4 मई को बंगाल विधानसभा में रिजल्ट वाले दिन ममता बनर्जी ने काउंटिंग सेंटर से बाहर निकलने पर गंभीर आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा कि काउंटिंग सेंटर के अदंर उनपर हमला किया गया।उन्हें मारा गया और धक्का दिया गया।

आम ग्राहकों के लिए यूपीआई मुफ्त ही रहेगा, विवाद पर वित्त मंत्री की सफाई, रु2,000 से ज्यादा के ट्रांजेक्शन पर मर्चेंट चार्ज संभव

नयी दिल्ली। इसके तहत भविष्य में कुछ खास यूपीआई

लेन-देन पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) लगाने का कानूनी ढांचा तैयार किया जा रहा है। इसी के बाद विपक्ष ने सवाल उठाए कि इससे आम जनता पर बोझ पड़ेगा। सवालः कांग्रेस और विपक्ष का इस नए संशोधन बिल पर क्या आरोप है? जवाबः कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि यह संशोधन उस कानूनी सुरक्षा को हटाता है जिसने अब तक यूपीआई ट्रांजेक्शन को पूरी तरह मुफ्त रखा है। उनका आरोप है कि इससे भविष्य में यूपीआई पर एमडीआर लगाने का रास्ता साफ होगा और इसका अंतिम बोझ आम जनता पर ही पड़ेगा। सवालः विपक्ष के आरोपों पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने क्या सफाई दी? जवाबः वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने विपक्ष के दावों को खारिज करते हुए एक्स पर कहा कि एमडीआर केवल मर्चेंट्स (दुकानदारों/व्यापारियों) पर लागू होता है, न कि अंतिम उपभोक्ता या ग्राहकों पर। इससे मिलने वाले राजस्व का इस्तेमाल बैंक और फिनटेक कंपनियां अपने इंफ्रास्ट्रक्चर, इनोवेशन और सिक्योरिटी को मजबूत करने में करेंगी, जिसका फायदा अंततः सभी यूपीआई यूजर्स को ही मिलेगा। सवालः क्या अभी से यूपीआई ट्रांजेक्शन पर एमडीआर लागू कर दिया गया है? जवाबः नहीं, अभी कोई अंतिम फैसला नहीं लिया गया है। वित्त मंत्री ने स्पष्ट किया कि संसद से बिल पास होने के बाद नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की 'यूपीआई एंड सर्विसेज स्टीयरिंग कमेटी' इस पर अंतिम फैसला लेगी। अभी यह केवल एक प्रस्ताव के स्तर पर है। सवालः यह एमडीआर आखिर होता क्या है और यह कौन देता है? जवाबः एमडीआर यानी मर्चेंट डिस्काउंट रेट वह फीस होती है जो कोई व्यापारी या दुकानदार डिजिटल पेमेंट प्रोसेस करने के बदले बैंक और पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर को देता है। यह शुल्क ग्राहक की जेब से नहीं कटता, बल्कि दुकानदारों के डिजिटल पेमेंट स्वीकार करने के बदले चुकाया जाता है। वर्तमान नियमों के तहत यूपीआई और रूपे डेबिट कार्ड पर एमडीआर 0फीसदी है। सवालः आरबीआई गवर्नर का इस पूरे मुद्दे पर क्या रुख है? जवाबः आरबीआई के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने मॉनेटरी पॉलिसी के बाद कहा कि इस पर अभी से किसी नतीजे पर पहुंचना बहुत जल्दबाजी होगी। सरकार कानून में संशोधन कर रही है और चर्चा जारी है। डिजिटल पेमेंट सिस्टम को चलाने का खर्च किसी न किसी को तो उठाना ही होगा। उन्होंने कहा कि आरबीआई की प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि डिजिटल पेमेंट सुरक्षित, टिकाऊ और सभी के लिए किफायती बना रहे। सवालः प्रस्तावित योजना के तहत किन दुकानों और ट्रांजेक्शन पर चार्ज लग सकता है? जवाबः विचाराधीन प्रस्ताव के अनुसार, रु2,000 से ज्यादा के यूपीआई ट्रांजेक्शन पर 0.3फीसदी से 0.5फीसदी तक का एमडीआर (एमडीआर) लगाया जा सकता है। राहत की बात यह है कि यह नियम केवल रु1.5 करोड़ से ज्यादा के सालाना टर्नओवर वाले बड़े मर्चेंट्स/दुकानदारों पर ही लागू करने का प्लान है। छोटे व्यापारी और सब्जी-किराना वाले इसके दायरे से बाहर रहेंगे। सवालः अगर एमडीआर लागू भी हो जाता है, तो दुकानदारों पर क्या असर पड़ेगा? जवाबः अगर यह प्रस्ताव पास होता है, तो केवल रु1.5 करोड़ से ज्यादा का टर्नओवर रखने वाले बड़े कारोबारियों को ही रु2,000 से ज्यादा के यूपीआई लेन-देन पर 0.3फीसदी से 0.5फीसदी तक फीस देनी होगी। छोटे दुकानदारों और आम ग्राहकों पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। सवालः यूपीआई के भविष्य और इसकी फंडिंग को लेकर असली विवाद क्या है? जवाबः भारत में तेजी से बढ़ते डिजिटल पेमेंट्स नेटवर्क का खर्च कौन उठाएगा। यह इस पूरे विवाद की मुख्य जड़ है। बैंक और फिनटेक कंपनियों का कहना है कि इंफ्रास्ट्रक्चर और साइबर सुरक्षा बनाए रखने के लिए भारी लागत आती है।

सरकार चाहती है कि आम यूजर्स पर बोझ डाले बिना बैंकों को वित्तीय रूप से मजबूत बनाया जाए, ताकि यूपीआई सर्विस बिना किसी रुकावट के चलती रहे। नॉलेज पार्टः जानें क्या है पेमेंट एंड सेटलमेंट सिस्टम एक्ट? धारा 10ए का नियमः भारत सरकार ने डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए इस कानून में धारा 10ए जोड़ी थी, जिसके तहत यूपीआई और रूपे कार्ड लेन-देन पर किसी भी प्रकार का एमडीआर लगाने पर रोक लगा दी गई थी। संशोधन की जरूरत क्योंः धारा 10ए में संशोधन के बाद सरकार और एनपीसीआई को यह अधिकार मिल जाएगा कि वे जरूरत पड़ने पर बड़े व्यावसायिक लेन-देन पर सीमित शुल्क तय कर सकें, ताकि डिजिटल पेमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर का खर्च निकाला जा सके।

सीजेआई सूर्यकांत- न्याय सिर्फ कानून बनाने से नहीं मिलेगा, जनता-न्याय व्यवस्था के बीच दूरी न हो,जस्टिस मनमोहन बोले- भरोसा जरूरी

इंदौर। भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- सिर्फ कानून बना देने से आम लोगों तक न्याय नहीं पहुंच सकता। न्याय व्यवस्था और जनता के बीच दूरी नहीं होनी

चाहिए। जरूरतमंद व्यक्ति जब कानूनी मदद के लिए पहुंचे तो पहले उसकी बात सुनी जाए, उसे सम्मान मिले। जरूरतमंद की समस्या को समझा जाए। इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में 8 और 9 अगस्त को आयोजित पश्चिम क्षेत्रीय सम्मेलन में जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- हर क्षेत्र की समस्या अलग होती है, इसलिए समाधान भी स्थानीय होना चाहिए। लोगों तक उनकी स्थानीय बोली में कानूनी अधिकार और मदद पहुंचानी होगी। जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- आम नागरिक के लिए न्याय का अनुभव केवल राहत, मुआवजा, केस में बरी होने या सजा मिलने तक सीमित नहीं है। न्याय का अनुभव उससे पहले शुरू हो जाता है। आम नागरिक को न्याय देने से पहले महसूस हो कि उसकी बात सुनी गई है। उसे सम्मान मिला है। जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- विधिक सेवा व्यवस्था का संवाद केवल बैठकों और सम्मेलनों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि राष्ट्रीय स्तर से राज्य, जिला, तालुका और पैरा-लीगल वालंटियर तक लगातार चलना चाहिए। जस्टिस सूर्यकांत भारत के मुख्य न्यायाधीश- जब तक लोगों की भाषा में संवाद नहीं होगा, उनकी समस्या को उन्हीं के शब्दों में नहीं सुना जाएगा। उनके दुख-दर्द को समझने का प्रयास नहीं होगा, तब तक समस्या को समझने और उसका उचित समाधान करने में अंतर बना रहेगा। हर क्षेत्र की समस्या अलग, समाधान भी स्थानीय होना चाहिए-जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- मध्यप्रदेश के आदिवासी परिवार, गोवा के मछुआरा समुदाय, गुजरात के प्रवासी मजदूर या मुंबई में कानूनी सहायता मांगने वाली महिला की समस्याएं एक जैसी नहीं हो सकतीं। इसलिए सभी के लिए एक जैसा समाधान भी संभव नहीं है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा- लीगल सर्विसेज इंस्टीट्यूशन को यह सोच बदलनी होगी कि जरूरतमंद व्यक्ति स्वयं उनके पास आए। इसके बजाय संस्थाओं को लोगों तक पहुंचना चाहिए। नई योजनाएं शुरू करना और आंकड़े बढ़ाना ही समावेशन नहीं है। लगातार यह सवाल पूछना होगा कि क्या कोई और गांव है जहां पहुंचना बाकी है। कोई और कमजोर समुदाय है, जिससे जुड़ना बाकी है। कोई दूसरी भाषा है, जिसमें कानूनी अधिकार समझाने की जरूरत है, या कोई ऐसी बाधा है जिसे हटाना जरूरी है। अहिल्याबाई होलकर से लिया न्याय का उदाहरण-जस्टिस सूर्यकांत ने मध्यप्रदेश की लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के न्याय के प्रति समर्पण का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उनका शासन आम लोगों से सीधे जुड़ा था। अहिल्याबाई किसानों, विधवाओं और व्यापारियों से प्रतिदिन सीधे मिलती थीं। उनके और जनता के बीच कोई भेदभाव या मध्यस्थता नहीं थी। आज की विधिक सेवा व्यवस्था के लिए भी यह संदेश है कि न्याय व्यवस्था को आम नागरिक के करीब ले जाना होगा। उसकी समस्या को सीधे समझना होगा। सीएम यादव बोले- न्याय में पुत्र और प्रजा में भेद नहीं होना चाहिए-कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा- न्याय की भारतीय परंपरा बेहद समृद्ध और गौरवशाली रही है। शासक के लिए न्याय करते समय पुत्र और प्रजा में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। लोकमाता अहिल्याबाई होलकर ने अपने शासन में इस आदर्श को व्यवहार में उतारकर दिखाया था। उन्होंने कहा कि अहिल्याबाई ने अपने इकलौते पुत्र की गलती पर उसे भी वही दंड दिया, जो सामान्य व्यक्ति को अपराध करने पर मिलता। गलती चाहे किसी से भी हो, न्याय सबके लिए समान होना चाहिए।

रूसी तेल खरीदने वाले 5 देशों समेत भारत पर 100फीसदी टैरिफ वाला बिल अमेरिकी सीनेट में पास

86 सांसदों ने पक्ष में वोट किया, 11 विरोध में

वॉशिंगटन डीसी। पहली स्थितिः भारत रूस से तेल खरीदता रहे-अमेरिका के 100फीसदी टैरिफ का सीधा असर भारत के निर्यात बिल पर पड़ सकता है। इससे भारतीय सामान अमेरिका में दोगुना महंगा हो जाएगा। अमेरिकी खरीदार सस्ता विकल्प ढूंढेंगे जैसे बांग्लादेश, वियतनाम, मैक्सिको, चीन। नतीजतन भारत के टेक्सटाइल, जेम्स-ज्वेलरी, इंजीनियरिंग गुड्स, लेदर, समुद्री उत्पाद, केमिकल्स आदि के ऑर्डर घट जाएंगे।दूसरी स्थितिः भारत रूस को छोड़कर दूसरे देशों से तेल खरीदे तो-रूस से आने वाले तेल पर प्रतिबंध या टैरिफ का दबाव बढ़ता है, तो भारत को दूसरे देशों से तेल खरीदना पड़ेगा। यह महंगा पड़ सकता है, जिससे भारत में पेट्रोल-डीजल महंगा हो सकता है। अमेरिका के प्रतिबंध पूरे असरदार नहीं-अमेरिका के प्रतिबंध और टैरिफ से कई देशों की अर्थव्यवस्था और कारोबार पर असर पड़ा, लेकिन राजनीतिक मकसद हमेशा पूरे नहीं हुए। 1. क्यूबाः 1960 से- अमेरिका ने 1960 में क्यूबा पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए। छह दशक से ज्यादा समय बीतने के बाद भी ये प्रतिबंध क्यूबा की सरकार को बदलने में सफल नहीं हुए। क्यूबा ने 2023 में संयुक्त राष्ट्र में कहा कि इन प्रतिबंधों से उसे अब तक 159 अरब डॉलर से ज्यादा का नुकसान हुआ है। 2. इराकः 1990 से-इराक पर 1990 में आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए। इनका उसकी अर्थव्यवस्था और आम लोगों की जिंदगी पर बड़ा असर पड़ा। तेल से होने वाली कमाई और जरूरी सामान के आयात पर असर पड़ा। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों में प्रतिबंधों के दौरान भूख, बीमारी और गरीबी बढ़ने की बात कही गई। 3. ईरानः 2012 से-2012 में कड़े प्रतिबंध लगाए जाने के बाद ईरान का तेल निर्यात करीब 10 लाख बैरल प्रतिदिन घट गया। उसकी अर्थव्यवस्था लगातार दो साल तक मंदी में रही। वर्ल्ड बैंक के मुताबिक, 2012-14 के दौरान

प्रतिबंधों से ईरान के निर्यात को 17.1 अरब डॉलर, यानी उसकी जीडीपी के करीब 4.5फीसदी का नुकसान हुआ। 4. चीनः 2018 से-अमेरिका ने 2018 में चीन से आने वाले करीब 250 अरब डॉलर के सामान पर अतिरिक्त शुल्क (टैरिफ) लगाया। 2019 में चीन से अमेरिका आने वाला सामान 16.2फीसदी घटकर 452.2 अरब डॉलर रह गया और दोनों देशों के बीच व्यापार घाटा 17.6फीसदी कम हुआ। लेकिन अमेरिकी व्यापार आयोग के मुताबिक, इन टैरिफ का ज्यादातर खर्च अमेरिकी कंपनियों और खरीदारों ने उठाया। 5. रूसः 2022 से-यूक्रेन युद्ध के बाद अमेरिका और दूसरे देशों ने रूस पर कई आर्थिक प्रतिबंध लगाए। इससे रूस के लिए विदेशों से पैसा जुटाना, कारोबार करना और जरूरी तकनीक हासिल करना मुश्किल हुआ। आईएमएफ ने अप्रैल 2022 में अनुमान लगाया था कि उस साल रूस की अर्थव्यवस्था 8.5फीसदी घट सकती है। लेकिन रूस ने तेल समेत अपना सामान दूसरे देशों में बेचकर नुकसान को कुछ कम कर लिया। यूरोपीय देशों को टैरिफ में राहत देगा अमेरिका-रूस से प्राकृतिक गैस खरीदने वाले चीन, फ्रांस, जापान, हंगरी और बेल्जियम को भी इसके दायरे में रखा गया है। हालांकि, जो देश रूस की कुल गैस निर्यात का 15फीसदी से कम आयात करते हैं और अपनी निर्भरता घटाने की दिशा में कदम उठा रहे हैं, उन्हें छूट मिल सकती है। सीनेट में पेश बिल के तहत 15 यूरोपीय देशों को प्रस्तावित 100फीसदी टैरिफ से छूट दी गई है। इन देशों को राहत इसलिए दी गई है, क्योंकि ये रूस से 15फीसदी से कम प्राकृतिक गैस खरीदते हैं और धीरे-धीरे उस पर अपनी निर्भरता भी कम कर रहे हैं। डेमोक्रेट सीनेटर रिचर्ड ब्लूमेंथल ने कहा कि यह बिल यूरोपीय सहयोगियों के खिलाफ नहीं है। इसका निशाना सिर्फ वे देश हैं, जो अब भी रूस के तेल कारोबार को सबसे ज्यादा आर्थिक सहारा दे रहे हैं। बिल में रूस के ऊर्जा उद्योग, वित्तीय संस्थानों, रक्षा औद्योगिक ढांचे, कारोबारियों और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन तक पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव है।

योगी ने पूछा- राहुल/अखिलेश ने यूथ के लिए क्या किया,पहले यूपी की पहचान माफिया और गुंडागर्दी से थी, अब कर्फ्यू-दंगे नहीं होते

सिद्धार्थनगर। कांग्रेस ने देश के युवा के सामने और समाजवादी पार्टी ने यूपी के युवा के सामने पहचान का संकट खड़ा कर दिया था। 2017 से पहले यूपी का युवा दूसरे राज्यों में अपनी पहचान बताने से बचता था। प्रदेश की पहचान गुंडागर्दी, माफिया और कानून-व्यवस्था की खराब स्थिति से होती थी। अब स्थिति बदल चुकी है।' यह बात सीएम योगी आदित्यनाथ ने रविवार को सिद्धार्थनगर में कही। उन्होंने जिले को 311 करोड़ रुपए की 107 विकास परियोजनाओं की सौगात दी। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस और समाजवादी पार्टी पर जमकर निशाना साधा। योगी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का नाम लेते हुए सवाल किया कि लंबे समय तक सत्ता में रहने के बावजूद दोनों दलों ने युवाओं के लिए क्या किया? पढ़िए सीएम योगी की कही 5 बड़ी बातें-1- हमने 9 लाख युवाओं को सरकारी नौकरी दी-योगी ने कहा- कांग्रेस को देश में सबसे ज्यादा समय तक शासन करने का मौका मिला। सपा 4 बार यूपी में सरकार बना चुकी है। इसके बावजूद युवाओं के लिए ऐसा क्या किया गया कि वे उनके साथ खड़े हों? कांग्रेस के शासन में भ्रष्टाचार, आतंकवाद, नक्सलवाद का माहौल बना। सपा सरकार में प्रदेश में माफिया का प्रभाव था। हर जिले में एक माफिया, हर थाने और तहसील में माफिया का कब्जा था। गरीब की जमीन पर कब्जा होता था। मेरी सरकार ने पिछले 9 साल में 9 लाख से ज्यादा युवाओं को सरकारी नौकरी दी है।

टॉक्सिक-बंदूकें खूब चलीं, लेकिन कहानी एक कदम भी नहीं, 4 मिनट 38 सेकेंड के ट्रेलर में यश का स्टारडम भी फीका

मुंबई। यश की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'टॉक्सिकः ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' का ट्रेलर आज

8 अगस्त को रिलीज हो गया। लंबे इंतजार के बाद आए ट्रेलर में यश बेहद खतरनाक गैंगस्टर अवतार में दिखाई देते हैं। फिल्म में कियारा आडवाणी, नयनतारा, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत भी अहम भूमिकाओं में हैं। फिल्म का निर्देशन गीतू मोहनदास ने किया है और यह 26 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। ट्रेलर की शुरुआत बारिश में घायल राया और एक छोटे बच्चे से होती है। बच्चा यश के किरदार से माफी मांगता है और तभी गोली चलने की आवाज आती है। इसके बाद वही बच्चा चेहरे पर जोकर जैसा मेकअप किए सलाखों के पीछे दिखाई देता है। हालांकि गोली किसने चलाई, इसका खुलासा ट्रेलर में नहीं किया गया है। इसके बाद कियारा आडवाणी की एंट्री होती है। वह सर्कस में काम करती दिखाई देती हैं और एक बच्चे

के साथ नजर आती हैं। उनका किरदार दर्द और डर से जूझता दिखता है। कियारा के कुछ सीन्स ट्रेलर के सबसे प्रभावशाली हिस्सों में हैं। इसके बाद नयनतारा, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और अक्षय ओबेरॉय की झलक दिखाई जाती है। लगभग हर किरदार के साथ कोई न कोई रहस्य जुड़ा हुआ नजर आता है। ट्रेलर की सबसे बड़ी ताकत इसका स्केल, सिनेमैटोग्राफी और एक्शन है। यश का लुक और स्क्रीन प्रेजेंस भी प्रभावशाली है। लेकिन करीब 4 मिनट 38 सेकेंड के ट्रेलर के बाद भी सबसे बड़ा सवाल यही रह जाता है- आखिर फिल्म की कहानी क्या है? ट्रेलर कई किरदारों, हिंसक एक्शन, स्टाइलिश विजुअल्स और तेज कट्स से दर्शकों को प्रभावित करने की कोशिश करता है, लेकिन कहानी का इमोशनल कनेक्शन उतनी मजबूती से सामने नहीं आता। ऐसे में यह आशंका बनी रहती है कि कहीं फिल्म अपने विजुअल्स और यश के स्टारडम के पीछे कहानी की कमजोरी तो नहीं छिपा रही। यश का अंदाज दमदार, लेकिन किरदार में नयापन कितना है? यश को एक बार फिर ऐसे किरदार में देखा जा रहा है जो खतरनाक, हिंसक और बेहद स्टाइलिश है। 'केजीएफ' के बाद उनका ऐसा अवतार दर्शकों के लिए नया नहीं है। यही वजह है कि ट्रेलर देखने के बाद एक

सवाल उठता है- क्या 'टॉक्सिक' यश को 'केजीएफ' के रॉकी भाई वाले जोन से बाहर निकाल पाएगी? उनका लुक और एक्शन निश्चित तौर पर बड़े पर्दे के लिए बनाए गए हैं, लेकिन सिर्फ स्वैग और हिंसा के दम पर फिल्म को अलग पहचान दिलाना आसान नहीं होगा। कहानी से ज्यादा दिख रहा है स्टाइल-'टॉक्सिक' को पीरियड गैंगस्टर एक्शन ड्रामा बताया गया है। फिल्म की कहानी

गोवा की पृष्ठभूमि में एक ऐसे शख्स के इर्द-गिर्द है जो अपराध की दुनिया में अपना साम्राज्य खड़ा करता है। लेकिन ट्रेलर में कहानी के बजाय एक्शन, हथियार, हिंसा, ग्लैमर और बड़े सेट पीसेज ज्यादा हावी नजर आते हैं। यही फिल्म की सबसे बड़ी कमजोरी बन सकती है। अगर कहानी मजबूत नहीं निकली तो इतना बड़ा स्केल भी दर्शकों को लंबे समय तक बांधे रखने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। कियारा-नयनतारा समेत फीमेल स्टारकास्ट पर नजर- फिल्म में पांच प्रमुख महिला कलाकार हैं, लेकिन ट्रेलर देखने के बाद भी उनके किरदारों को लेकर बहुत ज्यादा स्पष्टता नहीं मिलती। कियारा आडवाणी का किरदार नादिया पहले से ही 'तबाही' गाने के कारण चर्चा में है। 'तबाही' में यश और कियारा की केमिस्ट्री और इंटीमेट सीन्स को लेकर सोशल मीडिया पर विवाद भी हुआ था। इस विवाद के बीच ट्रेलर से उम्मीद थी कि कियारा के किरदार की कहानी में अहमियत साफ होगी, लेकिन फिलहाल यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं होती। ट्रेलर से पहले भी विवादों में रही फिल्म-'टॉक्सिक' का टीजर रिलीज होने के बाद महिलाओं के चित्रण को लेकर आपत्तियां उठी थीं। आम आदमी पार्टी की महिला विंग ने शिकायत की थी, जबकि एक ईसाई संगठन ने टीजर में आर्कएंजल माइकल की प्रतिमा दिखाए जाने को लेकर धार्मिक भावनाएं आहत होने का आरोप लगाया था। ट्रेलर लॉन्च से ठीक पहले कमाल आर खान ने भी यश पर पेड रिव्यूज की व्यवस्था करने का आरोप लगाया था। हालांकि यह आरोप उनका दावा है और इसकी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। विजुअल्स शानदार, लेकिन कहानी की परीक्षा बाकी है-'टॉक्सिक' का ट्रेलर तकनीकी रूप से बड़ा और भव्य दिखाई देता है। यश का स्क्रीन प्रेजेंस भी फिल्म की सबसे बड़ी ताकत है। लेकिन कहानी को लेकर ट्रेलर अभी भी दर्शकों को पूरी तरह आश्वस्त नहीं करता। फिल्म की असली परीक्षा यही होगी कि क्या गीतू मोहनदास इस बड़े स्टार और विशाल बजट के साथ सिर्फ एक स्टाइलिश गैंगस्टर फिल्म बनाती हैं या इसके पीछे कोई मजबूत और भावनात्मक कहानी भी है। फिलहाल ट्रेलर का सबसे बड़ा सवाल यही है- 'टॉक्सिक' यश की अगली बड़ी फिल्म बनेगी या सिर्फ यश के स्टारडम पर टिकी एक और बड़ी एक्शन फिल्म साबित होगी?

सोहेल की पार्टी में सलमान का पैपराजी को उंगली दिखाकर बोलना- रात में शोर मत मचाओ, हैट पहनकर ब्लैक लुक में पहुंचे

मुंबई। रियलिटी शो 'अलायंस' के खत्म होने के बाद अभिनेता सोहेल खान ने मुंबई में एक सक्सेस पार्टी रखी। इस

पार्टी में उनके बड़े भाई और बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान ऑल ब्लैक लुक और सिर पर हैट पहनकर स्वैग वाले अंदाज में पहुंचे। पार्टी में एंट्री और एक्जिट के दौरान जब बाहर खड़े पैपराजी जोर-जोर से चिल्लाने लगे, तो सलमान ने उंगली उठाकर उन्हें शांत रहने का इशारा किया। सलमान ने पैपराजी से इशारे में कहा कि रात काफी हो चुकी है, इसलिए शोर कम मचाएं। उंगली उठाकर पैपराजी को शांत रहने का दिया इशारा वीडियो में सलमान खान अपनी कार के पास पैपराजी से घिरे नजर आ रहे हैं। जब फोटोग्राफर्स उनका नाम लेकर चिल्लाने लगे, तो सलमान ने तुरंत अपनी उंगली उठाकर उन्हें चुप रहने का इशारा किया। उन्होंने हाथ के इशारे से पैपराजी को समझाया कि रात हो गई है और आसपास के माहौल का ध्यान रखते हुए आवाज धीमी रखें। ऑल ब्लैक लुक और हैट में दिखे सलमान खान पार्टी के लिए सलमान खान ने खास लुक चुना था। वे ब्लैक टी-शर्ट, ब्लैक ब्लेजर और मैरून पैटर्न वाली पैंट में नजर आए। अपने लुक को पूरा करने के लिए उन्होंने सिर पर ब्लैक हैट लगाई हुई थी। सलमान का यह स्वैग और स्टाइल देखकर वहां मौजूद लोगों ने इस लुक की तारीफ की। कुशाल टंडन ने शेयर की अंदर की तस्वीरें- सोहेल संग दिए पोज पार्टी के अंदर से टीवी एक्टर कुशाल टंडन ने कई तस्वीरें अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर की हैं। एक तस्वीर में कुशाल, सलमान खान के साथ मुस्कुराते हुए पोज देते नजर आए।

वहीं दूसरी फोटो में वे पार्टी के होस्ट सोहेल खान के साथ दिखे। सोहेल इस दौरान डांगरी पहने नजर आए। शो के होस्ट कुणाल खेमू और सोहा अली खान भी पहुंचे- सोहेल खान की इस पार्टी में रियलिटी शो 'अलायंस' के होस्ट कुणाल खेमू अपनी पत्नी सोहा अली खान के साथ पहुंचे। शो के कई अन्य कंटेस्टेंट्स और फिल्म इंडस्ट्री के करीबी दोस्तों ने भी पार्टी में शिरकत की। सभी स्टार्स ने एक-साथ मिलकर शो की सफलता का जश्न मनाया।

प्रीति जिंटा ने आमिर खान को इग्नोर नहीं किया, दावे पर भड़कीं- बोलीं- नेगेटिविटी बढ़ाएंगे तो तस्वीरों के लिए रुकने की उम्मीद न करें

मुंबई। प्रीति जिंटा ने फिल्म 'बटवारा 1947' के प्रमोशन के दौरान आमिर खान को

नजरअंदाज करने के दावों को खारिज किया। प्रीति ने पोस्ट को 'क्लिकबेट कंटेंट' बताया और कहा कि उन्होंने उस समय आमिर को देखा ही नहीं था। दरअसल, एक पैपराजी अकाउंट ने फिल्म के प्रमोशनल इवेंट का वीडियो पोस्ट किया था। वीडियो में प्रीति अपनी वैनिटी वैन से बाहर निकलकर फोटोग्राफर्स से पूछती दिखीं, 'एक मिनट, गाइज, कहां जाना है?' फोटोग्राफर्स के दिशा बताने के बाद प्रीति दूसरी तरफ चली गईं। आमिर अपनी वैनिटी वैन के पास खड़े थे, लेकिन प्रीति ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद एक पैपराजी पेज ने वीडियो के साथ कैप्शन लिखा, 'ओह नो, प्रीति जिंटा ने आमिर खान को नजरअंदाज किया?' यूजर्स ने दोनों के बीच अनबन की अटकलें लगाईं- वीडियो के बाद सोशल मीडिया यूजर्स ने दोनों एक्टर्स के बीच किसी विवाद या असहज रिश्ते को लेकर अटकलें लगानी शुरू कर दीं। प्रीति ने बाद में इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए वीडियो को पेश करने के तरीके की आलोचना की। उन्होंने लिखा, 'इस तरह का क्लिकबेट कंटेंट ठीक नहीं है। मैंने आमिर को नहीं देखा, क्योंकि मैं अंदर कुछ शॉट्स शूट करने की जल्दी में थी और फिर 'बंटवारा 1947' के प्रमोशन के लिए फ्लाइट पकड़नी थी।' प्रीति ने आगे लिखा, 'अगली बार, अगर आपका इरादा किसी भी तरह की नेगेटिविटी को बढ़ावा देना है, तो मुझसे यह उम्मीद न करें कि मैं रुककर तस्वीरें खिंचवाऊंगी। आमिर के लिए मेरे मन में बहुत प्यार और सम्मान है, इसलिए यह पोस्ट अच्छी बात नहीं है।' बता दें कि प्रीति जिंटा जल्द अपकमिंगम फिल्म 'बंटवारा 1947' में नजर आएंगी। फिल्म में सनी देओल, करण देओल, शबाना आजमी, अली फजल और अभिमन्यु सिंह भी हैं। फिल्म के डायरेक्टर राजकुमार संतोषी हैं और इसके प्रोड्यूसर आमिर खान (आमिर खान प्रोडक्शंस) तथा अपर्णा पुरोहित हैं। फिल्म भारत के विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। फिल्म की कहानी हिंसा, विस्थापन और पारिवारिक संघर्ष से जूझ रहे एक परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। 'बंटवारा 1947' 14 अगस्त 2026 को रिलीज होगी।

साजन के सेट पर माधुरी को निहारते थे संजय दत्त,लॉरेंस डिसूजा बोले- कैमरे के पास आकर एक्ट्रेस को देखते थे

मुंबई। 1991 में रिलीज हुई फिल्म साजन अपनी कहानी, गानों और संजय दत्त, सलमान खान व माधुरी दीक्षित की तिकड़ी के कारण सुपरहिट रही। इसी फिल्म की शूटिंग के दौरान संजय

और माधुरी के कथित अफेयर की खबरों ने भी सुर्खियां बटोरी थीं। अब फिल्म के निर्देशक लॉरेंस डिसूजा ने इन चर्चाओं पर खुलकर बात की है। उन्होंने बताया कि शूटिंग के दौरान टीम काम और मस्ती में व्यस्त थी, इसलिए उन्हें दोनों के रिश्ते की अफवाहों पर ध्यान देने का मौका नहीं मिला। हालांकि, निर्देशक ने दिलचस्प वाकया जरूर याद किया, जब संजय कैमरे से माधुरी के क्लोजअप देखते थे। साजन की शूटिंग के दौरान अफेयर की खबरें चर्चा में थीं- फिल्म 'साजन' की शूटिंग के दौरान संजय दत्त और माधुरी दीक्षित के कथित रिश्ते की खबरों ने खूब सुर्खियां बटोरी थीं। दोनों की ऑन-स्क्रीन

केमिस्ट्री दर्शकों को पसंद आई थी और इसी वजह से उनके ऑफ-स्क्रीन रिश्ते को लेकर भी तरह-तरह की अटकलें लगाई गईं। हालांकि, फिल्म के निर्देशक लॉरेंस डिसूजा का कहना है कि सेट पर मौजूद लोगों के लिए ये चर्चाएं कोई बड़ी बात नहीं थीं। हाल ही में विक्की लालवानी को दिए इंटरव्यू में लॉरेंस डिसूजा ने कहा कि पूरी टीम फिल्म बनाने में इतनी व्यस्त और खुश थी कि उन्हें इस तरह की बातों पर ध्यान देने का मौका ही नहीं मिला। उनके मुताबिक, शूटिंग के दौरान सभी लोग खूब मस्ती करते थे और फिल्म कब पूरी हो गई, इसका भी उन्हें एहसास नहीं हुआ। माधुरी के क्लोजअप के दौरान कैमरे में देखते थे सांजाया- हालांकि, निर्देशक ने संजय दत्त का एक दिलचस्प व्यवहार जरूर याद किया। लॉरेंस डिसूजा फिल्म के निर्देशक होने के साथ-साथ इसके कैमरामैन की जिम्मेदारी भी संभाल रहे थे। उन्होंने बताया कि जब वह माधुरी दीक्षित के क्लोजअप शूट करते थे, तब कई बार संजय दत्त कैमरे के पास आकर उन्हें देखते थे। डायरेक्टर के मुताबिक, संजय कैमरे के जरिए माधुरी को देखते थे, लेकिन उन्होंने उस समय कभी यह सोचने की कोशिश नहीं की कि दोनों के बीच वास्तव में कुछ चल रहा है या नहीं। यानी सेट पर संजय का माधुरी के क्लोजअप देखना। निर्देशक को जरूर याद रहा, लेकिन उन्होंने इसे किसी रिश्ते से जोड़कर नहीं देखा। 1993 में संजय दत्त की गिरफ्तारी के बाद अलग होने की खबरें आईं-संजय दत्त और माधुरी दीक्षित के कथित रिश्ते की चर्चाओं के बीच 1993 में संजय दत्त की गिरफ्तारी हुई। इसके बाद दोनों के अलग होने की खबरें सामने आईं। इंटरव्यू में जब लॉरेंस डिसूजा से इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि उन्हें इसकी जानकारी खबरों के जरिए ही मिली थी। जब उनसे पूछा गया कि क्या माधुरी ने परिवार की आपत्ति के चलते संजय से दूरी बना ली थी, तो निर्देशक ने साफ कहा कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने इस मामले पर किसी तरह की पुष्टि करने से इनकार किया। माधुरी के इनकार से संजय दत्त को फर्क नहीं पड़ा था-1993 में संजय दत्त ने भी माधुरी के साथ अपने कथित रिश्ते को लेकर बात की थी। उस दौरान माधुरी ने दोनों के बीच किसी तरह के संबंध की बात से इनकार किया था। संजय ने कहा था कि उन्हें माधुरी के बयान से कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि दोनों लंबे समय से सह-कलाकार रहे हैं। संजय ने यह भी बताया था कि वह अपने हर को-स्टार के साथ अच्छा तालमेल बनाने की कोशिश करते हैं। उनके मुताबिक, यही वजह थी कि माधुरी के साथ उनकी दोस्ती को रिश्ते के तौर पर देखा जाने लगा। अफवाहें छपने के बाद माधुरी से माफी मांगी थी-संजय दत्त ने यह भी बताया था कि जब उनके और माधुरी के रिश्ते की खबरें मीडिया में आईं, उस समय माधुरी 'खेल' की शूटिंग के लिए केन्या में थीं। बाद में जब दोनों की 'साजन' की शूटिंग हुई तो संजय ने माधुरी से माफी मांगी थी। उन्होंने माना था कि इन खबरों की वजह से माधुरी को

बिना किसी गलती के सार्वजनिक चर्चा का सामना करना पड़ा। संजय के मुताबिक, उन्होंने माधुरी से इस बात के लिए माफी मांगी और माधुरी ने भी इसे सहजता से लिया। संजय ने अफेयर के सवाल पर दिया था मजेदार जवाब- जब संजय दत्त से सीधे पूछा गया कि क्या उन्होंने माधुरी को डेट किया था, तो उन्होंने मजाकिया अंदाज में जवाब दिया था। उन्होंने कहा था कि काश ऐसा कुछ होता, लेकिन ऐसा नहीं था। संजय ने यह भी कहा था कि वह अपने हर को-स्टार के साथ दोस्ताना व्यवहार रखते हैं और लोग उसे अफेयर समझ लेते हैं। संजय और माधुरी ने 'थानेदार' (1990), 'साजन' (1991) और 'खलनायक' (1993) जैसी फिल्मों में साथ काम किया। करीब 26 साल बाद दोनों 'कलंक' (2019) में फिर स्क्रीन पर साथ नजर आए।

झारखंड छात्र आंदोलन को सपोर्ट करने पहुंचे पीयूष मिश्रा,बोले- छात्रों की आंखों में दर्द देखा तो आ गया, 'आरंभ है प्रचंड' गाया

रांची। झारखंड की राजधानी रांची में परीक्षाओं में धांधली और पेपर लीक के खिलाफ छात्रों का आंदोलन जारी है। प्रदर्शन के 16वें दिन अभिनेता और गायक

पीयूष मिश्रा धरना स्थल जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम पहुंचे। उन्होंने अभ्यर्थियों के बीच बैठकर उनका समर्थन किया। मीडिया से बातचीत में पीयूष मिश्रा ने कहा कि वे छात्रों के इंटरव्यू देखकर और उनकी आंखों में दर्द देखकर यहां आए हैं। इस दौरान उन्होंने अपनी फिल्म 'गुलाल' का प्रसिद्ध गाना 'आरंभ है प्रचंड' भी गाया, जिससे पूरे परिसर में उत्साह दिखाई दिया। छात्रों को देखकर आया, कोई राजनीतिक एजेंडा नहीं- मीडिया से बातचीत में पीयूष मिश्रा ने रांची आने की वजह बताई। उन्होंने कहा कि उनका यहां आने का कोई अन्य मकसद नहीं है। उन्होंने सोशल मीडिया पर प्रदर्शनकारी छात्रों के इंटरव्यू देखे थे। छात्रों की आंखों में दर्द, तकलीफ और आंसू देखकर उनसे रहा नहीं गया। दो दिन का समय खाली मिलते ही वे सीधे रांची आ गए। पीयूष मिश्रा ने कहा कि वे युवाओं को पसंद करते हैं और उन्हीं के लिए काम और सिंगिंग करते हैं। उन्होंने प्रदर्शनकारियों की तारीफ करते हुए कहा कि यह आंदोलन बिना किसी राजनीतिक झंडे या एजेंडे के शांतिपूर्ण तरीके से चलाया जा रहा है। खाने से लेकर तिरपाल और आर्थिक मदद देने का ऐलान- गैंग्स ऑफ वासेपुर फेम अभिनेता ने बताया कि वे केवल मंच पर बोलने नहीं आए हैं, बल्कि अपनी क्षमता के अनुसार छात्रों की मदद भी कर रहे हैं। उन्होंने अपनी टीम और इवेंट मैनेजमेंट कंपनी की ओर से आंदोलन स्थल पर भोजन, गद्दे, तिरपाल और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई है। पीयूष मिश्रा ने कहा कि वे कोई बहुत बड़े धन सेठ नहीं हैं, लेकिन उनसे जितना बन पड़ेगा, उतनी मदद लगातार करते रहेंगे। उन्होंने अभ्यर्थियों से अपील की कि आंदोलन को इसी तरह मर्यादित, अनुशासित और बिना किसी अभद्रता या अपशब्द के आगे बढ़ाएं। 'आरंभ है प्रचंड' गाया तो गूंज उठा प्रदर्शन स्थल- धरना स्थल पर मौजूद युवाओं के बीच पीयूष मिश्रा ने निर्देशक अनुराग कश्यप की फिल्म 'गुलाल' (2009) का अपना प्रसिद्ध गाना 'आरंभ है प्रचंड' गाया। गाना शुरू होते ही पूरे स्टेडियम में मौजूद सैकड़ों छात्र-छात्राएं उनके साथ मिलकर पंक्तियां दोहराने लगे। गाना खत्म होने पर मैदान तालियों से गूंज उठा। इस भावुक पल ने प्रदर्शनकारी युवाओं में नया जोश भर दिया। पीयूष मिश्रा के अलावा बॉलीवुड के अन्य कलाकारों जैसे सोनाक्षी सिन्हा, इमरान खान, भूमि पेडनेकर और अनुपम खेर ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया है। जानिए क्या है अभ्यर्थियों का पूरा विवाद- झारखंड में छात्र 29 जुलाई से 14वीं जेपीएससी प्रारंभिक परीक्षा और जेएसएससी की भर्ती परीक्षाओं में हुई धांधली के खिलाफ आंदोलित हैं। अभ्यर्थियों का आरोप है कि राज्य में लंबे समय से परीक्षाएं समय पर नहीं हो रही हैं और जो परीक्षाएं आयोजित होती हैं, उनके पेपर लीक हो जाते हैं। छात्र 14वीं जेपीएससी पीटी परीक्षा को रद्द करने, पूरे मामले की सीबीआई और ईडी से जांच कराने और भर्ती प्रक्रिया में सुधार की मांग कर रहे हैं। सरकार के प्रतिनिधियों और मंत्रियों के साथ कई दौर की वार्ता के बाद भी अब तक कोई ठोस फैसला नहीं हो सका है।'

सोनाक्षी सिन्हा पर बीजेपी-सनातन विरोधी एजेंडा चलाने का दावा, पोस्ट में विराट कोहली और अनुष्का शर्मा को अनफॉलो करने का जिक्र

मुंबई। सोनाक्षी सिन्हा को लेकर सोशल मीडिया पर एक पोस्ट तेजी से वायरल हो रही है। इसमें दावा किया जा रहा है कि एक्ट्रेस बीजेपी और सनातन धर्म को बदनाम करने का एजेंडा चला रही हैं। पोस्ट में सीजेपी के छात्र प्रदर्शन को समर्थन देने, विराट कोहली और अनुष्का शर्मा को कथित तौर पर धार्मिक वजह से अनफॉलो करने और फिल्ममेकर आदित्य धर के उनके बर्गर वाले पोस्ट पर हंसने वाले रिएक्शन का जिक्र है। साथ ही दावा है कि सोनाक्षी झारखंड के छात्रों के मुद्दे पर चुप हैं। हालांकि, फैक्ट-चेक में सामने आया कि इन घटनाओं में कुछ बातें सही हैं, लेकिन इन्हें जोड़कर सोनाक्षी के किसी बीजेपी या सनातन विरोधी एजेंडे का ठोस सबूत नहीं मिलता। वायरल पोस्ट में सोनाक्षी सिन्हा पर कई गंभीर आरोप लगाए गए हैं। पोस्ट के मुताबिक, सोनाक्षी ने सीजेपी के छात्र प्रदर्शन का समर्थन इसलिए किया क्योंकि मामला कथित तौर पर बीजेपी के खिलाफ था। वहीं, झारखंड के छात्रों के मुद्दे पर उनकी चुप्पी को लेकर भी सवाल उठाया गया है। पोस्ट में यह भी दावा किया गया कि सोनाक्षी ने विराट कोहली और अनुष्का शर्मा को सिर्फ इसलिए अनफॉलो किया, क्योंकि दोनों अपनी धार्मिक आस्था को फॉलो करते हैं। इसके अलावा फिल्ममेकर आदित्य धर के सोनाक्षी के बर्गर खाने वाले पोस्ट पर लाफिंग रिएक्शन को भी उनके खिलाफ जोड़कर पेश किया गया है। लेकिन क्या वायरल पोस्ट में किए गए ये सभी दावे सच हैं? सीजेपी के प्रदर्शन में सोनाक्षी ने किया था छात्रों का समर्थन-फैक्ट-चेक में सामने आया कि सोनाक्षी सिन्हा ने सीजेपी यानी सिटिजन्स फॉर जस्टिस एंड पीस से जुड़े छात्र प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया दी थी। जुलाई 2026 में दिल्ली में छात्रों के प्रदर्शन के दौरान पुलिस कार्रवाई की तस्वीरें सामने आई थीं। इसके बाद सोनाक्षी ने प्रदर्शन से जुड़ी तस्वीरें अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर की थीं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्होंने प्रदर्शनकारियों पर हुई कार्रवाई पर चिंता जताई थी। इससे यह बात सही साबित होती

है कि सोनाक्षी ने उस प्रदर्शन को लेकर सार्वजनिक रूप से अपनी प्रतिक्रिया दी थी। हालांकि, इस पोस्ट का मकसद बीजेपी या सनातन धर्म को बदनाम करना था, इसका कोई प्रमाण नहीं मिला। क्या सोनाक्षी झारखंड के छात्रों के मुद्दे पर चुप हैं? वायरल पोस्ट में दूसरा बड़ा दावा यही है कि सोनाक्षी ने सीजेपी के छात्रों के लिए आवाज उठाई, लेकिन झारखंड के छात्रों के मुद्दे पर चुप्पी साध रखी है। झारखंड में छात्रों का आंदोलन भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं और जेपीएससी-जेएसएससी से जुड़े विवादों को लेकर चल रहा है। सीजेपी से जुड़े लोगों की ओर से इस आंदोलन को समर्थन दिए जाने की रिपोर्ट सामने आई है। हालांकि, सोनाक्षी सिन्हा ने इस मुद्दे पर कोई पोस्ट किया या नहीं, इसकी विश्वसनीय पुष्टि नहीं मिलती। इसलिए यह कहना कि सोनाक्षी ने जानबूझकर झारखंड के छात्रों का समर्थन नहीं किया या राजनीतिक वजह से चुप रहीं, फिलहाल साबित नहीं होता। विराट-अनुष्का को अनफॉलो करने का दावा कितना सही? वायरल पोस्ट में सोनाक्षी सिन्हा के अनुष्का शर्मा को अनफॉलो करने का दावा किया गया है। आजतक की 5 अगस्त 2026 की रिपोर्ट में भी सोनाक्षी और अनुष्का के बीच फॉलो-अनफॉलो को लेकर सोशल मीडिया पर चल रही चर्चा का जिक्र है। रिपोर्ट के मुताबिक, सोनाक्षी लंबे समय से अनुष्का को फॉलो करती रही हैं और दोनों के बीच सोशल मीडिया पर इंटरैक्शन भी रहा है। अनुष्का की डॉग-वेलफेयर से जुड़ी पोस्ट पर सोनाक्षी ने स्टोरी भी शेयर की थी। अब सोशल मीडिया यूजर्स ने दावा किया है कि सोनाक्षी ने अनुष्का को दोबारा अनफॉलो किया है। कुछ यूजर्स इसे विराट कोहली और अनुष्का शर्मा के सनातन धर्म और आध्यात्म से जुड़े पोस्ट से जोड़ रहे हैं। खास तौर पर विराट-अनुष्का के वृंदावन जाने और स्वामी प्रेमानंद महाराज से मुलाकात के बाद इस थ्योरी ने जोर पकड़ा है। हालांकि, सोनाक्षी ने खुद यह नहीं बताया है कि उन्होंने अनुष्का को क्यों अनफॉलो किया। इसलिए यह कहना कि उन्होंने विराट-अनुष्का की सनातन आस्था की वजह से ऐसा किया, अभी सिर्फ सोशल मीडिया पर चल रही एक थ्योरी है, इसकी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।